भारत-नेपाल के अटूट रिस्ते

एक दिन नेपाल में

S: Ek Din Nepal Mein by Ramesh Pokhriyal Nishank.indd

भारत-नेपाल के अटूट रिस्ते

एक दिन नेपाल में

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'

भगवान् केदारनाथ और पशुपतिनाथ के उन असंख्य भक्तों
को, जिन्होंने आदिकाल से भारत–नेपाल को आत्मीयता और
आध्यात्मिकता के एकसूत्र में पिरो रखा है।

अपनी बात

शुरू से ही मैं इस बात का पक्षधर रहा हूँ कि हिमालय भारत के लिए ही नहीं, अपितु पूरे विश्व के प्राणी जगत् के लिए वरदान है। मैंने अपने लेखन, व्याख्यानों और यहाँ तक कि संसद् तक में भी कई बार इस बात को उठाया है कि हिमालय जैसा विविधता से भरा प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र इस धरती पर और कहीं नहीं है। हमारी ऋतुएँ, जलवायु और शुद्ध पर्यावरण आदि सब इसी से हैं। यही वजह है कि हमारे मिथकों से लेकर प्राचीन साहित्य इसकी महिमा से पटे पड़े हैं। दुनिया का एकमात्र यही ऐसा पर्वत है, जो मानव समाज के चेतन-अवचेतन में गहरा समाया हुआ है। हमारे जल, जंगल, जमीन से लेकर स्वस्थ, स्वच्छ जलवायु और धरती की संपन्नता व समृद्धता इसी की देन है। हमारी जलसंपदा, वनसंपदा, संजीवनी-बूटियाँ, पर्यावरण, हिमनद, नदियों आदि का यह मुख्य आधार है। इसलिए मेरी हिमालय के प्रति चिंता हमेशा से ही रही है। इसका संरक्षण और संवर्द्धन संपूर्ण विश्व में मानवता को जीवित रखने हेतु अत्यंत आवश्यक है।

वर्ष 2013 में दुर्भाग्यवश भारत के केदारनाथ धाम में आए भीषण जल प्रलय ने भारत के 24 राज्यों तथा दुनिया के अन्य देशों से आए हजारों श्रद्धालुओं के प्राण छीन लिये। ऐसी प्रलयकारी घटना न पहले देखी थी, न सुनी। उसके बाद जम्मू-कश्मीर में अतिवृष्टि से हुई तबाही हो या नेपाल के काठमांडू में आया विनाशकारी भूकंप, गौर करनेवाली बात यह है कि केवल हिमालयी क्षेत्र के राज्यों/देशों को ही इस प्रकार की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। मुझे शुरू से ही जिस बात की आशंका रहती थी,

उसे आँखों के सामने होता देख डर लगता है। हिमालय बाहर से देखने में जितना कठोर और फौलादी दिखता है, भीतर से वह उतना ही कोमल और संवेदनशील है। अपनी सहनशील प्रकृति के कारण मानवीय उपेक्षा और स्वार्थपूर्ण कृत्यों के तत्कालीन दुष्परिणाम नहीं दिखते, लेकिन उसके दूरगामी परिणाम अत्यंत भयावह और विनाशकारी हो सकते हैं। इन सबको रोकने के लिए हमें हर हाल में हिमालयीय क्षेत्र के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए कोई ठोस नीति बनानी ही होगी और इस दिशा में पहल कर हिमालय को बचाना होगा। इसी से पूरी दुनिया के मानव का और प्राणि मात्र का लाभ होगा।

मैं आज भी महसूस करता हूँ कि कैसे लोगों ने केदारघाटी के महाप्रलय में अपनों को गँवाया। उनकी आँखों के सामने उनके अपने सगे भाई-बहन, माता-पिता, नाते-रिश्तेदार इस भीषण त्रासदी का शिकार हो रहे थे। एक ओर दूर-दूर से आए हजारों श्रद्धालु हताहत हो गए, तो वहीं दूसरी ओर स्थानीय लोगों के घर-परिवार तबाह हो गए। न रहने को घर और न सहारे को परिवार। कलेजे को चीरती इस त्रासदी को मैंने बहुत करीब से देखा है या यूँ कहें, उस त्रासदी से आहत लोगों के बीच रहकर उस दर्द को महसूस किया है। लोगों को तड़पते और दम तोड़ते आँखों के सामने 'त्राहि माम्! त्राहि माम् करते देखा है। आपदा की सूचना मिलने के तुरंत बाद मैं केदारघाटी के लिए घर से निकला। मुझे याद है कि शासन-प्रशासन की ओर से मुझे यह जोखिम न उठाने का सुझाव और आदेश-निर्देश दिए जा रहे थे, लेकिन मेरे मन-मस्तिष्क में उस वक्त सिर्फ और सिर्फ एक ही बात घर कर गई थी कि मुझे हर हाल में उस भीषण त्रासदी के बीच केदारनाथ जाना है और उन कराहती जिंदगियों को बचाने के लिए किसी भी हद तक और कुछ भी हो, करना ही है। मैं स्वयं को जानता हूँ कि मैं कुछ मामलों में बहुत जिद्दी हूँ। किसी भी विषय को लेकर यदि मन में आ गया, तो जीवन-मरण के सवाल भी मेरे सामने छोटे पड़ जाते हैं। आम आदमी के हितार्थ अगर मुझे जोखिम भी उठाना पड़े, तो मैंने एक क्षण भी इस बात को सोचने में नहीं गँवाया कि आगे क्या होगा। रास्ते ठीक भी हैं या नहीं, मुझे परवाह नहीं रही।

इस बार भी मुझे लोग समझाते रह गए कि यह अपने जीवन को जोखिम में डालने से ज्यादा कुछ नहीं, क्योंकि सारे रास्ते टूटे पड़े हैं और अभी भी पहाड़ दरक-खिसककर नीचे आ रहे हैं, पर मैं चल दिया। अंततोगत्वा मैंने केदारनाथ सबसे पहले पहुँचकर, त्रासदी में वहाँ बचे लोगों को न केवल ढाढ़स बँधाया था, अपितु उन्हें वहाँ से सुरक्षित कैसे निकाला जाए, शासन-प्रशासन को यह सुझाव और दिशा-निर्देश भी देने शुरू कर दिए। केदारनाथ से ही मैंने सीधे तत्काल भारत के तब के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से दूरभाष पर बात भी की। मैं नहीं भूल सकता कि इस जंग में मेरे साथ पूर्व सांसद बलराज पासी और भाजपा के वरिष्ठ नेता सुरेश जोशी भी थे। उनका मैं हृदय की गहराइयों से धन्यवाद करता हूँ। यहाँ मैं यह स्पष्ट कर दूँ कि मैंने अपने मुख्यमंत्रित्व काल के दौरान वर्ष 2010-11 की आपदा को भी देखा है। उस समय आपदा राहत कार्यों को सुनियोजित और प्रभावी ढंग से संचालित करके हमने देश और दुनिया के हजारों लोगों की जान बचाने में सफलता पाई थी। इसलिए मुझे इस बात को भाँपने में तनिक भी समय नहीं लगा कि यह कोई सामान्य आपदा नहीं है और वैसे भी प्राकृतिक आपदा चाहे छोटी ही क्यों न हो, उसे कमतर आँकने की भूल कदापि नहीं करनी चाहिए। आपदा से निपटने का एक ही रास्ता है, राहत कार्य को सुनियोजित एवं त्वरित किया जाए तो नुकसान के प्रतिशत को काफी कम किया जा सकता है।

केदारनाथ आपदा पर आधारित 'प्रलय के बीच' पुस्तक मेरे इसी प्रयास, अनुभवों, आपदा के राहत कार्यों के दौरान जन्मी मानवीय संवेदनाओं और वर्ष 2013 में उत्तराखंड के तत्कालीन शासन के हर अपेक्षित रवैए को सहेजती है। इसमें शब्दों के रूप में मैंने अपनी भावनाओं को सुधी पाठकों से साझा किया है। मुझे इस बात की खुशी है कि प्रबुद्ध जन-मानस के द्वारा इस कृति को स्वीकार कर मेरे प्रयास को सराहा गया। इसी क्रम में जब यह पुस्तक नेपाल के प्रसिद्ध साहित्यकार गोपाल पाराजुली के हाथों में पहुँची, तो एक संवेदनशील साहित्यकार के अंतस में भावनाओं का ज्वार जोर मारने लगा। केदारनाथ त्रासदी की वेदना ने काठमांडू भूकंप की पीड़ा को फिर से उनके

मानस-पटल पर उकेर दिया और उन्होंने मेरी इस पुस्तक का नेपाली भाषा में अनुवाद करने की उत्कंठा जाहिर कर दी। मैंने भी तत्काल सहमति दे दी। मेरे लिए यह एक सुखद और गौरवमयी क्षण था। मैंने उन्हें धन्यवाद के साथ अपनी कृतज्ञता भी ज्ञापित की। इससे खुश होकर गोपाल पाराजुली ने कहा कि इस पुस्तक के नेपाली संस्करण का लोकार्पण वे काठमांडू में नेपाल के प्रधानमंत्री के कर कमलों से कराना चाहेंगे, साथ ही, उन्होंने हिमालय के प्रति इस चिंता एवं संवेदनशीलता के लिए मुझे 'नेपाल हिमाल गौरव' सम्मान की पेशकश भी कर दी। सच कहूँ तो मेरे लिए यह क्षण बेहद भावुक कर देनेवाला भी था। मैंने कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कि मेरी संवेदनाओं को महसूस करनेवाले लोग मेरी इन्हीं संवेदनाओं को ऐसा शीर्ष सम्मान भी देंगे।

मेरी नेपाल जाने की काफी लंबे समय से इच्छा थी, परंतु मैं इसे महज संयोग ही कहूँगा कि आयोजकों द्वारा जब मुझे नेपाल के प्रधानमंत्री द्वारा सम्मानित करने की सूचना मिली तो मेरी किताब 'प्रलय के बीच' के नेपाली संस्करण का मुद्रण भी हो चुका था। फिर यह तय हुआ कि दोनों कार्यक्रम एक ही दिन आयोजित कर लिये जाएँ। 10-11 अक्तूबर, 2016 के आसपास विमोचन तय हुआ, पर दुबई और युगांडा का मेरा कार्यक्रम पूर्व निर्धारित था, सो मैं काठमांडू जा नहीं पाया, पर मैं दिल से आभारी हूँ, आयोजकों का कि उन्होंने मेरी सुविधानुसार ठीक एक महीने बाद की तिथि सम्मान के लिए तय कर दी।

नेपाल से और उसके लोगों से, विशेषकर नेपाली मूल के भारतीयों से, व्यक्तिगत रूप में मेरा काफी प्रगाढ़ संबंध रहा है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि नेपाली लोगों को मैं आचार, व्यवहार से उत्तराखंड के जनमानस के अत्यधिक करीब पाता हूँ, हों भी क्यों न, केवल यही विश्व का एकमात्र ऐसा देश है, जहाँ लोगों के व्यवहार में अपनापन व एक-दूसरे के लिए समर्पण की भावना कूट-कूटकर भरी है और फिर रीति-रिवाज हों, विवाह-समारोह हों या घरों की निर्माण शैली आदि, सभी क्षेत्रों में यहाँ से काफी समानता देखने को मिलती है। यही नहीं, सदियों पुराना हमारा संबंध किसी सरकार, राजतंत्र

या किसी राजनैतिक एवं सामाजिक दल पर निर्भर न होकर विशुद्ध आत्मिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और परस्पर विश्वास का रहा है, जो आदिकाल से आज तक अनवरत चला आ रहा है और युग-युगांतर तक चलता रहेगा।

सच कहूँ तो यह पुस्तक लिखने का विचार मन में तब आया, जब नेपाल के उप-राष्ट्रपति ने मेरी 'कथाएँ पहाड़ों की' पुस्तक का विमोचन करने के पश्चात् कहा कि मैं नेपाल पर भी एक पुस्तक लिखूँ, पर यह विचार दृढ निश्चय में तब परिवर्तित हुआ, जब मेरी नेपाल के प्रधानमंत्री से मुलाकात हुई। अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में उन्होंने कहा कि इस तरह के साहित्य से दोनों देशों को निकट लाने में सहायता मिलेगी। उसी क्षण मैंने निश्चय किया कि मेरी अगली रचना नेपाल पर ही आधारित होगी।

एक लेखक के रूप में नेपाल ने हमेशा मुझे आकर्षित किया है। इस दिलकश राष्ट्र को अधिक जानने का मन हुआ, तो पुस्तकें ढूँढी, पर मैं यह देखकर हैरान हुआ कि नेपाल के विषय में अधिकतर पुस्तकें अंग्रेजी में है, जबकि नेपाल और भारत में हिंदी-नेपाली जनमानस की भाषा है। जाहिर है, दोनों देशों को अधिक निकट लाने हेतु हिंदी-नेपाली भाषा 'साहित्य-सेतु' की भूमिका निभा सकती है। इसी प्रेरणा के कारण आज यह पुस्तक आपके समक्ष है। इस पुस्तक में जहाँ मैंने नेपाल का संक्षिप्त इतिहास, भूगोल, भारत-नेपाल संबंध, प्राकृतिक संसाधनों पर प्रकाश डाला है, वहीं नेपाल की धर्म, संस्कृति, भाषाओं, वहाँ की जैव विविधता पर जानकारी देने का भी पूरा प्रयास किया है। मित्र राष्ट्र नेपाल की जानकारी सरल व सुगम तरीके से हिंदी में सबको उपलब्ध हो, यही मेरा प्रयास है। यह पुस्तक उन जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगी, जो नेपाल में विभिन्न पहलुओं पर पुस्तक में एक ही जगह पर सारी जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। नेपाल की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विशेषताओं के अतिरिक्त, प्रस्तुत पुस्तक में मैंने नेपाल के पर्यटन स्थलों के विषय में भी लिखा है, वहीं वहाँ पर ढाँचागत अवस्थापन विकास के क्षेत्र में उपलब्धियों को सुधी पाठकों के समक्ष रखने का प्रयत्न किया है;

साथ ही कुछ अध्यायों में अपने निजी विचारों को आपसे साझा किया है।

मैं अपनी भावनाओं को विराम दूँ, इससे पूर्व एक और उल्लेख जरूरी है। वह यह कि हाल की कुछ घटनाओं से दोनों देशों के लोग भारत-नेपाल के रिश्तों को लेकर चिंतित रहे हैं, परंतु मेरा मानना है कि जब तक बाबा केदारनाथ और भगवान् पशुपतिनाथ की कृपा हमारे ऊपर बनी हुई है, दुनिया की कोई ताकत हमें पृथक् नहीं कर सकती। मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि नेपाल को हमने कभी अपने से अलग नहीं माना। सीमाएँ भले ही हमें बाँटती हों, पर मन से, मस्तिष्क से, आत्मा से हम एक सूत्र में बँधे हैं और सदैव बँधे रहेंगे।

यही कामना और बाबा केदारनाथ व पशुपतिनाथ से प्रार्थना करते हुए, इस पुस्तक में मैंने भारत-नेपाल संबंधों की प्रगाढ़ता, पशुपतिनाथ, केदारनाथ का अटूट संबंध और आपसी संबंधों से लेकर नेपाल के विकास में भारत का अतुलनीय योगदान जैसे अहम विषयों को भी पाठकों के सम्मुख रखने का विनीत प्रयास किया है। पुस्तक में मैंने हाल में नेपाल में आई भूकंप त्रासदी की गहन संवेदना और एक राष्ट्र के रूप में नेपाल पुनर्निर्माण के प्रयासों को पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास भी किया है।

प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से हर उस व्यक्ति को नेपाल के संबंध में आवश्यक एवं उपयोगी जानकारी मिल सकेगी, जो नेपाल से प्यार करता है और उसके बारे में जानने की इच्छा रखता है, ऐसी मेरी आशा है। भगवान् केदारनाथ और पशुपतिनाथ की कृपा से दोनों देश परस्पर सहयोग के रास्ते पर, विकास और समृद्धि की ओर अग्रसर हों, इसी शुभेच्छा के साथ यह पुस्तक आपको सौंप रहा हूँ।

मुझे खुशी होगी अगर आप पुस्तक के संबंध में अपने सुझावों से मुझे अवगत कराएँ। भारत-नेपाल संबंधों को पुनर्स्थापित व पुनः प्रगाढ़ करने में मेरा यह पुनीत प्रयास तनिक भी भूमिका निभा पाए, तो मैं इसे सार्थक और अपना सौभाग्य समझूँगा।

—डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'

अनुक्रम

	अपनी बात	*7*
1.	सगरमाथा के देश में एक दिन	15
2.	नेपाल का इतिहास	29
3.	नेपाल : एक परिचय	48
4.	नेपाल में धर्म	63
5.	नेपाल में विभिन्न जाति समुदाय	70
6.	आस्था के आधार स्तंभ पशुपतिनाथ एवं केदारनाथ	83
7.	नेपाली भाषा : नेपाल का प्राण	94
8.	त्योहारों का देश–नेपाल	102
9.	पर्यटन का पर्याय : नेपाल	115
10.	आन–बान–शान के प्रतीक गोरखा	141
11.	नेपाल : शिक्षा, विकास और समृद्धि	150
12.	नेपाल–भारत के रिश्ते अटूट	160
13.	विनाशलीला के पश्चात् पुनर्निर्माण	173
14.	नेपाली मूल के भारतीय	182

भारत–नेपाल : दो तन एक मन 188

केदारनाथ आपदा का दस्तावेज है—प्रलय के बीच 195

निशंक की पुस्तक प्रलय के बीच
भारत–नेपाल की साझी विरासत 197

पुस्तक गागर में सागर 199

1

सगरमाथा के देश में एक दिन

जीवन में कई बार ऐसे क्षण आते हैं, जब हमें यह लगता है कि जो कुछ भी घटित हो रहा है, वह एक 'दैवीय-संयोग' है। एक चमत्कार है। 9 नवंबर, 2016 का दिन मेरे जीवन के उन दिनों में से एक था, जिस दिन मुझे 'ईश्वरीय-शक्ति' का अपने साथ होने का प्रतिपल एहसास हो रहा था।

तीन दिन पूर्व ही मुझे बताया गया कि 8 नवंबर, 2016 को रात 9 बजे की फ्लाइट से मुझे नेपाल जाना है और 9 नवंबर, 2016 को मेरी पुस्तक 'प्रलय के बीच' के नेपाली संस्करण का विमोचन नेपाल के प्रधानमंत्री द्वारा होना

पशुपतिनाथ मंदिर

नेपाल के प्रख्यात साहित्यकार गोपाल पाराजुली के साथ

है। मैं पशोपेश में पड़ गया। राजनैतिक जीवन में बहुत बार ऐसी परिस्थितियाँ सामने आती हैं, जब एक ही दिन में कई महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों को रखा जाता हैं और हमें सभी में उपस्थित रहना अनिवार्य होता है। मेरे साथ भी कुछ ऐसी ही परिस्थिति पैदा हो गई थी। 10 नवंबर को मेरे संसदीय क्षेत्र हरिद्वार में हमारे केंद्रीय नेतृत्व के पदाधिकारियों द्वारा एक बड़ा कार्यक्रम रखा गया था, जिसकी मेजबानी की जिम्मेदारी स्थानीय सांसद होने के नाते, स्वाभाविक रूप से मेरी ही थी। इस कारण 9 नवंबर को मुझे हर हाल में नेपाल से वापस आना था, पर सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि प्रधानमंत्री द्वारा समय सायं 3:45 बजे सुनिश्चित था और मेरी वापसी की फ्लाइट 5:00 बजे थी। दिन में कई और महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम भी थे। अब चिंता का विषय यह था कि किस प्रकार यह संभव हो सकता है कि चार-पाँच कार्यक्रम करने के बाद इसी एक घंटे के दौरान पुस्तक का विमोचन भी हो और हम हवाई अड्डे भी पहुँचे।

खैर, यह सब तो भविष्य के गर्भ में था कि कब, क्या, कैसे हो? फिलहाल मैंने यह निश्चय किया कि इस अवसर को हमें गँवाना नहीं है और 8 नवंबर को हर हाल में नेपाल जाना है। इसी दृढ निश्चयवश 8 नवंबर,

2016 को रात 8:00 बजे मैं इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे नई दिल्ली पर था। 9:00 बजे फ्लाइट थी। मेरे साथ मेरे सलाहकार शिक्षाविद् डॉ. राजेश नैथानी थे।

अपने नियत समय पर ठीक 9:00 बजे रात्रि जहाज ने उड़ान भरी। लगभग दो घंटे बाद रात्रि करीब 11:15 पर हमने नेपाल की धरती को स्पर्श किया। उतरते ही मैं सीधे बौद्धा के निकट होटल तिब्बत इंटरनेशनल गया। नेपाल के प्रसिद्ध होटलों में एक इस होटल में परंपरागत तिब्बती संस्कृति के दर्शन होते हैं। तिब्बती चित्रकारी से सुसज्जित यह होटल काठमांडू शहर के मध्य विदेशियों में खासा लोकप्रिय है।

9 नवंबर, 2016 को कार्यक्रमानुसार सुबह 6:00 बजे हमें भगवान् पशुपतिनाथ के दर्शनों के लिए जाना था। मन उत्साहित होना स्वाभाविक था। प्रात: 5:30 बजे हमने मंदिर के लिए प्रस्थान किया। लगभग आधे घंटे पश्चात् तय समय पर हम भगवान् पशुपतिनाथ के मंदिर परिसर में थे। मुख्य मंदिर और उसके आस-पास के अन्य छोटे-छोटे मंदिरों की खूबसूरती देखते ही बन रही थी। अनुपम अलौकिक उस दिव्य स्थान का स्पर्श पाकर मेरा रोम-

परंपरागत तिब्बती संस्कृति के दर्शन कराता नेपाल का प्रसिद्ध होटल तिब्बत इंटरनेशनल

रोम श्रद्धापूरित और भक्तिमय हो गया। तत्पश्चात् हमारी मुलाकात मंदिर के मुख्य पुजारी आचार्य गणेश भट्ट से हुई। उन्होंने जिस आत्मीयता से मेरा हाथ पकड़ा और मुझसे मिले, उससे मैं भावविभोर हो गया। सर्वप्रथम वे मुझे अपने साथ अपने आवास पर स्थित पूजागृह में ले गए। सामान्यतया किसी आगंतुक को अपने पूजागृह में नहीं ले जाते हैं, ऐसा मुझे आचार्य द्वारा खुद बताया गया। मैं उन सौभाग्यशाली लोगों में रहा, जिन्हें यह विशिष्ट सम्मान मिला। इसके लिए मैं आचार्यजी का सहृदय आभारी हूँ। पहली पूजा अपने पूजागृह में करने के पश्चात्, उन्होंने हमें मंदिर परिसर में प्रत्येक मंदिर और स्थान की ऐतिहासिक महत्ता बताते हुए, मंदिर परिसर का दर्शन करवाया। तत्पश्चात् हम मंदिर के गर्भगृह में भगवान् पशुपतिनाथ के दर्शन के लिए ले गए। गर्भगृह में जाते ही देवाधिदेव महादेव के दर्शन कर मन, चित्त में जो शांति और जो सुख की अनुभूति हुई, उसका वर्णन शब्दों में शायद ही कर सकूँ। प्रधान आचार्य ने मंदिर में सुबह की पूजा प्रारंभ की, तो मुझे भी अपने साथ रखा। मुख्य मंदिर के आसपास सभी मंदिरों की पूजा-अर्चना में मैं उनके साथ रहा। मंदिर के प्रधान आचार्य से चर्चा करते हुए मैंने उनसे विस्तारपूर्वक बातें कीं। उन्होंने मुझे पुन: नेपाल आने का निमत्रंण दिया और विश्वास प्रकट किया कि भविष्य में भी मैं भारत और नेपाल के सामीप्य के लिए कार्य करता रहूँगा। आचार्य का आशीर्वाद लेकर मैंने उनसे विदा ली।

तत्पश्चात् हमारी मुलाकात नेपाली कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सुशील नाहरा से हुई। वाहराजी मूलत: भारतीय है और कई पीढ़ियों से नेपाल में रह रहे हैं। उनके साथ उनके पुत्र से भी मैं मिला, जो दिल्ली विश्वविद्यालय का छात्र है। संक्षिप्त, किंतु बेहद सार्थक इस मुलाकात के पश्चात् समय न गँवाते हुए हम नेपाल के उप-प्रधानमंत्री कृष्ण बहादुर माहरा से मुलाकात के लिए निकल पड़े। पता चला वे समय के बड़े पाबंद हैं और सुबह ही दफ्तर चले जाते हैं। वहीं सुबह 11:30 बजे उनसे बेहद आत्मीय मुलाकात हुई। उनकी गर्मजोशी भरी आवभगत में एक मित्र मुल्क से आए अतिथि के प्रति पूरा आतिथ्य भाव झलक रहा था। कुशलक्षेम और औपचारिक बातचीत के बाद वे सीधे

दोनों देशों के संबंधों पर उतर आए। भारत–नेपाल को घनिष्ठ मित्र राष्ट्र की संज्ञा देते हुए उन्होंने संबंधों की प्रगाढ़ता बनाए रखने पर बल दिया। सत्त हिमालयीय विकास और मानव संसाधन के विकास के मुद्दे पर व्यापक विचार–विमर्श हुआ। मेरी इस बात से वे पूर्णतया सहमत थे कि प्राकृतिक संसाधनों की तरह हिमालय के लोग भी विश्व के लिए धरोहर हैं। हिमालय के लोग ईमानदार, कर्तव्यपरायण, मेहनती, बहुत ही सौम्य, सहज, किंतु बहुत प्रखर और पूर्णतया समर्पित हैं। शायद इसीलिए पूरे विश्व में हिमालय के लोगों को विशिष्ट सम्मान व स्थान प्राप्त है।

तत्पश्चात् समय को ध्यान में रखते हुए हम वहीं से सीधे दोपहर लगभग 12:30 बजे नेपाल के उपराष्ट्रपति श्री नंद किशोर पुन से मिले। उनसे भी वार्त्ता हिमालय विषय पर ही केंद्रित रही। वे मेरी इस बात से सहमत थे कि मानव संसाधन का विकास हिमालय की सर्वोपरि आवश्यकता है और हिमालय का मानव पूरे विश्व की धरोहर है। उत्तराखंड के प्रति उनकी संजीदगी ने मुझे खासा प्रभावित किया। मैं हैरान रह गया, जब उन्होंने मेरे मुख्यमंत्रित्वकाल के दौरान गोर्खाली समाज के कल्याण हेतु उठाए गए महत्त्वपूर्ण कदमों की

नेपाल के उपराष्ट्रपतिजी श्री नंद किशोर पुन को अपनी रचना भेंट करते हुए

नेपाली उप प्रधानमंत्री श्री कृष्ण बहादुर माहरा को अपनी कृति भेंट करते हुए

विस्तार से चर्चा की। उन्हें मेरे मुख्यमंत्रित्व काल के दौरान उत्तराखंड में गोर्खाली समाज को जो-जो सम्मान मिला और उनके हित संरक्षण में हमने जो महत्त्वपूर्ण फैसले लिये थे, उन सबकी पूरी जानकारी थी। मेरी नवीनतम कृति 'कथाएँ पहाड़ों की' का विमोचन करते हुए उन्होंने इन कहानियों में पर्वतीय क्षेत्र की पीड़ा को सफलतापूर्वक चित्रित करने पर मुझे साधुवाद दिया। उन्होंने हरिद्वार के महाकुंभ के कुशल आयोजन के लिए भी मुझे बधाई देते हुए कहा कि इस महाआयोजन के लिए, मेरा नोबेल पुरस्कार के लिए नामांकन होना असाधारण उपलब्धि है। उन्होंने अपनी मुलाकात में इस बात पर भी विशेष जोर दिया कि दोनों देशों के बीच साहित्यिक आदान-प्रदान से हमारी निकटता और अधिक बढ़ेगी। बात भी सही है। साहित्य और संस्कृति से बेहतर सेतु और कोई हो ही नहीं सकता। हमारी वार्त्ता में इस बात पर खासा जोर रहा कि भारत और नेपाल के लिए यह परम आवश्यक है कि दोनों ओर से साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का आदान-प्रदान हो।

समय तेजी से भाग रहा था। अभी नेपाल के स्वनाम धन्य राष्ट्रकवि श्री माधव प्रसाद का आशीर्वाद भी लेना था। पता चला वे अपने आवास पर बड़ी बेसब्री से हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। सूचना मिलते ही हम तुरंत उनके

घर के लिए निकल पड़े। नेपाली राष्ट्रकवि माधव प्रसाद का हमारे लिए विशेष आमंत्रण था। सो हम लगभग 1:30 बजे उनके आवास पर पहुँच गए। पारंपरिक नेपाली शैली से सजा उनका आवास सादगी से परिपूर्ण था। राष्ट्रकवि माधव प्रसाद 98 वर्ष के हैं। उनसे मिलकर मुझे किसी ऋषि के सान्निध्य की सी अनुभूति हुई। उम्र के इस पड़ाव पर साहित्य के प्रति कोई इतना समर्पित हो, ऐसा मैंने पहली बार देखा। वहाँ पर मेरी कई और वरिष्ठ साहित्यकारों से भी भेंट हुई। संक्षिप्त साहित्यिक चर्चा के बीच राष्ट्रकवि माधव प्रसाद ने मेरी कृति 'प्रलय के बीच' पुस्तक का जिक्र छेड़ दिया। वे बोले, नेपाल, केदारनाथ की आपदा के दु:ख-दर्द को भलीभाँति समझता है। हम आपदा से कैसे प्रभावशाली ढंग से निपटें, यह हम डॉ. निशंक के केदारनाथ के अनुभव से भलीभाँति सीख सकते हैं, क्योंकि हिमालय की आपदा एकसमान होती है। चाहे नेपाल हो या भारत का उत्तराखंड, हमारी चुनौतियाँ, हमारी समस्याएँ और उनके समाधान लगभग एक जैसे हैं।

माधव प्रसाद का इतना बड़ा व्यक्तित्व और इतनी सादगी भरा जीवन,

राष्ट्रकवि माधव प्रसादजी के साथ कुछ अंतरंग पल

माधव प्रसाद जी की रचना संसार भेंट करते हुए

अत्यंत प्रभावशाली था, बातों में कहीं से भी नहीं लग रहा था कि विनम्रता की यह प्रतिमूर्ति नेपाल की सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यिक हस्ती है। अपने उद्‌बोधन में भी उन्होंने कहा कि उन्होंने मेरी पुस्तक 'प्रलय के बीच' को बड़ी तल्लीनता से पढ़ा है। उन्होंने भारत–नेपाल की साझी विरासत समान चुनौतियों की विस्तारपूर्वक चर्चा की। हाल ही में नेपाल में आए भीषण भूकंप की विनाशलीला की चर्चा करते हुए, उन्होंने हिमालय क्षेत्र में आपदा से निपटने हेतु विशेष रणनीति की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि नेपाली त्रासदी ने देश को झकझोरकर रख दिया है। केदारनाथ आपदा के मार्मिक चित्रण को नेपाली भाषा में लोगों के समक्ष प्रस्तुत करने पर उन्होंने मुझे हार्दिक बधाई दी। नेपाल राष्ट्र के राष्ट्रकवि द्वारा मेरे साहित्य के संबंध में की गई सकारात्मक टिप्पणी जहाँ मेरे लिए अत्यंत उत्साहवर्द्धक रही, वहीं उनकी शुभकामनाएँ साहित्यिक जीवन में मेरा मार्ग प्रशस्त करती रहेंगी। एक प्रेरक व्यक्तित्व के रूप में महाकवि माधव प्रसाद को मैं कभी नहीं भुला पाऊँगा। उनसे पुनः मिलने का वायदा कर मैंने उनसे विदा ली और सीधे ही लगभग 2:15 बजे के आसपास हम नेपाल अकादमी अर्थात् नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान गए। यह संस्थान नेपाल की भाषा, संस्कृति,

साहित्य, दर्शनशास्त्र तथा सामाजिक शास्त्र संबंधी अध्ययन, अन्वेषण एवं सृजनात्मक वातावरण के निर्माण के लिए समर्पित है। नेपाल अकादमी के द्वारा मुझे बताया गया, यह अकादमी नेपाल की सभी भाषाओं में भाषा, संस्कृति, साहित्य, दर्शन, समाजशास्त्र की मौलिक कृतियों के अनुवाद, प्रकाशन, गोष्ठी, सम्मेलन, विचार-विमर्श आदि के लिए मंच प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त यह प्रतिष्ठान संबंधित विषयों के उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मान-पुरस्कार की व्यवस्था के अतिरिक्त नेपाली संस्कृति के संरक्षण, संवर्द्धन का कार्य भी करता है। राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नेपाली साहित्य, कला व संस्कृति को पहचान दिलाने के अतिरिक्त यह अकादमी वैश्विक संगठनों से आपसी आदान-प्रदान सुनिश्चित करती है। इस अकादमी का एक बड़ा पुस्तकालय भी है, जहाँ पर नेपाल के साहित्य, संस्कृति, दर्शन की पुस्तकें मौजूद हैं। मैं विशेष रूप से इस पुस्तकालय को देखने गया और वहाँ के संकलनों को देखकर अत्यंत प्रभावित हुआ। यहाँ पर मैं डॉ. ऊषा ठाकुर से भी मिला, जो कि अनुवाद विभाग की अध्यक्षा हैं। मुझे डॉ. हेमांगी अधिकारी से भी मुलाकात करने का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ पर कई छात्र-छात्राओं से मुलाकात कर बातें कीं। इस अकादमी में 11 विभाग हैं, जो भाषा, संस्कृति, साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करते हैं। एक बात मैंने महसूस की और सामान्यतया देखा भी है कि श्रेष्ठतम साहित्यकारों, कवियों, लेखकों का जीवन सादगीपूर्ण रहा है और वे आडंबरपूर्ण व्यवहार और दिखावे से दूर रहते हैं।

इसके पश्चात् हम नेपाल के सुप्रसिद्ध उद्योगपति उपेंद्र महतो के आवास पहुँचे। वहाँ एक सूक्ष्म मुलाकात के दौरान ही हमने भारत-नेपाल में परस्पर निवेश के मुद्दों पर चर्चा की ताकि दोनों देश आर्थिक रूप से एक-दूसरे को संबलता प्रदान करें और मजबूत बनें। महतो बहुत सौम्य, सुशील, हँसमुख व्यक्तिव, अपनत्व से ओत-प्रोत, दूर-द्रष्टा और प्रखरता के धनी हैं। डॉ. महतो नेपाल के पहले डी.एस.सी. हैं। सोवियत रूस के देशों में उनके अनेक व्यापारिक प्रतिष्ठान हैं। नेपाल में पतजंलि को ले जाने का श्रेय डॉ. महतो को

जाता है। नेपाल में उनकी प्रखरता और सहज व्यवहार का परिणाम है कि दुनिया के तमाम देशों में उनका प्रभाव है।

इसके पश्चात् हमें प्रधानमंत्री आवास जाना था। समय दोपहर के तीन बज रहे थे और सायं 5:00 बजे की हमारी वापसी की फ्लाइट थी। मैं असमंजस में पड़ा था, क्योंकि यहाँ से प्रधानमंत्री आवास पहुँचना, प्रधानमंत्री से मुलाकात और उनके हाथों पुस्तक का विमोचन, प्रधानमंत्री आवास से हवाई अड्डा पहुँचना, यह सब महज 2 घंटे में ही होना था। ऐसी स्थिति में मेरे पास दो ही विकल्प थे या तो मैं पुस्तक के विमोचन को रद्द कर दूँ या फिर वापसी के कार्यक्रम को निरस्त कर दूँ, लेकिन मैं मन बना चुका था कि आज ही पुस्तक का लोकार्पण भी होगा और आज ही हम भारत भी वापस लौटेंगे, हालाँकि समय को देखते हुए यह सब असंभव ही लग रहा था, लेकिन मैंने अपने जीवन में कभी भी समय से पहले हार नहीं मानी, मेरी हमेशा अंतिम क्षण तक प्रयास करने की कोशिश रही है। मैंने डॉ. राजेश नैथानी को कहा कि हम यहाँ से सीधे प्रधानमंत्री कार्यालय जाएँगे तथा गेस्ट हाउस से हमारा सामान सीधे हवाई अड्डे पहुँचाने की कोई व्यवस्था करें, ताकि हम प्रधानमंत्री आवास से बिना विलंब किए सीधे ही हवाई अड्डा पहुँचे। राजेश ने मुसकराते हुए टिप्पणी की कि होगा तो यह काम मुश्किल, लेकिन आपका आदेश है, तो कोशिश कर लेते हैं।

मन में पशुपतिनाथ का स्मरण कर हम प्रधानमंत्री आवास के लिए चल दिए। लगभग आधे घंटे पश्चात् हम प्रधानमंत्री आवास पर पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर मालूम हुआ कि प्रधानमंत्री अभी-अभी किसी कार्यक्रम से लौटे हैं। मुझे चिंता थी कि अगर प्रधानमंत्री देर से आए या कार्यक्रम देर तक चला या फिर प्रधानमंत्री निवास से त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के रास्ते में जाम लग गया, तो मेरी दिल्ली की उड़ान छूट जाएगी। चिंता अधिक इसलिए थी, क्योंकि अगले दिन अपने संसदीय क्षेत्र हरिद्वार में मुझे एक बड़े कार्यक्रम में हिस्सा लेना था, जिसे मैं किसी भी स्थिति में टाल नहीं सकता था। असमंजस की इस स्थिति के बीच, सुखद आश्चर्य यह रहा कि सायं को पौने

नेपाल के प्रधानमंत्री श्री पुष्प कमल दहल प्रचंडजी से सम्मान ग्रहण करते हुए

चार बजे के निर्धारित समय से दो-तीन मिनट पहले ही नेपाल के प्रधानमंत्री पुस्तक विमोचन हेतु विमोचन स्थल पर पहुँचे गए। संक्षिप्त, परंतु अर्थपूर्ण कार्यक्रम में नेपाल के प्रधानमंत्री श्री पुष्प कमल दहल 'प्रचंड' ने अपने सरकारी आवास में 'आपदा के बीच' के नेपाली संस्करण का लोकार्पण किया। इस अवसर पर प्रसिद्ध नेपाली उद्योगपति उपेंद्र महतो, बनारस के वरिष्ठ समाजसेवी डॉ. आशीष वर्मा, नेपाल के वरिष्ठ साहित्यकार गोपाल पाराजुली, त्रिभुवन विशविद्यालय में प्राध्यापक डॉ. महेश पौडवाल एवं अंग्रेजी के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर अमर जोशी, नेपाली कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सुशील नाहटा समेत अन्य तमाम अधिकारी तथा साहित्यकार मौजूद रहे। सच कहूँ तो मुझे लेशमात्र भी कल्पना नहीं थी कि नेपाली प्रधानमंत्री पहली बार मिलने पर इतनी गर्मजोशी, आत्मीयता एवं उत्साह के साथ मिलेंगे। कई बार मुझे महसूस होता है कि शायद यह हम पर्वतीय लोगों की विशेषता है कि प्रथम बार मिलने पर ही हम सबको अपना बना लेते हैं। श्री पाराजुली ने यह बताया कि किस प्रकार भयंकर आपदा के दौरान स्थानीय लोगों ने अपनी जान हथेली पर रखकर पर्यटकों, श्रद्धालुओं और आपदा से ग्रस्त अन्य लोगों की सहायता की। श्री पाराजुली ने साहित्य के माध्यम से आपदाग्रस्त क्षेत्र के दु:ख-दर्द व

पीड़ा और विनाश के सजीव चित्रण के लिए इस लेखन को सराहा और कहा कि सहज, सरल भाषा में की गई अभिव्यक्ति इनसान के अंतस में गहरा प्रभाव डालती है। पड़ोसी देश में, वहाँ के प्रधानमंत्री के सम्मुख मेरी पुस्तक पर चर्चा ने संपूर्ण माहौल को अत्यंत भावुक बना दिया।

प्रधानमंत्री आवास पर पुस्तक के नेपाली अनुवादक और प्रख्यात नेपाली साहित्यकार डॉ. गोपाल पराजुली ने पुस्तक के बारे में जानकारी साझा की। नेपाली भाषा के अपने व्याख्यान में उन्होंने केदारनाथ त्रासदी का भावपूर्ण चित्रण भी प्रस्तुत किया। पुस्तक के विषय में प्रतिष्ठित त्रिभुवन विश्वविद्यालय के अंग्रेजी के प्रोफेसर डॉ. अमरराज जोशी ने अत्यंत मार्मिक वर्णन प्रस्तुत किया। मुझे इस बात की अत्यंत प्रसन्नता थी कि अत्यंत संक्षिप्त एवं स्पष्ट शब्दों में प्रधानमंत्री के सम्मुख उन्होंने केदारनाथ त्रासदी की प्रलयंकारी स्थिति को सफलतापूर्वक चित्रित किया। दोनों विद्वानों के व्याख्यानों से प्रधानमंत्री अत्यंत प्रभावित दिखे। प्रधानमंत्री कार्यालय को मेरी कृतियों एवं मेरी राजनीतिक और साहित्यिक यात्रा की जानकारी पूर्व में ही उपलब्ध थी। सामान्यत: राष्ट्राध्यक्ष या किसी शीर्ष नेता से आपकी मुलाकात होती है तो यह प्रोटोकाल के हिस्से के रूप में अपनी रचनाएँ/अपना जीवनवृत्त राष्ट्राध्यक्ष को भिजवाना पड़ता है, लेकिन यह कम ही होता है कि बड़े नेता को रचनाएँ/

नेपाली उप प्रधानमंत्री श्री कृष्ण बहादुर माहरा

जीवनवृत्त देखने का समय मिले और अगर सरसरी निगाह से देख भी लिया तो यह बहुत कम होता है कि वह उसे पूरा पढ़े। प्रधानमंत्री 'प्रचंड' का भाषण सुना तो मुझे अनुमान हुआ कि कितनी गंभीरता से उन्होंने मेरी साहित्यिक एवं राजनैतिक यात्रा को देखा। उनके उद्‌बोधन से यह भी निश्चित हुआ कि राजनीति और साहित्य, दोनों क्षेत्रों में उनकी अत्यंत गहरी रुचि है। उनके द्वारा मेरी साहित्यिक यात्रा और संवेदनशील लेखन के बारे में कहे गए प्रत्येक शब्द के लिए मैं उनका हृदय से आभार और कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

प्रधानमंत्री 'प्रचंड' का अपने उद्‌बोधन में यह कहना कि 'मेरी पुस्तक का लोकार्पण उनके आवास अर्थात् प्रधानमंत्री आवास पर हो रहा है, यह उनके लिए अत्यंत गर्व का विषय है, इस बात से मैं अभिभूत हो गया। भारत-नेपाल मैत्री को अधिक प्रगाढ़ बनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु अपनी सरकार की प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने हिंदू एवं बौद्ध सर्किट की स्थापना में भी विशेष रुचि दिखाई। मुझे इस बात को सुनकर खुशी हुई, जब प्रधानमंत्री ने कहा कि मेरे साहित्य से भारत-नेपाल मैत्री को अधिक प्रगाढ़ बनाने में सहायता मिलेगी। वह समय-समय पर भारत के राजनेताओं, साहित्यकारों से मुलाकात करते रहते हैं। मैं चाहता था कि 2013 की जल प्रलय की कहानी नेपाली जनता तक उनकी भाषा में पहुँच सके। इस संकल्प को अधिक बल तब मिला, जब मैंने स्वयं देखा कि इस भीषण बाढ़ में सैकड़ों नेपाली श्रमिक भाइयों और श्रद्धालुओं ने अपनी जान गँवाई थी। हमने साथ-साथ यह पीड़ा झेली है और साथ-साथ इससे उबरने का रास्ता भी खोजा है। नेपाल के लोग प्राकृतिक त्रासदी की पीड़ा को भलीभाँति समझ सकते हैं, क्योंकि उत्तराखंड हिमालय की तरह उनका क्षेत्र भी आपदा से जूझता रहा है। मेरा हमेशा से यह मानना रहा है कि साहित्यिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान दोनों देशों को अधिक निकट ला सकता है। यही विचार नेपाली प्रधानमंत्री ने अपने उद्‌बोधन में व्यक्त किया। प्रधानमंत्री ने अपना उद्‌बोधन नेपाली और हिंदी दोनों भाषाओं में दिया। हिंदी पर उनकी पकड़ से मैं अत्यंत प्रभावित हुआ। धारा प्रवाह हिंदी बोलते समय शब्दों का

ऐसा चुनाव कि उन्हें सुनकर कहीं से भी यह आभास नहीं हुआ कि वह भारत के नहीं अपितु नेपाल के प्रधानमंत्री है।

मैं महसूस करता हूँ कि यह प्रक्रिया सतत्, निर्बाध रूप से आगे चलती साहित्यिक रचनाओं के उस महासागर रूपी यज्ञ में मेरा अगर बूँद भर योगदान भी हो जाए, तो मैं अपने आपको भाग्यशाली समझूँगा। मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ कि नेपाल के अपने अल्प प्रवास के दौरान मुझे विभिन्न क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मिलने का अवसर मिला। प्रधानमंत्रीजी से मुलाकात के दौरान जिस बात ने मुझे प्रभावित किया, वह थी उनकी सहजता, सरलता और अपनत्व का एहसास। किसी राष्ट्र के राष्ट्राध्यक्ष में ऐसी आत्मीयता, सरलता और विनम्रता दुर्लभ ही देखने को मिलती है।

पाँच बजकर तीस मिनट पर रॉयल नेपाल एयरलाइंस के जहाज से जब हमने उड़ान भरी मैं आश्चर्यचकित था कि इतनी जल्दी सबकुछ कैसे हो गया। तीन मिनट में इमीग्रेशन, बोर्डिंग सबकुछ फाइनल। पाँच-सात मिनट में भागते-भागते हम अपनी सीटों पर बैठे थे, शायद यह सब भगवान् पशुपतिनाथ की कृपा थी। जहाज की खिड़की से बाहर पशुपतिनाथ मंदिर की प्राचीर को ढूँढ़ते हुए कृतज्ञता से मैं एक बार पुनः नतमस्तक हुआ। सगरमाथा के देश के अधिष्ठाता देवाधिदेव भगवान् पशुपतिनाथ और केदारनाथ के युग-युगांतर का संबंध आज सजीव होता दिखा।

□

2

नेपाल का इतिहास

नेपाल के बारे में यह उक्ति प्रचलित है कि नेपाल कभी 'स्वाधीनता' दिवस नहीं मनाता है। यह इसलिए कि नेपाल कभी पराधीन ही नहीं हुआ। भले ही इस हिमालयी राष्ट्र का वर्तमान स्वरूप 18वीं शताब्दी में विकसित हुआ, परंतु यह देश सदियों से अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है। हालाँकि जगह-जगह मिली पुरातत्त्विक खोजों एवं प्रमाणों से यह स्पष्ट होता है, कई हजारों वर्ष पूर्व भी यहाँ भिन्न-भिन्न स्थानों पर लोग रहते थे। इतिहासकार इस बात पर सहमत हैं कि इस देश पर सर्वप्रथम 'किरात' पर्वतीय जनजाति के लोगों ने शासन किया, तदुपरांत 'लिच्छवी' वंश प्रथम राजवंश के रूप में चार सौ ई. के आसपास स्थापित हुआ। नेपाल के कई मंदिरों और संग्रहालयों में 'लिच्छवीकाल' की मूर्तियों को देख सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि 'किरात' समृद्ध एवं सशक्त शासक थे। जानकारी मिलती है कि सम्राट अशोक ने 'किरात' शासक स्युंगकों के शासनकाल में काठमांडू का दौरा किया था एवं बौद्ध धर्म का व्यापक प्रचार-प्रसार भी किया। इतिहासकारों के अनुसार सम्राट अशोक की पुत्री चारूमती भी उनके साथ इस धार्मिक प्रचार-प्रसार में आई थी। किरातवंशी शासकों की शक्ति क्षीण होने पर 'सोमवंशी' शासकों द्वारा नेपाल पर शासन किया गया। कहते हैं, सोमवंशी शासक पशुपेक्ष देव के शासन में पशुपतिनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार भी कराया गया था, साथ ही सोमवंशी शासक द्वारा लिच्छवी वंशीय भूमि वर्मा को अपना उत्तराधिकारी मान लिया गया। भगवान पशुपतिनाथ मंदिर

के सोमवंशी शासकों द्वारा जीर्णोद्धार के पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं। लिच्छवी काल की अनेक वस्तुएँ विश्वभर के संग्रहालयों में देखने को मिलती है।

लिच्छवी काल

सभी इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि 'लिच्छवी' मूल रूप से 'नेपाली' ही रहे हैं। लिच्छवियों ने लंबे समय तक नेपाल राष्ट्र पर शासन किया। वंशावली के हिसाब से सुपुष्प लिच्छवी राजाओं में प्रथम राजा रहे हैं। नेपाली शिलालेखों से पता चलता है कि लिच्छवीकाल में उपाधियाँ दिए जाने की बात सामने आती हैं। इतिहासकारों का यह भी मानना है कि लिच्छवी शासकों और गुप्त शासकों के बीच घनिष्ठ संबध रहे। सम्राट चंद्रगुप्त ने लिच्छवी राजकुमारी कुमार देवी से विवाह तक किया। कुमार देवी से ही समुद्र गुप्त का जन्म हुआ था। नेपाली इतिहासकार मानते हैं कि मानदेव और शिवदेव के बीच नेपाल में कोई सशक्त शासक नहीं हुआ। शिव देव ने अपनी पुत्री का विवाह ठकुरी वंश के राजा अंशुवर्मा से किया था। यहाँ पर यह बताना आवश्यक है कि अंशु वर्मा अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति के शासक थे। अंशु वर्मा ने महाराजाधिराज की उपाधि ली। अंशु वर्मा की मृत्यु के बाद कमजोर लिच्छवी वंश पर ठकुरी वंश के शासकों का कब्जा हुआ।

लिच्छवी काल की मुद्राएँ

नेपालाधिपति राघदेव ने 879ई. की 20वीं अक्तूबर को नया संवत चलाया, जिसे 'नेपाली संवत' कहा गया। राघव देव के पश्चात् गुणकामदेव ने नेपाल में लाखे यात्रा, इंद्र यात्रा, कृष्ण यात्रा जैसे उत्सव प्रारंभ किए। उन्होंने पशुपतिनाथ मंदिर, वासुकि मंदिर, खतकाली, कंडकेश्वरी एवं पंचलिंग भैरों के मंदिर का जीर्णोद्धार किया। गुणकामदेव को लक्ष्मीकाम देव भी कहा जाता है। उनके पश्चात् जयकामदेव ने 30 साल तक नेपाल में शासन किया। इनके पश्चात् नुवाकोट के ठकुरीवंश के शासक भास्करदेव काठमांडू के शासक बने।

ठकुरी वंश

भास्कर देवी पर नेवारी भाषा में हस्तलिखित एक ग्रंथ विष्णु धर्म में टिप्पणी की गई है कि उन्होंने परम भट्टारक महाराजधिराज परमेश्वर की उपाधि धारण की थी। भास्करदेवी के बाद बलदेव ठकुरी वंश के शासक बने। इनके बाद नागार्जुनदेव राजा हुए। नागार्जुनदेव के बाद दस वंश के आखिरी शासक शंकरदेव हुए। उनके समय में धर्म पुत्रिका, पष्ट सहत्रका और बोधिधर्मावतार जैसे ग्रंथों की रचना हुई। शंकरदेव की राजधानी पाटन–ललितपुर थी। लिच्छवी राजाओं का शासनकाल करीब 900 वर्षो तक रहा। इन लोगों ने नेपाल की चित्रकला को गहरे रूप से प्रभावित किया।

सूर्यवंश

ठकुरी वंश के राजाओं पर सूर्यवंशी राजा काबिज हुए। इस वंश के पहले क्षत्रिय राजा का नाम था वामादेव। इनका एक नाम वाणदेव भी था। इनके बाद इंद्रदेव और फिर मानदेव शासक हुए। मानदेव ने अपने पुत्र नरेंद्र देव को शासन सौंप दिया और बौद्ध चक्र बिहार में बौद्ध भिक्षु के रूप में शेष जीवन व्यतीत किया। नरेंद्र देव के बाद आनंद देव शासक हुए। आनंद देव ने सन् 1165 से 1166 ई. तक ही शासन किया। कुछ हस्तलिखित ग्रंथ यह कहते हैं कि आनंद देव ने 1156 से लेकर 1166 तक शासन किया। इनके बाद रुद्रदेव ने करीब 8 वर्ष एक माह तक राज किया और फिर संपूर्ण

साम्राज्य अपने पुत्र को सौंपकर एक साधारण मानव की तरह जीवन व्यतीत करने लगे। अमृतदेव ने करीब 3 साल, 11 माह तक शासन किया। इनके बाद रत्नदेव शासक हुए। प्रो. सिल्वन लेबी मानते हैं कि रत्नदेव के बाद सोमेश्वर राजा हुए और उन्होंने करीब चार साल तक शासन किया। इनके पश्चात् गुण कामदेव, लक्ष्मी कामदेव और विजय कामदेव नाम के राजा हुए। उल्लेखनीय है कि इन्हीं नामों के राजा लिच्छवी काल में भी हुए थे। विजय कामदेव के उत्तराधिकारी आरिमल्ल देव हुए।

इसी बीच कर्नाटवंशी राजा नान्या देव का भी उल्लेख मिलता है। नान्यादेव ने नेपाल राष्ट्र पर जबरदस्त हमला किया। भक्तपुर, ललितपुर और कीर्तिपुर को उसने अपने कब्जे में ले लिया। नान्यदेव की सेना में क्षत्रिय जाति के सैनिक थे, जो बाद में यहीं पर बस गए और नेवार कहलाए। कर्नाट देश का यह पराक्रमी शासक जयमल्ल और आनंदमल के लिए सिरदर्द बन गया था। ये दोनों शासक तिरहुत भाग गए। नान्यदेव के बाद क्रमश: गंगदेव, नरसिंह देव ने चंपापुरी नाम का गाँव बसाया। कर्नाट वंशीय शासन 1097 से सन् 1324 ई. तक माना गया है। इसके विपरीत नेपाल के कुछ हस्तलिखित ग्रंथ यह मानते हैं कि नेपाल पर न तो कर्नाट वंश का शासक रहा और न ही मल्लों का। ग्रंथों का अवलोकन करने पर कई बार इतिहास में अस्पष्टता बनी रहती है।

मल्ल शासन

मल्लों का नेपाल में उदय 12वीं शताब्दी के अंतिम वर्ष में माना जाता है और इन्होंने 1767 ई. तक शासन किया। ये राजपूत थे और भारत से आए थे। उत्तर भारत में मुगल शासकों के हमले लगातार बढ़ गए थे। मुगलों के हमलों से बचने के लिए मल्ल वंशीय राजपूत नेपाल की ओर भाग आए। मल्ल का अर्थ होता है पहलवान। कुछ इतिहासकारों का एक कथन है कि ठकुरी वंश के शासक अरिदेव को पहलवानी का बहुत शौक था। वह एक दिन अखाड़े में कुश्ती लड़ रहा था। इसी बीच खबर मिली कि उसे एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई है। उसने अपने इस पुत्र को 'मल्ल' की उपाधि दी और तभी से 'मल्ल

वंश' की शुरुआत हुई।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान् राम ने अपने छोटे भाई वीर लक्ष्मण के ज्येष्ठ पुत्र चंद्रकेतु को मल्ल उपाधि से विभूषित किया था। मल्लों के शासनकाल में ही गयासुद्दीन तुगलक ने तिरहुत अर्थात् मिथिला राज्य की राजधानी सिमरौनगढ़ पर हमला किया था। गयासुद्दीन की विशाल सेना देख तत्कालीन राजा हरिसिंह देव पर्वतीय अंचलों की ओर भाग निकला। तिरहुत से भागे हरिसिंह ने भक्तपुर को अपना राज्य माना, इससे गयासुद्दीन की एक लाख घुड़सवार सेना 1337 ई. में फिर से नेपाल के अन्य भागों में घुसी और उसने काठमांडू घाटी के मंदिरों और हिंदू संस्कृति को व्यापक क्षति पहुँचाई। यहाँ से होकर गयासुद्दीन की घमंडी पागल सेना चीलन पर कब्जे का सपना लेकर आगे बढ़ी, लेकिन वहाँ से हारकर वापस लौट आई।

शासक भास्कर मल्ल

मल्ल शासकों में राजा जयरूद्र और राजा जयार्जुन मल्ल के नाम मिलते हैं। इसमें जयरूद्र 'खसों' के साथ युद्ध में शहीद हो गया। सन् 1363 ई. से 1376 ई. तक जयार्जुन मल्ल का शासन रहा। इसके बाद जयस्थित मल्ल राजा हुआ। जयस्थित मल्ल ने 35 सालों तक शासन किया। डॉ. रुद्रेंद्रनाथ शर्मा लिखित पुस्तक 'नेपाल' में उल्लेख है कि उसी के शासनकाल में मैथिली भाषा का प्रथम नाटक 'भैरवानंद' लिखा गया था। इसके लेखक थे—महाकवि मणिक। यह

नाटक जयस्थित मल्ल के विवाहोत्सव पर मंचित हुआ। यह नाटक भी मैथिली भाषा में था। इस प्रकार मैथिली भाषा में नाटकों के लेखन व मंचन की परंपरा ही शुरू हो गई। जयस्थित मल्ल के तीन पुत्र थे। इनके नाम थे धर्ममल्ल, कीर्ति मल्ल और ज्योति मल्ल। ज्याति मल्ल ने पशुपतिनाथ और स्वयंभू चैत्यनाथ आदि का पुन: निर्माण कराया। ज्योति मल्ल के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र यक्ष मल्ल 1426 ई. में राजा बना और उसने 1427 ई. तक शासन किया। पशुपति अभिलेख से पता चलता है कि ज्योति मल्ल ने अपने जीवनकाल में ही अपने बेटे यक्ष मल्ल को भक्तपुर का युवराज घोषित कर दिया था। यक्ष मल्ल ने मगध और मिथिला को अपने राज्य में मिला लिया। कीर्तिपुर की वंशावली के अनुसार यक्ष मल्ल ने ललितपुर–पाटन और काठमांडू के राजाओं को भी हराया। सन् 1475 ई. में यक्ष मल्ल की मृत्यु हो गई। यक्ष मल्ल ने अपने जीवनकाल में ही देखा कि उनके पुत्रों में आपस में ही नहीं बनती थी, इसलिए उसने अपने राज्य को विभक्त किया ताकि बाद में आपस में उनके बेटों में मार–काट की नौबत न आए। मल्ल शासकों ने लंबे समय तक नेपाल पर शासन किया।

राणा वंश का उद्‌भव

18 सितंबर, 1946 को वह दिन जंग बहादुर राणा के लिए मनचाहा दिन था, जब खुद रानी राज्यलक्ष्मी देवी ने उसे नेपाल का प्रधानमंत्री नियुक्त किया था। जंग बहादुर राणा एक कुशल कूटनीतिज्ञ था। वह जानता था कि भारत की ब्रिटिश सरकार से तालमेल बनाकर चलने से ही लाभ है। उसने ब्रिटिश हुक्मरानों से अच्छे संबंध बनाए। जंग बहादुर राणा ने नेपाल पर लंबे समय तक अपनी हुकूमत चलाने की ठान रखी थी। रानी लक्ष्मी को जब यह लगा कि जंग बहादुर आनेवाले दिनों में उनके अपने ही अस्तित्व के लिए खतरा बन जाएगा तो उन्होंने उसे मरवाने का षड्‌यंत्र रचा। राणा अब रानी की हर शातिराना चाल से अच्छी तरह से वाकिफ हो चुके थे। रानी का षड्‌यंत्र विफल हो गया। इसमें शामिल सभी लोग मौत के घाट उतार दिए गए। यह कांड भंडारखाल हत्याकांड के नाम से भी जाना जाता है। राणा का प्रभाव देखें

कि वह राजवंश पर भी भारी पड़ा। 23 नवंबर, 1846 को जंग बहादुर राणा ने राजा राजेंद्र वीर विक्रम शाह को सिंहासन पर बिठा दिया। काशी से वापस आकर राजेंद्र वीर विक्रम शाह और रानी लक्ष्मी देवी ने फिर से सिंहासन प्राप्त करने की कोशिश की, तो उन्हें 12 मई, 1847 को भक्तपुर के एक दुर्ग में बंदी बनाकर डलवा दिया गया। राणा ने राजा सुरेंद्र वीर विक्रम को नाममात्र का राजा रहने दिया और उनसे लाल मोहर तथा पंजा पत्र तक प्रयोग करने का अधिकार प्राप्त कर दिया। 15 जनवरी, 1850 को वह अपने भाई धीर शमशेर मथा तथा 40 अन्य लोगों के साथ बाकायदा इंग्लैंड चला गया। वहाँ पर वह महारानी विक्टोरिया से मिला। इसके बाद फ्रांस गया। 6 फरवरी, 1851 में जब वह काठमांडू लौटा तो राजा सुरेंद्र वीर विक्रम शाह को नाम मात्र का राजा रखा। यहीं उसने अपने बड़े पुत्र जगतजंग एवं बीचवाले पुत्र जीत जंग का विवाह तक राजा की पुत्रियों से करवा दिया। इसके बाद तो उसने राजा से लिखवा लिया कि वह आजीवन प्रधानमंत्री रहेगा। हालात यहाँ तक हो गए कि राणा वंश बाकायदा एक राजवंश के रूप में प्रतिष्ठित हो गया।

राणा वंश की रानियाँ पारंपरिक वेशभूषा में

राणा शासनकाल में नेपाली फौजों और तिब्बत के बीच युद्ध हुए। नेपाल ने इस युद्ध में कुती सुनागुप्फा और झुंगा पर कब्जा कर लिया। दूसरी ओर भारत में ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ सशस्त्र क्रांति शुरू हो गई। राणा होशियार निकला, क्योंकि वह जानता था कि यदि उसने 1857 ई. के क्रांतिकारियों का साथ दिया, तो नेपाल भी ब्रिटिश हुकूमत के अधीन हो सकता है। परिणामत: उसने अंग्रेजों का साथ दिया। अवध की बेगम हजरत महल के साथ नेपाल आए कई विश्वास पात्र सैनिकों को उसने तोपों से उड़वा दिया। इसके अलावा, बेगम हजरत महल को नेपाल में रखा जरूर, लेकिन उन पर भी कड़ी नजर रखी। इसका लाभ भी उसे मिला, जिससे काली, राप्ती और गोरखपुर की तराई की भूमि का अच्छा-खासा हिस्सा नेपाल को मिल गया। कई पारितोषिक और मिले। राणा ने राजवंश पर एक और तीर मारा। उसने अपनी तीन पुत्रियों का विवाह सुरेंद्र वीर विक्रम के पुत्र युवराज त्रैलोक्य वीर विक्रम शाह से कर दिया।

राणा ने इसके बाद नेपाल की प्रगति की ओर थोड़ा ध्यान दिया। सन् 1860 में उसने तोप और राइफलों के बनाने का कारखाना लगवाया। 1875 में काठमांडू से डाक सेवा शुरू करवाई और 1881 ई. से मुद्रित डाक टिकट एवं पत्र व्यवहार शुरू हुआ। राणा ने नेपाल में 30 वर्ष तक शासन किया। इंग्लैंड और फ्रांस के दौरे ने उसमें आधुनिकता भी भर दी थी। चंद्र किशोर जंग बहादुर राणा ने सन् 1801-1829 के मध्य काठमांडू में जो प्रधानमंत्री निवास और कार्यालय बनवाया, उसमें पाश्चात्य शैली झलकती है। नेपाल के राजा का बुरा हाल था। राजा विक्रम के समय में उनके पिता राजेंद्र वीर विक्रम शाह ने एक बंदी जैसा जीवन व्यतीत किया। राजेंद्र और उसकी पत्नी ने 34 सालों तक काठमांडू से निर्वासित होकर किसी तरह से दिन काटे। 17 मई, 1881 को राजा सुरेंद्र और 13 जुलाई, 1881 को राजा सुरेंद्र वीर विक्रम शाह का देहावसान हो गया। दुर्भाग्य यह रहा कि युवराज त्रैलोक्य की भी मृत्यु हो गई। 1 दिसंबर, 1881 को युवराज त्रैलोक्य के पुत्र पृथ्वी वीर विक्रम शाह ने मात्र 6 साल की उम्र में गद्दी सँभाली, लेकिन कठपुतली बना रहा।

22 नवंबर, 1885 को जंग बहादुर राणा के उत्तराधिकारी बने प्रधानमंत्री रणोद्दीप सिंह। शमशेर रणोद्दीप सिंह को उसके ही तीन भाइयों क्रमश: शमशेर खड्ग, शमशेर डंबर और शमशेर भीम ने गोली मार दी। रणोद्दीप जंग बहादुर का भाई था। उसके कोई संतान भी नहीं थी। जंग बहादुर के पुत्रों की भी हत्या हो गई और सेनापति धीर शमशेर का बड़ा पुत्र वीर शमशेर प्रधानमंत्री बना।

वीर शमशेर ने अपनी दोनों पुत्रियों का विवाह राजा पृथ्वी विक्रम शाह से कर दिया। उसने ब्रिटिश राज्य से अच्छे संबंध बनाए। वीर शमशेर ने पहली बार काठमांडू में बग्घी की बजाय मोटर का प्रयोग किया। वीर शमशेर ने नेपाल के पाँच छात्रों को इंजीनियरिंग शिक्षा के लिए जापान भेजा। वीर शमशेर ने 16 सालों तक वहाँ पर शासन किया। उसने एक भारतीय इंजीनियर के सहयोग से आधुनिक हथियारों का निर्माण भी करवाया। उसके शासनकाल में ही वीर पुस्तकालय, घंटाघर, काठमांडू में भीमफेदी मार्ग के बीच कुलेखानी का पुल बना। वीर शमशेर की मौत अचानक हो गई। उसने शरीर पर लेप करनेवाली दवा को गलती से पी लिया था।

वीर शमशेर की मौत के बाद उसका भाई देव शमशेर प्रधानमंत्री बना। देव शमशेर ने केवल तीन महीने तक शासन किया, बल्कि उसने इस अवधि में वहाँ से दास प्रथा और परदा-प्रथा को समाप्त करने के लिए कड़े उपाय किए। इसके अलावा, कहा कि हर नागरिक सरकार के समक्ष अपनी कुल संपत्ति की घोषणा करे। नेपाली भाषा का पहला समाचार-पत्र उसी के सहयोग से प्रकाशित हुआ। देव शमशेर ने अशिक्षा को समाप्त करने का बीड़ा उठाया और 350 पाठशालाएँ स्थापित करने के आदेश दिए। देव शमशेर को उसके भाई चंद्र शमशेर ने 26 जून, 1901 में बंदी बना लिया। चंद्र शमशेर सेनापति था और सेना ने उसके आदेश का अनुपालन किया तथा वह प्रधानमंत्री बन बैठा।

चंद्र शमशेर ने भी वही किया, जो उसके पूर्व प्रधानमंत्रियों ने किया था। चंद्र शमशेर ने भी राजा को अधिकारविहीन ही रखा। चंद्र शमशेर के

शासनकाल में चीन से एक शिष्टमंडल नेपाल आया। प्रथम विश्व युद्ध में चंद्र शमशेर ने 65 हजार गोरखा सैनिक ब्रिटिश फौज की ओर से लड़ने के लिए भेजे। अंग्रेजों ने भी नेपाल के लिए बहुत कुछ किया। 1927 में रक्सौल से अमलेशगंज तक रेलवे लाइन बिछाई गई। इसके बाद जनकपुर से जयनगर तक 35 किमी. लंबी लाइन बिछाई गई। 1927 में माता तीर्थ से घुर्सिंग तक करीब 23 किमी. लंबा एक रोपवे माल ढुलाई के लिए बना। चंद्र शमशेर ने सख्ती के साथ सती-प्रथा को समाप्त करवाया और दासों को मुक्त कराया। वह नेपाल का पहला ऐसा प्रधानमंत्री था, जिसने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। वह कट्टर हिंदूवादी था। उसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उसने 1924 में चार परिवारों को मात्र नेपाल से इसलिए निष्कासित कर दिया था, क्योंकि उन्होंने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था। ये परिवार नेपाल से तिब्बत चले गए। 24 अक्तूबर, 1929 को चंद्र शमशेर के ही पदचिह्नों पर भीम शमशेर भी चला। उसने हर वह प्रयास किया, जिससे शासन के खिलाफ किसी तरह की आवाज न उठ सके। भीम शमशेर किसी भी रूप में पढ़े-लिखे लोगों को एक मंच पर नहीं आने देना चाहता था, क्योंकि इस दौरान भारत में अंग्रेजों के खिलाफ जोरदार आंदोलन शुरू हो चुके थे। भीम शमशेर ने अपना दमन चक्र तेज कर दिया। उसने पुस्तकालय खोलने, सभाएँ करने, परचे बाँटने तक पर प्रतिबंध लगा दिया था। लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा ने पुस्तकालय खोलने का दुस्साहस किया तो उन पर और उनके सहयोगियों पर 100-100 रुपए का अर्थदंड लगा दिया गया। शेर बहादुर, तिलकमणि आचार्य और बहादुर बस्नेत को शासन के खिलाफ कथित राजनैतिक षड्यंत्र रचने के आरोप में पकड़कर जेल में डाल दिया गया। महात्मा गांधी के सहयोगी तुलसी मेह श्रेष्ठ ने काठमांडू में चरखा कातने का प्रचार किया, तो उन्हें पकड़कर जेल में डाल दिया गया।

हर्षदास, मानदास चिंतरत्न और करुणा रत्न आदि धर्म प्रचारकों को मात्र इसलिए बुरी तरह से सरेआम पीट-पीटकर नेपाल से निष्कासित कर दिया गया, क्योंकि उन्होंने धर्म का प्रचार किया था और इसी बहाने उन्होंने

लोगों में राष्ट्रीय चेतना और अधिकार बोध जाग्रत् करने की कोशिश की थी। प्रचंड गोरखा दल के नेता उमेश विक्रम शाह और मैना बहादुर को आजीवन कारावास की सजा दी गई। खड्गमान सिंह को 20 सालों तक लोहे के पिंजरे में बंद रखा गया, क्योंकि उन्होंने राणा शाही का विरोध कर दिया था। इन अत्याचारों से आम जनता सिहर गई। बुद्धिजीवी भारत की ओर खिसक गए और वहाँ से उन्होंने नेपाल में राणाशाही के खिलाफ आवाज बुलंद करनी शुरू कर दी। राणा शासनकाल में ही ग्राम पंचायतों की स्थापना हुई। इसका श्रेय भीम शमशेर को जाता है। भीम शमशेर को नेपाल में क्रांतिकारी दल के गठन की सूचना मिली, तो उसके कान खड़े हो गए। राज्य का गुप्तचर तंत्र सक्रिय किया गया तो कर्नल कुमार जंग राणा सहित तीन अन्य लोगों के नाम प्रकाश में आए। कुमार जंग और जंगवीर को आजीवन करावास की सजा दी गई। शेष लोग देश निकाला पा गए। इसी बीच प्रकृति ने भी अत्याचार किया। 1993 ई. में नेपाल में भूकंप आया और भारी तबाही हुई। इससे पूर्व नेपाल में चंद्र शमशेर का भाई युद्ध शमशेर नेपाल का प्रधानमंत्री बन चुका था। उक्त भूकंप ने नेपाल में भारी तबाही मचाई, लेकिन पीड़ितों की मदद में पक्षपात किया गया। काठमांडू के पीड़ितों को तो सरकार की ओर से राहत मिली, लेकिन तराई क्षेत्र में नहीं। इससे तराईवासियों ने एकजुट होकर तय किया कि वे सरकार को लगान नहीं देंगे। परिणामत: उन्हें बुरी तरह से प्रताड़ित किया गया। राणा शासन का नेपाल में विरोध जारी रहा। भारत में 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आंदोलन के नेताओं पर ब्रिटिश हुकूमत ने सख्ती की, तो तमाम नेपाल की तराई में आ छिपे और यहाँ से आंदोलन को हवा देनी शुरू की। राम मनोहर लोहिया, जय प्रकाश नारायण, विजय पटवर्धन और सूर्य नारायण सिंह पूर्वी नेपाल के तराई क्षेत्र में आ गए, जबकि विश्वनाथ दुबे, कामरेड जामिन अली और शिब्बनलाल क्षेत्र में आ गए। यहाँ से इन लोगों ने ब्रिटिश हुकूमत की नाक में दम करना शुरू कर दिया। इनमें से कई पकड़े गए और हनुमान नगर जेल में बंद कर दिए गए। राणा शासन ने राम मनोहर लोहिया, विजय पटवर्धन, जय प्रकाश नारायण, तारिणी सिंह, रामेश्वर और कार्तिक को सीधे

ब्रिटिश सरकार के हवाले करना चाहा। यह खबर जब नेपाली युवाओं को लगी, तो आधी रात को कृष्णा दुसाध, गोपी, जयमंगल, रामदत्त कोइराला, गुलाबी सुनार, बंधु विष्णु भक्त और राहुल आदि ने सैकड़ों लोगों को साथ लिया और जेल की दीवार को तोड़कर इन नेताओं को आजाद करा लिया। इस कांड में तमाम नेपाली युवक पकड़े गए और जेल में डाल दिए गए।

19 नवंबर, 1945 को युद्ध शमशेर ने राज गद्दी छोड़ दी और प्रधानमंत्री की कुरसी पर 10 दिसंबर, 1945 को भीम शमशेर का बड़ा पुत्र पद्म शमशेर प्रधानमंत्री बना। पद्म शमशेर के वक्त तक भारत का नक्शा बदल चुका था। ब्रिटिश हुकूमत की चूलें हिल चुकी थीं। राणा शासन में दमन चक्र और तेज हुआ। गणेशतान सिंह, केदारमान सिंह, मनमोहन अधिकारी, गिरिजा प्रसाद कोइराला, विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला, टंक प्रसाद, आचार्य भोलानाथ शर्मा, दयाशंकर मुंशी, काशीनाथ गौतम आदि को जेल में ठूँस दिया गया। 4 मार्च, 1947 को विराटनगर मिल के मजदूरों ने हड़ताल की, तो उन पर गोलियाँ चलवा दीं। कई लोग इस कांड में मारे गए। यह कोई नया हत्याकांड नहीं था। इससे पूर्व पंडित शुक्राचार्य, जो धार्मिक कथाओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जाग्रत् करते थे, उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया। शुक्राचार्य के भाई ने ही 5000 रुपयों के लालच में राणा शासक को बता दिया कि किस तरह से शास्त्रीजी गुपचुप तरीके से 'प्रजा परिषद' नामक संगठन बना रहे हैं और आंदोलन की रूपरेखा तय कर रहे हैं। इसमें तकरीबन पाँच सौ लोग पकड़े गए। प्रधानमंत्री युद्ध शमशेर ने इनमें पाँच लोगों को फाँसी पर लटका दिया और तमाम लोगों की संपत्ति जब्त कर ली। शुक्राचार्य को रात के समय एक पेड़ पर फाँसी पर लटका दिया गया। एक अन्य युवक को राणा शासक के खिलाफ षड्यंत्र में फँसा दिया गया और उसे गोली मार दी गई। इसका नाम मंगालाल था। राजा त्रिभुवन को भी फँसाया जा रहा था, लेकिन वे किसी तरह से बच गए।

15 अगस्त, 1947 को भारत से अंग्रेजी राज का खात्मा हो गया। काठमांडू में खुशियाँ मनाने का साहस दिखाया गया तो तुलसीलाल, तुलसी मेहर और

कमला प्रसाद से नाराज राणा सरकार ने तुलसी मेहर और तुलसीलाल को जेल में डाल दिया। पद्म शमशेर ने देखा कि जब उनके आका अंग्रेज भारत से भगाए जा चुके हैं तो राणा सरकार थोड़ी नरम पड़ी। पद्म शमशेर ने भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के पास अपना एक आदमी भेजा कि वे नेपाल के लिए भी संविधान बनाने में मदद करें। पद्म के आग्रह पर भारत से श्री प्रकाश के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल काठमांडू आया। 26 जनवरी, 1948 को नेपाल का वैधानिक कानून बना। पद्म चाहता था कि यह एक व्यावहारिक कानून बन जाए। इसकी खबर राणा परिवार के अन्य सदस्यों को लगी। परिणामत: पद्म शमशेर से 1948 के मार्च महीने में जबरन त्याग-पत्र लिखवा लिया गया और मोहन शमशेर खुद प्रधानमंत्री बन बैठा।

मोहन शमशेर ने न चाहते हुए भी भारत का दौरा किया। प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से मिलकर उसने नेपाल में भारतीयों के लिए समान अधिकार देने के मामले पर एक मैत्री संधि की। उधर नेपाली नेताओं को अब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का खुला समर्थन मिल रहा था। 9 अप्रैल, 1948 को कलकत्ता में एक संयुक्त सम्मेलन हुआ। इसमें नेपाल प्रजातंत्र कांग्रेस को मिलाकर एक स्वरूप दिया गया। इसका नाम पड़ा नेपाली कांग्रेस। इसके बाद तो जोरदार आंदोलन शुरू हो गए। मोहन शमशेर भारत, भारत के नागरिकों और उसके नेताओं को किसी भी रूप में पसंद नहीं करता था। मजबूरी यह थी कि राणा के आकाओं का राज खत्म हो चुका था। भारत से अब नाराजगी मोल नहीं ली जा सकती थी। इसके बावजूद उसका नेपाल के राणा विरोधियों पर क्रूर प्रहार जारी था। 24 सितंबर, 1950 को उसने नेपाल में सक्रिय सुशील चालिसे, गणेशमान सिंह, सुंदरलाल चालिसे और दिलमाल सिंह सहित करीब एक दर्जन से अधिक नेताओं को गिरफ्तार कर दिया। मोहन शमशेर इन लोगों पर राणा शासकों की हत्या करने का षड्यंत्र रचने का फर्जी आरोप लगाकर फँसाना चाह रहा था, ताकि इन सभी को फाँसी दी जा सके। राजा त्रिभुवन को यह चाल समझने में देर नहीं लगी। उन्होंने राणा की मनमर्जी पर लाल मोहर लगाने से मना कर दिया। राजा त्रिभुवन उत्पीड़न का शिकार हो गए। 6

नवंबर, 1950 को राजा त्रिभुवन को अपने परिवार के साथ राजभवन छोड़कर नेपाल स्थित भारतीय दूतावास की शरण लेनी पड़ी। राणाओं ने राजा त्रिभुवन को सत्ता से ही हटा दिया। 10 नवंबर को राजा त्रिभुवन अपने परिवार के साथ दिल्ली पहुँच गए। इसके बाद तो भारत सरकार ने नेपाली कांग्रेस को जबरदस्त और खुला समर्थन शुरू कर दिया और पूरे नेपाल में राणा प्रशासन के खिलाफ जोरदार संघर्ष शुरू हो गए।

सन् 1950 का पूरा दिसंबर महीना ही नेपाल के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा। कई मोरचों पर क्रांतिकारियों को शानदार फतह मिली। राणा की फौजें लगातार घुटने टेक ही रही थीं और अनारकली, बिरता, तोकाला, नकालबंधा, धुलावारी आदि क्षेत्रों में क्रांतिकारियों का कब्जा हो चुका था। 24 दिसंबर, 1950 को राणा सरकार के तमाम वरिष्ठ अधिकारी अपने-अपने पदों से इस्तीफा देकर क्रांतिकारियों की ओर आ चुके थे, क्योंकि उन्हें राणा शासन का सूर्यास्त नजदीक दिखाई दे रहा था। 25 से 28 दिसंबर, 1950 के बीच खबर लगी कि दिगंबर झा, रुद्र प्रसाद गिरि, बच्चा झा, नेब बहादुर मल्ल, शेर बहादुर, दुर्गादत्त जोशी, भीमदत्त, महेंद्र नारायण निधि, हेमराज शर्मा, हुकुम बहादुर, अनिरुद्र कोयलावासा द्वारा ओखलढुंग, चैनपुर, महोत्तरी, प्यूठान, सल्यान, मतिहारी, धनकुशल, धनुषा, महिनाथपुर को भी कब्जे में ले लिया गया। 5 जनवरी, 1951 को पोखरा भी क्रांतिकारियों के कब्जे में आ गया। 8 जनवरी, 1951 को मोहन शमशेर राणा ने अपनी हार मान ली। भारत के प्रस्ताव को राणा मोहन शमशेर ने माना, जिसमें कहा गया था कि त्रिभुवन वीर विक्रम शाह ही नेपाल के राजा होंगे। 10 जनवरी, 1950 को राजा त्रिभुवन ने अपनी ओर यह युद्ध विराम की घोषणा की। मातृका प्रसाद कोइराला ने भी युद्ध विराम की घोषणा कर राजा का सम्मान किया। इस प्रकार पुनः शाह वंश सत्ता में लौटा। युद्ध विराम की घोषणा के बाद भी कुँवर इंद्र सिंह यानी के.आई. सिंह, खड्ग बहादुर सिंह को आधी रात को जेल से छुड़वा लिया गया। गजब का नेतृत्व था इन दोनों का कि एक कतरा खून भी जमी पर नहीं गिरा और इन लोगों ने एक ही रात में सचिवालय, रेडियो स्टेशन और हवाई

अड्डे से लेकर शस्त्रागार व कोषागार तक पर पूर्ण अधिकार कर लिया। कुंवर इंद्र सिंह बहुत दूर तक की सोचता था। उसने इतना सब होने के बाद भी राजा पर बल प्रयोग नहीं किया। वह जानता था कि यदि उसने ऐसा किया तो भारत सरकार राजा की सहायता के लिए अपनी सेना नेपाल में उतार सकती है। 12 घंटे तक हर जगह कब्जा जमाए रखने के बाद वे तिब्बत चले गए। इससे पूर्व 16 नवंबर, 1951 को राजा त्रिभुवन वीर विक्रम शाह ने मातृका प्रसाद कोइराला को प्रधानमंत्री घोषित कर दिया था। 10 जनवरी, 1955 को नेपाली कांग्रेस ने नेपाल में चुनाव कराने की माँग छेड़ दी। पूरे देश में राष्ट्रीय सरकार के खिलाफ जोरदार आंदोलन शुरू हो गए और सलाहकार सभा ने जब सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पारित कर दिया, तो 31 जनवरी, 1955 को मातृका प्रसाद कोइराला को इस्तीफा देना पड़ा।

राजा त्रिभुवन शाह का स्वास्थ्य लगातार गिरता जा रहा था। वे यूरोप में इलाज करा रहे थे। नेपाल में राष्ट्र की देख-रेख की जिम्मेदारी युवराज महेंद्र के हाथ में सौंपी हुई थी। 13 मार्च, 1955 को राजा त्रिभुवन का स्वर्गवास हुआ, तो उसी दिन युवराज महेंद्र शाह राजा बने। 1955 में एक विशाल राजनैतिक सम्मेलन बुलाया। इस सम्मेलन में नेपाली कांग्रेस, प्रजा परिषद, राष्ट्रीय प्रजा पार्टी, नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी ने हिस्सा नहीं लिया। आंदोलन जारी रहे। 27 जनवरी, 1956 को नेपाल प्रजा परिषद् के सक्रिय नेता टंक प्रसाद आचार्य प्रधानमंत्री बने। उन्हीं के प्रधानमंत्रित्वकाल में राजा महेंद्र का विधिवत् राज्याभिषेक दिनांक 8 मई, 1956 में हुआ। टंक प्रसाद आचार्य की ज्यादा समय तक राजा महेंद्र से नहीं बनी और उन्होंने राजा महेंद्र पर आरोप लगाते हुए अपना पद छोड़ दिया। उन्होंने राजा पर आरोप लगाया कि राजनैतिक मामलों में उनकी राय नहीं ली जाती है। वह विरोध राजा महेंद्र द्वारा दो मंत्रियों की नियुक्ति को लेकर उपजा था।

राजा महेंद्र ने 5 जुलाई, 1957 को नेपाल प्रजा परिषद् का मंत्रिमंडल भंग कर दिया। इसी बीच के.आई. सिंह नेपाल वापस आ चुके थे। 26 जुलाई, 1957 को के.आई. सिंह नेपाल के प्रधानमंत्री बने, लेकिन उनकी भी राजा

से नहीं बनी। के.आई. सिंह का भारत से विरोध बना रहा। वे प्रधानमंत्री बनते ही अपनी मनमर्जी से शासन करने लगे। उन्हीं के इशारे पर नेपाल मंत्रिमंडल ने हिंदी भाषा का नेपाल में बहिष्कार किया। इसका जबरदस्त विरोध शुरू हुआ। 14 नवंबर, 1957 को के.आई. सिंह को इस्तीफा देना पड़ा। 15 नवंबर, 1957 से 10 मई, 1958 तक राजा ने खुद शासन चलाया। इसका राजनैतिक दलों ने एकजुट होकर पूरे नेपाल में जोरदार विरोध किया। इस प्रकार प्रथम आम चुनाव की घोषणा राजा ने 18 फरवरी, 1959 में की। नेपाली कांग्रेस को चुनावों में स्पष्ट बहुमत मिला और राजा महेंद्र ने 27 मई, 1959 में नेपाली कांग्रेस के अध्यक्ष वीरेश्वर प्रसाद कोइराला को प्रधानमंत्री घोषित किया।

1962 में सम्राट ने एक नवीन संविधान की उद्घोषणा की, जिसके माध्यम से राजनैतिक दलों के गठन पर प्रतिबंध लगा दिया गया तथा महाराज के एकाधिकार वाली व्यवस्था को गैर राजनैतिक पंचायतों के माध्यम से चलाने का रास्ता साफ हुआ। महाराजा महेंद्र का निधन 1972 में हो गया था। उसके बाद उनके पुत्र वीरेंद्र विक्रमशाह देव ने सत्ता सँभाली। उन्हें 1975 में विधिवत महाराज घोषित किया गया। प्रारंभ में महाराज ने सरकार पर कठोर नियंत्रण जारी रखा, परंतु सत्तर के दशक में जब राजतंत्र विरोधी भावनाएँ प्रबल हो गईं, तो महाराज ने नियंत्रण ढीला कर दिया।

नेपाल के सूचना विभाग द्वारा प्रकाशित किंगडम ऑफ नेपाल पर शाह वंश और प्रधानमंत्रियों की सूची दी गई है, वह इस प्रकार है—

नेपाल के राजा

1. महाराजाधिराज पृथ्वी नारायण शाह
2. प्रताप सिंह शाह
3. गिर्वाण युद्ध वीर विक्रम शाह
4. राजेंद्र विक्रम शाह
5. सुरेंद्र विक्रम शाह
6. पृथ्वी वीर विक्रम शाह

7. महेंद्र वीर विक्रम शाह
8. वीरेंद्र वीर विक्रम शाह देव

नेपाल के प्रधानमंत्रियों के नाम

1. भीमसेन थापा
2. रंगनाथ पौडियाल
3. पुष्कर शाह
4. राणा जंग पांडेय
5. मातवर सिंह थापा
6. पी. जंग शाह
7. जंग बहादुर राणा
8. बम बहादुर थापा
9. जंग बहादुर राणा
10. रणोद्दीप सिंह
11. वीर शमशेर
12. देव शमशेर
13. चंद्र शमशेर
14. भीम शमशेर
15. युद्ध शमशेर
16. पद्म शमशेर
17. मोहर शमशेर
18. मातृका प्रसाद कोइराला
19. टंक प्रसाद आचार्य
20. डॉ. के.आई.सिंह
21. वी.पी. कोइराला
22. तुजसा गिरी
23. सूर्य बहादुर थापा

24. कीर्ति निधि बिष्ट
25. नागेंद्र प्रसाद रिजाल
26. तुलसी गिरि
27. कीर्ति निधि थापा
28. सूर्य बहादुर थापा
29. लोकेंद्र बहादुर थापा
30. मारीच मान सिंह श्रेष्ठ
31. कृष्ण प्रसाद भट्टराई
32. गिरिजा प्रसाद कोइराला
33. मन मोहन अधिकारी
34. शेर बहादुर देउबा
35. लोकेंद्र बहादुर चंद
36. सूर्य बहादुर थापा

1980 में एक जनमत संग्रह किया, जिसमें मतदाताओं ने गैर-दलीय नियमित पंचायत व्यवस्था को किंचित सुधारों के साथ जारी रखने का निर्णय लिया। इन प्रावधानों के अंतर्गत 1981 तथा 1986 में चुनाव आयोजित किए गए, परंतु 1990 के प्रारंभ में लोकतंत्र के समर्थन में भावनाएँ प्रबल हो गईं। एक नवीन संविधान लागू किया गया, जिसमें बहुदलीय व्यवस्था को स्वीकार किया गया। इस संविधान के अनुसार 1981 में आयोजित बत्तीस वर्षों में प्रथम लोकतांत्रिक चुनावों में नेपाली कांग्रेस पार्टी की विजय हुई तथा गिरिजा प्रसाद कोइराला प्रधानमंत्री बने।

तब से आज तक नेपाल में यद्यपि लोकतांत्रिक व्यवस्था बनी हुई है, परंतु राजनैतिक स्थायित्व नहीं आ सका है तथा सामान्यत: सरकारों की आयु एक डेढ़ वर्ष की रही है।

नेपाल में राजनैतिक दलों और भारत के राजनैतिक दलों के बीच कोई अंतर नहीं है। एक-दूसरे की नीतियों का विरोध करना, जोड़-तोड़ जिस तरह

से भारत में चरम पर है, वैसे ही नेपाल में भी है। भरत की तरह नेपाल की सरकार के आगे जनता की बड़ी-बड़ी समस्याएँ है। समय के साथ-साथ नेपाल की सरकार को इसे एक उत्कृष्ट हिमालयी राष्ट्र बनाने के लिए मेहनत करनी पड़ेगी। प्रगति पथ पर अग्रसर नेपाल चहुमुखी विकास करेगा ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

□

3

नेपाल : एक परिचय

नेपाल का क्षेत्रफल एक लाख 47 हजार 181 वर्ग किमी. है। वर्तमान में नेपाल की जनसंख्या तीन करोड़ से अधिक है। क्षेत्रफल की दृष्टि से नेपाल विश्व का 93वाँ बड़ा देश है। समुद्री तट से नेपाल की ऊँचाई 1120 किमी. है। लाल बुराँस नेपाल का राष्ट्रीय फूल है और गाय को नेपाल का राष्ट्रीय पशु माना जाता है। क्षेत्रफल के हिसाब से देखा जाए, तो नेपाल पूरे विश्व का 0.63 प्रतिशत है और एशिया का मात्र 0.3 प्रतिशत है। इसका अंक्षाशीय 26.22 डिग्री से 30.27 डिग्री पूर्वी–उत्तर तथा 80.4 डिग्री से 88.12 डिग्री पूर्वी देशांतरीय विस्तार है। इसकी पूर्व से पश्चिम तक की लंबाई 885 किमी. है, जबकि उत्तर से दक्षिण की ओर 145 किमी. से 193 किमी. है। नेपाल की 80 प्रतिशत भूमि हिमाच्छादित पर्वतों की चट्टानों से बनी है,

नेपाल का मानचित्र

जबकि मात्र 20–23 प्रतिशत ही तराई क्षेत्र यानी समतल क्षेत्र है। नेपाल के उत्तर में चीन स्थित है। नेपाल की कुल सीमा 1840 मील है, जिसमें 768 मील सीमा चीन से लगती है, जबकि 1050 मील सीमा भारत से लगी हुई है। नेपाल की दक्षिणी सीमा जहाँ भारत में पश्चिमी बंगाल को छूती है, वहीं उत्तराखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश से इस देश की सीमाएँ लगती हैं। उत्तराखंड और नेपाल के मध्य काली नदी विभाजक रेखा का कार्य करती है।

नेपाल के संपूर्ण क्षेत्र को तीन भागों में बाँटा जा सकता है। पहला उच्च हिमालयी पर्वतीय क्षेत्र, दूसरा पहाड़ी क्षेत्र तथा तीसरा नेपाल का तराई क्षेत्र। नेपाल का तराई का समतल मैदान अत्यधिक उपजाऊ है। इसकी चौड़ाई 30 किमी. है। यह क्षेत्र काफी वनाच्छादित है, जिसमें से इस क्षेत्र से लगती हुई 600 से 1200 मीटर तक की पहाड़ियाँ हैं। भारतीय पहाड़ी क्षेत्रों की तरह नेपाल में भी सीढ़ीनुमा खेत है। नेपाल का पहाड़ी क्षेत्र यहाँ की जैव विविधता के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान करता है। महाभारत की पहाड़ियाँ 1500 से 3600 मीटर तक हैं। इसके बाद 3600 मीटर से 8848 मीटर तक हिमाच्छादित चोटियाँ हैं। प्रसिद्ध पर्वत सगरमाथा, (माउंट एवरेस्ट) 8848 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

नेपाल की हिमालयी नदियाँ

रोल्पा ग्लेशियर

नेपाल की नदियाँ, झीलें, हिमखंड

नेपाल के हिमाच्छादित पर्वत शिखरों से तीन प्रमुख नदियों का उद्‌गम होता है। इनमें करनाली, गंडकी और कोसी प्रमुख हैं। नेपाल में कोसी को 'सप्तकोसी' भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें तमोट, अरुण, दूधकोसी, लोक, तामाकोसी, सुनकोसी और इंद्रावती सात नदियाँ मिलती हैं। गंडकी नदी में भी नेपाल की सात नदियाँ मिलती हैं, इनमें बूढ़ी गंडकी, काली गंडकी, त्रिशूली, मस्यांगदी, मादी, सेती, दरौंदी आदि शामिल हैं।

त्रिशूली नदी से देवघाट में मिलने के बाद यह नदी नारायणी कहलाती है। करनाली नदी पश्चिमी नेपाल से प्रवाहित होती है। यह नदी भारत में घाघरा

के नाम से जानी जाती है। इस नदी की सहायक नदियाँ भेरी, सेती, हुमला, करनाली और भृगु करनाली आदि हैं।

नेपाल में पाँच अन्य महत्त्वपूर्ण नदियाँ हैं, जिनके नाम महाकाली, राप्ती, मेची, कमला और बागमती हैं। इन सभी नदियों का उद्‌गम स्थल महाभारत पर्वत श्रृंखला है। सभी नदियों में बागमती नदी का बड़ा धार्मिक महत्त्व है। भगवान् पशुपतिनाथ के चरणों से गुजरती बागमती, गंगा नदी के सदृश पूजी जाती है। नेपाल में इसका महत्त्व गंगा से अधिक है।

चूँकि नेपाल हिमाच्छादित हिमालय की गोद में बसा है, इसलिए ग्लेशियरों और खूबसूरत झीलों का होना भी स्वाभाविक है। हिमखंडों के देश नेपाल में खुंबू, लंगटंग, कंचनजंघा, यालुंग, खानसुंग, रोंगबुक, मोजुंबा और तोलंबुआ ग्लेशियर मशहूर हैं, जबकि फेवैंताल, फोकसुंदों और रारा नेपाल की प्रमुख झीलें हैं। गोक्यो झील पोखरा में स्थित है और इस झील में स्वच्छ व निर्मल जल में जब अन्नपूर्णा और माछापुछरे की बर्फ से ढकी चोटियों की छाया दिखाई देती है, तो इसकी सुंदरता देखते ही बनती है। रारा झील पश्चिमी नेपाल

गोक्यो झील

में और फोकसुन्दो झील झेल्पा जिले में मौजूद है। पोखरा में बेगनासताल और रूपाताल, डांग में बरहाकुनेतार, मनांग स्थित तिलिजोताल, चितवन स्थित गुडवैंलताल, पाप्पा स्थित सत्यवतीताल और डोटी स्थित खतपादताल तथा बजहांग स्थित सुरमा सरोवर आदि भी सुंदर झीलें हैं।

टील्चा झील

नेपाल की आर्थिकी

नेपाल के हिमालयीय क्षेत्र में कई हिमखंड हैं, जिनमें महालंगूर, कुंभकरण शृंखला के अतिरिक्त पूर्ण में कंचनजंगा, थूलूग, नुप्तसे और लागटाँग हिमखंड आदि प्रमुख हैं। खुंबू सबसे बड़ा हिमखंड है। इकजा, टूक्चे, हूँकू, नांगपाई अन्य प्रमुख हिमखंड हैं। नेपाल में नदियाँ इन्हीं हिमखंडों से निकलती हैं।

अगर नेपाल के भौगोलिक परिदृश्य को देखें, तो इसमें विविधता ही विविधता दिखती है। इसी कारण इसकी जलवायु में भी भिन्नता का होना स्वाभाविक है। उत्तरी हिमालय के ऊँचे क्षेत्रों में भीषण सर्दी होती है, जबकि मध्य नेपाल में गरमी अधिक होती है। मध्य हिमालयी क्षेत्र में गर्मियों में तापमान 23 डिग्री सेंटीग्रेड से 28 डिग्री सेंटीग्रेड तक रहता है। अत्यधिक

ऊँचाई वाले क्षेत्रों में यूँ तो मौसम ठंडा रहता है, लेकिन सर्दियों में तो तापमान 12 डिग्री सेंटीग्रेड से शून्य तक नीचे चला जाता है। वर्षा भी कहीं अधिक और कहीं पर कम होती है। मध्य नेपाली क्षेत्र में 100 से 300 सेंटीमीटर वर्षा होती है, जबकि भारत से जुड़े तराई क्षेत्र में औसतन हर साल 200 सेंटीमीटर तक वर्षा होती है।

वर्षा की प्रचुरता के कारण नेपाल में हरे-भरे और घने वन भी खूब हैं। नेपाल की महाभारत शृंखला और निचले हिमालय क्षेत्र में यानी करीब 2100 से 3300 मीटर की ऊँचाईवाले पर्वतों में औषधीय महत्त्व के अनेक पौधे मिलते हैं। कुल मिलाकर नेपाल का कुल क्षेत्रफल 45 हजार 325 किमी. तक फैला हुआ है। वनों में रीछ, चीता, तेंदुआ, गैंडा जैसे जंगली जानवर बहुतायत में पाए जाते हैं।

नेपाल का कुल घरेलू सकल उत्पाद 21.19 बिलियन डॉलर है। पिछले कुछ वर्षों से नेपाल की विकास दर 2.3 के आसपास है और मुद्रास्फीति 10 से कम है, लगभग एक तिहाई हिस्सा कृषि पर आधारित है, जबकि यहाँ की

राष्ट्रीय बैंक नेपाल

विदेशी मुद्रा नेपाल भेजनेवाला प्रतिष्ठान

विकास दर 2.7 प्रतिशत और मुद्रास्फीति 7 प्रतिशत से अधिक है। पिछले कुछ वर्षों में नेपाल ने आर्थिक क्षेत्र में अच्छी प्रगति की है। आँकड़ों से पता चलता है कि स्वास्थ्य, शिक्षा, महिला और बाल विकास के क्षेत्र में यहाँ अच्छा कार्य हो रहा है। साधारण रूप से हम कह सकते हैं कि नेपाल की अर्थ व्यवस्था कृषि पर आधारित है, हालाँकि भारत के हिमालयी क्षेत्रों की तरह नेपाल में कम कृषि उत्पादन होता है और सिंचाई के लिए व्यवस्थाओं की कमी है। नेपाल के हिमालय क्षेत्र में लोग भारतीय हिमालय की तरह अपने पशुओं पर अत्यंत निर्भर हैं।

मुझे नेपाल की कृषि देखकर अपनी उत्तराखंड की कृषि की याद आ गई। अगर समुचित साधन, सिंचाई, आधुनिक प्रौद्योगिकी, ज्ञान उपलब्ध करा दिया जाए, तो इस क्षेत्र में विकास की असीमित संभावनाएँ हैं। सबसे बड़ी बात नेपाल के लोग कर्मठ मेहनती हैं और अपने परिश्रम के बल और पुरुषार्थ के चलते सोना उगल सकते हैं।

नेपाल की 65 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या कृषि पर आधारित है। जहाँ तक निर्यात का विषय है, नेपाल सबसे अधिक निर्यात भारत, अमेरिका को करता है। यूरोप एवं खाड़ी के देशों को भी कुछ सामान निर्यात किया जाता है। इसमें कार्पेट, कालीन, चमड़े का सामान, चाय, कॉफी, फर्नीचर, गरम कपड़े, जड़ी-बूटी, जूट इत्यादि शामिल हैं। भारत को नेपाल 61 प्रतिशत निर्यात करता है, जबकि अमेरिका को 10 प्रतिशत करता है। जहाँ तक आयात का प्रश्न है, नेपाल भारत से पेट्रोलियम, सोना, भारी मशीनरी, दवाई, कंप्यूटर हार्डवेयर, भारी उद्योग का साजोसामान, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण आदि मँगाता है।

इसमें से काफी निर्यात सड़क मार्ग के माध्यम से होता है, जो अभिलेखों में दर्ज नहीं होता है। नेपाल का आयात 7.2 बिलियन यू.एस. डॉलर के आसपास है। नेपाल में नेपाली रुपया चलता है, जिसमें भारतीय रुपए के सदृश 100 पैसे होते हैं। नेपाल राष्ट्र बैंक यहाँ का राष्ट्रीय बैंक है। वर्ष 1932 में नेपाली रुपए को नेपाली मोहर की जगह प्रचलन में लाया गया था, तभी इसे भारतीय रुपए के सापेक्ष 1.6 अनुपात 01 के अनुपात में रखा गया। नेपाल के सकल घरेलू उत्पाद का 35 प्रतिशत कृषि, 20 प्रतिशत उद्योग, 45 प्रतिशत सेवा क्षेत्र से आता है। जहाँ तक व्यापार में आमदनी का प्रश्न है, नेपाल वैश्विक सूची में 100 से ऊपर आता है, परंतु आशा की जानी चाहिए कि एशिया के पड़ोसी देशों के वातावरण का सकारात्मक प्रभाव नेपाल पर पड़ेगा और नेपाल में विदेशी निवेश के बेहतर अवसर उत्पन्न होंगे।

नेपाल की जीडीपी का 35 प्रतिशत कृषि है, जबकि पूरे राष्ट्र का मात्र 20 प्रतिशत हिस्सा खेती योग्य है और 40 प्रतिशत वन आच्छादित क्षेत्र है। नेपाल की जीडीपी का एक मुख्य भाग यहाँ पर आ रही विदेशी मुद्रा पर टिका है। देश-विदेश से नेपाल में प्रवासियों के द्वारा भेजे गए इन पैसों का सार्थक प्रभाव इस बात में दिखता है कि शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिला है। वर्ष 2013 में प्राथमिक शिक्षा 98 प्रतिशत तक हो गई, जबकि सेकेंडरी शिक्षा 76 प्रतिशत तक पहुँच गई। प्रवासियों द्वारा भेजे गए पैसों से आज विद्यार्थी अच्छे विद्यालयों में पढ़ने में सफल हुए हैं। लोगों

विदेशों में प्रवासी नेपाली आय का बड़ा साधन

का इलाज अच्छे अस्पतालों में हो रहा है। इसके अतिरिक्त, कई नए निजी अस्पताल बन गए हैं। हालाँकि प्रवासियों द्वारा भेजी जा रही मदद से बड़े पैमाने पर पलायन हुआ है। बेहतर स्वास्थ्य एवं शिक्षा की सुविधाओं के चलते लोग अपने गाँवों को और पारंपरिक जीवनयापन के साधन छोड़कर शहरों में बस गए हैं। यही कारण है कि पिछले कुछ वर्षों में काठमांडू, पोखरा सहित अन्य शहरों में गाँवों से आनेवालों की संख्या बढ़ी है। यह चिंता का विषय है कि कई गाँव बिल्कुल खाली हो रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों से मैं विदेशों के भ्रमण पर रहा। जहाँ मैं गया, वहाँ मुझे नेपाली प्रवासी मिले। युगांडा, दुबई, मॉरिशस, जर्मनी, थाईलैंड, जापान, कनाडा, अमेरिका में बड़ी संख्या में प्रवासी देखने को मिले। मुख्यत: ये लोग रेस्तराँ व्यापार में नौकरी में, आई.टी. सुरक्षा एजेंसियों में, अन्य सेना क्षेत्र में कार्यरत हैं। उत्तराखंड में भी यही समस्या विकराल रूप में गंभीर चुनौती पेश कर रही है। विभिन्न अध्ययनों से इस बात का पता चलता है कि नेपाल को भेजी जा रही राशि से वहाँ की मुद्रास्फीति की दर काफी बढ़ी है। अधिकतर निवेश सोना एवं रीयल इस्टेट में हुआ है। विश्व बैंक, नेपाल में भूकंप पश्चात् एक विस्तृत कार्ययोजना पर कार्य कर रहा है। बृहद हाउसिंग प्रोजेक्ट पर कार्य करते हुए विश्व बैंक गरीब

लोगों को 55000 घर उपलब्ध कराएगा। विश्व बैंक द्वारा यहाँ आपदा की जद में आनेवाले क्षेत्रों के लिए 200 मिलियन यू.एस. डॉलर व्यय किए जा रहे हैं। इसी क्रम में सड़कों के लिए 50 मिलियन यू.एस. डॉलर खर्च किए जा रहे हैं। कई दानी देशों द्वारा एक निधि की स्थापना की गई है, जिसमें जापान द्वारा 100 मिलियन यू.एस. डॉलर की समानांतर निधि स्थापित की गई है। प्रवासी नेपाली अपने देश में नियमित रूप से विदेशी मुद्रा भेजते हैं। अधिकतर मुद्रा का हस्तांतरण खाड़ी देशों से अमेरिका, कनाडा, यूरोप, भारत, मलेशिया, इंडोनेशिया, जापान आदि से होता है। नेपाल में प्रवासियों द्वारा बड़ी राशि भेजे जाने का यह सुखद परिणाम हुआ है कि बड़ी संख्या में नए बैंक या ऐसे उपक्रम आ गए हैं, जो प्रवासियों को अब अधिक विदेशी मुद्रा हस्तांतरण की सुविधा प्रदान करते हैं।

भारत और चीन के मध्य लैंड लॉक्ड देश (बिना समुद्री सीमा) के रूप में नेपाल के सामने अंतरराष्ट्रीय व्यापार की बड़ी चुनौती है। इस सबके बावजूद पिछले एक दशक में नेपाल ने अपनी आर्थिकी में व्यापक सुधार किए हैं। वर्ष 2005 और 2014 के बीच नेपाल की गरीबी 80 प्रतिशत से 57 प्रतिशत पर आ गई, जो अपने आपमें एक बड़ी उपलब्धि है। पिछले एक दशक में ढाँचागत अवस्थापना, शिक्षा, आर्थिक वातावरण और संस्थागत

वस्त्र उद्योग : नेपाल से यूरोप और अमेरिका को निर्यात

ऑटो लाइफ सर्विस सेंटर नेपाल

विकास के संकेतकों को देखने पर पता चलता है कि राजनैतिक अस्थिरता के बावजूद नेपाल के आर्थिक परिदृश्य में सुधार दिखा है।

वर्ष 1963 में नेपाल सरकार द्वारा अर्थ एवं नियोज्य विभाग का गठन किया गया। एक ओर जहाँ इस मंत्रालय का कार्य देश में निश्चित अवधि के नियोजन को सुनिश्चित करना था, वहीं दूसरी ओर देश की आर्थिक जिम्मेवारियों को भी इस विभाग को सौंपा गया। नेपाल में बड़ी मात्रा में विदेशी सहायता आती है। ऐसी दशा में इसी विभाग को यह जिम्मेवारी दी गई कि वह विदेशी एजेंसियों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए द्विपक्षीय सहमति तंत्र को मजबूत बनाते हुए वैश्विक परिवेश में नेपाल हेतु विदेशी निवेश सहायता हेतु सक्षम प्रभावी तंत्र की स्थापना करे। वर्ष 1998 में नेपाल के इस मंत्रालय को समाप्त कर अर्थ मंत्रालय का गठन किया गया। राष्ट्रीय योजना आयोग की स्थापना की गई। तब से देश के समस्त आर्थिक, वित्त मामले इस मंत्रालय के अधीन आते हैं।

देश की समस्त आर्थिक जिम्मेदारियों का निर्वाह यही मंत्रालय करता है। यह मंत्रालय यह भी सुनिश्चित करता है कि संसाधनों का उचित बँटवारा

हो, आंतरिक एवं बाहरी स्रोतों का कुशल प्रबंधन, सार्वजनिक उद्यमों का सशक्तीकरण, देश में निवेश के लिए अनुकूल माहौल निर्मित हो, साथ ही व्यय-प्रणाली में अधिक दक्षता, उनमें पारदर्शिता के साथ विदेशी सहायता पर निवेश को अधिक युक्तिसंगत बनाया जाए एवं देश की समस्त आर्थिक नीतियों का सृजन और क्रियान्वयन सुनिश्चित हो सके। भारत की तरह ही यहाँ पर सचिव, संयुक्त सचिव, उप-सचिव स्तर के अधिकारी मंत्रालय का कामकाज देखते हैं।

विभिन्न प्रभागों के माध्यम से वित्त मंत्रालय अपने दायित्वों का निर्वाह करता है। इन प्रभागों में राजस्व सलाहकार समिति, अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग एवं समन्वय समिति, बजट एवं कार्यक्रम प्रभाग, निगरानी एवं मूल्यांकन प्रभाग, आर्थिक मामले एवं नीति प्रभाग इत्यादि हैं। नेपाल में सभी 75 जिलों में प्रथम श्रेणी का अधिकारी सभी दायित्वों का पालन करता है। इसके अतिरिक्त, नेपाल का केंद्रीय बैंक, नेपाल राष्ट्र बैंक, सिक्योरिटी बोर्ड, कृषि विकास बैंक, राष्ट्रीय वाणिज्यिक बैंक, नेपाल बीमा निगम, कर्मचारी प्राविडेंट फंड, बीमा समितियाँ सभी वित्त मंत्रालय के अधीन आते हैं।

नेपाली जीडीपी का 7 प्रतिशत भाग पर्यटन के क्षेत्र से आता है। इससे नेपाली अर्थ-व्यवस्था एवं पर्यटन के गहरे रिश्ते का पता चलता है। यह उद्योग साढ़े चार लाख से अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध कराता है। विभिन्न शोधों के माध्यम से यह प्रमाणित हुआ है कि आर्थिक विकास की गति पर्यटन के विकास से जुड़ी हुई है। यह सर्वविदित है कि पर्यटन क्षेत्र में गतिविधियाँ बढ़ने के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों की आर्थिक गति पर सार्थक दिशा में प्रभाव पड़ता है। नेपाल की आर्थिक गति को तेज करने के लिए पर्यटन पर समुचित ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

नेपाल में आज भी 25 प्रतिशत से अधिक लोग गरीबी की रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहे हैं। सकल घरेलू उत्पाद का 30 प्रतिशत भाग विदेशों से अप्रवासियों के द्वारा भेजी गई राशि पर निर्भर है। नेपाल में कृषि से 70 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या पोषित होती है। औद्योगिक गतिविधियाँ खाद्य

प्रंस्करण जैसे दाल, जूट, गन्ना, तंबाकू और अनाज पर निर्भर हैं। जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि नेपाल में लगभग 43000 मेगावाट की जल विद्युत् संभाव्यता है, लेकिन निवेश की कमी एवं सरकारी स्तर पर अस्थिरता के चलते इसके दोहन में अधिक सफलता नहीं मिली है। इस क्षेत्र में मुख्य चुनौती अस्थिर राजनैतिक वातावरण एवं उसके अलावा विदेशी निवेश की भारी कमी है। कई जल विद्युत् परियोजनाओं पर कार्य मात्र इसलिए नहीं शुरू हो पाया, क्योंकि निवेश की अत्यधिक कमी है। वर्ष 2015 में नेपाल में जो भूकंप आया, उसने समूचे आर्थिक, सामाजिक जीवन का ताना-बाना नष्ट कर दिया। देश दशकों पुरानी सड़क ढाँचागत अवस्थापना पर अधिक ध्यान देने का प्रयत्न कर रहा है।

अगर नेपाल के सकल घरेलू उत्पाद की बात करें तो यह 70 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है। चालीस प्रतिशत से अधिक लोग बेरोजगारी की समस्या से जूझ रहे हैं। दस प्रतिशत के करीब मुद्रास्फीति के कारण नेपाल में जीवनयापन करने का खर्चा बहुत सस्ता नहीं है। मुख्य उद्योगों में जूट, चावल, कालीन, चीनी, सीमेंट, सिगरेट और ईंट उत्पादन है। आज भी 65 प्रतिशत से

नेवार संस्कृति नेपाल

70 प्रतिशत नेपाल के लोग कृषि या उससे जुड़े उद्योगों पर निर्भर करते हैं। नेपाल का निर्यात वर्ष 2016 के आँकड़े के अनुसार 1.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर है, नेपाल भारत और अमेरिका को सबसे ज्यादा निर्यात करता है, जो कि उसके निर्यात का 61 एवं 15 प्रतिशत हिस्सा है, जबकि आयात देखने पर पता चलता है कि सर्वाधिक आयात भारत से (60-65) प्रतिशत एवं चीन से (12 प्रतिशत) होता है।

नेपाल का सामाजिक जीवन

नेपाल में सामाजिक जीवन कदम-कदम पर प्रकृति से प्रेरणा लेकर सामाजिक ताने-बाने में समन्वय स्थापित करता है। नेपाल के लोग परंपरागत, सामाजिक ताने-बाने से बुने समाज में रहकर अपने धर्म, आस्था, व्यवहार, उनकी वेशभूषा, उनके हिंदू और नेपाल धर्म को प्रतिष्ठित करते हैं। नेपाल के लोगों की वेशभूषा वहाँ के मौसम के अनुरूप है। यहाँ पर्वत शृंखलाओं में रहनेवाले गरम ऊनी कपड़े एवं तराई में रहनेवाले सूती कपड़ों का अधिक प्रयोग करते हैं। देश में मंदिरों की बड़ी संख्या है और नेपाली जनजीवन पर धर्म का बड़ा प्रभाव दिखता है। नेपाल के लोग हिंदू धर्म एवं बौद्ध धर्म की मान्यता के अनुसार अतिथियों का अत्यधिक सत्कार करते हैं। भारत की तरह नेपाल के लोग भी विभिन्न जाति, धर्म व उपजातियों में बँटे हैं। भारत से सीमा लगी होने के कारण नेपाल के लोग बड़ी संख्या में भारतीय रीति-रिवाजों को मानते हैं और भारतीय त्योहारों की तरह अपने उत्सवों को भी मनाते हैं। तिब्बत और मंगोलिया के लोग भी पुराने समय से नेपाल की जनसंख्या का एक अभिन्न हिस्सा रहे हैं।

नेपाल में कई भाषाएँ बोली जाती हैं, परंतु मुख्य भाषा नेपाली के साथ-साथ लोग हिंदी एवं अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं। अंग्रेजी दूसरी राजभाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। नेपाल के अधिकतर लोग हिंदी को आसानी से समझ पाते हैं। नेपाली देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। नेपाली के अनेक शब्द संस्कृत से लिये गए हैं। इसके अलावा, गढ़वाली एवं कुमाऊँनी के अनेक

शब्द नेपाली में पाए जाते हैं। भारतीय सनातन धर्म की तरह कई रूपों में ईश्वरों को मानने के साथ ही लोग पुनर्जन्म और कर्म की महत्ता पर विश्वास करते हैं।

नेपाली भोजन पर भारत का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। हिंदू, बौद्ध धर्म के अनुयायी होने के कारण लोग गौमांस का भक्षण बिल्कुल नहीं करते हैं। भारत की तरह दाल, सब्जी, रोटी, चावल यहाँ का मुख्य भोजन है। जो लोग मांसाहारी हैं तो वे अधिकतर बकरी, मुर्गी का मांस खाना पसंद करते हैं। नेपाल के खाने पर दूसरा बड़ा प्रभाव चीनी भोजन का दिखता है। मोमोज, पास्ता, नूडल्स और विभिन्न प्रकार के सूप हमें तिब्बती/चीनी प्रभाव के दर्शन कराते हैं। आलू तमा, चटमारी, मासू, मोमो, पुलाव, मुकमा, गुण्ड्रक-ढीढो, कड़ी चटनी यहाँ के प्रमुख व्यंजन हैं।

नेपाल की 80 प्रतिशत जनसंख्या ठेठ ग्रामीण परिवेश में रहती है। खेतों में अधिकतर मक्का, चावल, बीन, दालें एवं गेहूँ की पैदावार होती है। नेपाल का ग्रामीण जीवन एक-दूसरे पर आधारित सामुदायिक जीवन के दर्शन कराता है। नेपाल में शनिवार को अवकाश रहता है। विदेशों की तरह रविवार की छुट्टी नहीं होती है। विदेशों में नेपाल के जुड़े लोग नेपाली के रूप में जाने जाते हैं, परंतु नेपाल में वे अपनी अलग रीति-रिवाजों, धार्मिक मान्यताओं को मानते हैं। नेपाल में संयुक्त परिवार का बहुत महत्त्व है। अच्छा एवं एक स्वस्थ सामाजिक परिवेश होने के कारण लोग मिल-जुलकर रहना पसंद करते हैं। □

4

नेपाल में धर्म

पौराणिक संस्कृति को सहेजता नेपाल

आम नेपाली का जीवन उसके रीति-रिवाजों, धर्म, संस्कृति, पौराणिक ग्रंथों से काफी कुछ प्रेरित रहता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक वह विभिन्न संस्कारों में बँधा रहता है। लोगों की अपने धर्म-संस्कृति में गहरी आस्था है। सभी लोग त्योहारों-उत्सवों को पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। इन मौकों पर उनका प्रकृति के प्रति लगाव उजागर होता है। भारत की तरह पेड़, पर्वत, जीवों की पूजा की जाती है। जहाँ तुलसी, पीपल की उपासना की जाती है,

नेपाल के पर्वतीय गाँव

नेपाल के पर्वतीय गाँव का प्राकृतिक दृश्य

वहीं गाय और पक्षियों को विशेष अवसरों पर पूजा जाता है।

नेपाल की 80 प्रतिशत से अधिक की जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। नेपाल के लोग स्वभाव से काफी कुछ भारतीय हिमालय के लोगों के सदृश हैं। ये लोग ईमानदार, लगनशील, मेहनतकश, हर हाल में समर्पित, सरल स्वभाव के और सबसे ऊपर हरहाल में खुश रहनेवाले हैं। गरीबी व बेकारी की समस्या से जूझते हुए भी नेपाली जन मस्ती में रहते हैं। अधिकतर संयुक्त परिवारों में रहने के कारण वे हर कार्य सामूहिक रूप से करते हैं। चाहे खेतीबाड़ी हो, धान लगाने का कार्य हो या कोई अन्य सामाजिक कार्य, वे मिलजुल कर करते हैं। नेपाल के लोग ग्रामीण परिवेश में मिट्टी के बने अपने घरों में रहते हैं। पहाड़ी अंचलों से बड़ी संख्या में पुरुष मजदूरी के लिए तराई क्षेत्रों में चले जाते हैं। सुगम आवागमन के चलते भारत में लाखों की संख्या में नेपाल के लोग हर वर्ष आते हैं। पिछले कई दशकों से लोग मलेशिया, खाड़ी देशों, हांगकांग, सिंगापुर, इंडोनेशिया की तरफ रुख करने लगे हैं। प्रबुद्ध, प्रतिष्ठित नेपाली वर्ग अपने बच्चों को जापान, यूरोप और अमेरिका जैसे देशों में उच्च शिक्षा या रोजगार के लिए भेजने लगा है।

नेपाल में भारत की तरह विवाह को एक पवित्र संस्कार के रूप में माना जाता है। अधिकतर परिणय संबंध जन्मपत्री के आधार पर समकक्ष जातियों में किए जाते हैं, हालाँकि नेपाल में प्रेम-विवाहों का प्रचलन अब काफी बढ़ गया है।

पूर्व समय में नेपाल में अल्पायु में विवाह संबंध जोड़ दिए जाते थे, लेकिन वर्ष 1963 के बाद बाल-विवाह पर पूर्णतया रोक लगाए जाने का परिणाम यह रहा कि आज इस कुप्रथा पर काफी हद तक अंकुश लग सका है। परंपरागत भारतीय परिवारों की तरह नेपाल में पुरुष प्रधान समाज है और बेटों को अधिक महत्त्व दिया जाता है। हिंदू धार्मिक मान्यताओं के अनुसार लड़कों को ही माँ-बाप का अंतिम संस्कार करके उनके मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करनेवाला माना है। ग्रामीण भारतीय परिवेश की तरह कन्या माँ-बाप की जिम्मेदारी मानी जाती है और उसके हाथ पीले करना ही परिवार का मुख्य लक्ष्य रहता है।

एक मोटे अनुमान के अनुसार लगभग 70 प्रतिशत बच्चे प्राथमिक स्कूल में नाम लिखाते हैं, किंतु 10वीं कक्षा तक मात्र 15 प्रतिशत छात्र ही पहुँच पाते हैं। इसमें भी लड़कियों का प्रतिशत महज 30 प्रतिशत के आसपास ही रहता है। नेपाल के काठमांडू व पोखरा महानगरों में समृद्धि देखने को मिलती है, परंतु गाँवों में अधिकतर ग्रामीण जनता आर्थिक परेशानियों से जूझती रहती है। नेपाल में आज भी जमींदार हैं, जिनके पास भूमि के बड़े पट्टे हैं। पूरे उत्पादन का एक हिस्सा इन्हीं जमींदार लोगों को दिया जाता है। यह प्रतिशत 50 प्रतिशत तक हो जाता है। जहाँ तक गाँवों में खाद्यान्न उपलब्धता की बात है, नेपाल के लोग पूर्णतया आत्मनिर्भर हैं। अपनी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति वे अपना अनाज बेचकर करते हैं। उनकी मुख्य आवश्यकताओं में चीनी, साबुन, सिगरेट, चाय, कपड़ा और आभूषण होते हैं। नेपाल की जीवनशैली को त्योहारों, उत्सवों, परंपराओं, रीति-रिवाजों से भलीभाँति समझा जा सकता है।

धर्म के मामले में नेपाल के लोगों की खूबसूरती यह है कि वे भारत के लोगों की तरह सर्व-धर्म-सम्भाव समभाव में विश्वास रखने में अत्यंत

दोनों हाथ जोड़कर गौ पूजन करती हुई नेपाली महिला

सहिष्णु व लचीले हैं। कट्टरता तो दूर-दूर तक कहीं भी नेपाल की जनता में देखने को नहीं मिलती। नेपाल के लोग दूसरे धर्म का सम्मान करने और अपनी सादगी सहनशीलता के लिए जाने जाते हैं। नेपाल के लोग भारतीयों की तरह ही नमस्ते से अभिवादन करते हैं और भगवान् के अलावा ये लोग देश, नदियों, पशु-पक्षियों, वनस्पति की भी पूजा करते हैं। गाँव व शहर में जगह-जगह मंदिरों की उपस्थिति इस बात की द्योतक है कि नेपाली जनता कितनी आस्थावान है। सड़कों के बीचोबीच छोटे-छोटे मंदिर इस देश की धार्मिक विरासत को संजोए हुए हैं। नेपाली लोग प्रार्थना व कर्मकांड में भी पूर्ण विश्वास रखते हैं। उनकी वेशभूषा उनके आचार-व्यवहार में हिंदू धर्म की मान्यता के दर्शन देखने को मिलते हैं। नेपाल में आज भी 80 प्रतिशत लोग हिंदू धर्मावलंबी हैं।

नेपाल में ईसाई

नेपाल विश्व के उन देशों में है, जहाँ ईसाई धर्म तेजी से पांव पसार रहा है। वर्ष 1950 में जहाँ एक भी ईसाई नहीं था, वहीं आज नेपाल में वहाँ

की जनसंख्या के 1.5 प्रतिशत लोग ईसाई हैं। वर्ल्ड क्रिश्चियन डाटाबेस के अनुसार आज नेपाल में 4 लाख से अधिक ईसाई हैं। ऐसा माना जाता है कि नेपाल के लोग गरीबी, मजबूरी, बीमारी के दौरान ईसाई मिशनरियों द्वारा सहायता करने पर ईसाई धर्म की शरण में आए हैं। आज देश में अनेक स्थानों पर चर्च या गिरिजाघरों का निर्माण हुआ है। हाल में आए भूकंप के बाद बड़ी संख्या में लोग ईसाई धर्म की ओर आकर्षित हुए। चार मुख्य धर्मों के अतिरिक्त नेपाल में माइक यूगेन और निशियशाही को माननेवाले 2 प्रतिशत के करीब लोग हैं।

कैथोलिक चर्च

बौद्ध धर्म

बड़ी संख्या में विदेशी लोग बौद्ध धर्म का अध्ययन करने नेपाल आते हैं। भगवान् बुद्ध का जन्म 'शाक्य वंश' में कपिलवस्तु नामक राज्य में रूपनदेही जिला के 'लुंबिनी' में हुआ। नेपाली जनसंख्या का 11 प्रतिशत भाग बौद्ध धर्मावलंबी हैं। नेपाल राष्ट्र के रूप में बौद्ध और हिंदू धर्म की संगम स्थली है। भगवान् बुद्ध को हिंदू अपना अवतार मानते हैं, वहीं हिंदू धार्मिक स्थलों को बौद्ध आस्था का केंद्र मानते हैं। बौद्ध धर्म तिब्बत एवं बर्मा की ओर से

काठमांडू स्थित बौद्ध स्तूप

आनेवाले लोगों में अधिक प्रचलित रहा। तिब्बत से आए लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। नेपाल में सुंदर परंपरागत ढंग से सजे बौद्ध विहार काठमांडू में देखने को मिलते हैं। परंपरागत वेशभूषा में बौद्ध लोग नेपाल में हर स्थान पर मिल जाएँगे।

नेपाल की मस्जिद

मुस्लिम धर्म

नेपाल की जनसंख्या का लगभग 4 प्रतिशत भाग मुस्लिम है। नेपाल के मुसलमान भोजपुरी, अवधी, नेपाली, उर्दू, नेवाड़ी, मैथिली भाषा का प्रयोग करते हैं। नेपाल में मुस्लिम सरल ही रोताहत, बारा, पटसा, सिराहा, बांके जिलों में ज्यादा रहते हैं। अन्य मधेशियों की तरह नेपाली मुस्लिम भी सीमा पार के भारतीय मुस्लिमों से घनिष्ठ संबंध रखते हैं। शादी-विवाह के अतिरिक्त सामाजिक, आर्थिक रिश्तों से ये लोग भारतीय मुसलमानों से जुड़े हैं। नेपाली मुस्लिम 97 प्रतिशत तराई में रहते हैं, जबकि 3 प्रतिशत ने काठमांडू और पश्चिमी पर्वतीय क्षेत्र को ठिकाना बनाया है।

□

5

नेपाल में विभिन्न जाति समुदाय

प्राकृतिक संसाधनों और नैसर्गिक सौंदर्य से परिपूर्ण नेपाल राष्ट्र की 3.5 करोड़ से कुछ अधिक जनसंख्या 1.2 प्रतिशत वार्षिक गति से बढ़ रही है। जहाँ तक काठमांडू घाटी का प्रश्न है, यह लगभग 25 लाख लोगों से ज्यादा का घर है। शहर के अंदर लगभग 10 लाख लोग रहते हैं। एक आकलन के अनुसार नेपाल के 40 लाख से ज्यादा लोग भारत में हैं। नेपाल के लगभग 25 लाख से ज्यादा लोग विदेशों में काम करने के लिए गए हुए हैं। इनमें से 40 प्रतिशत खाड़ी के देशों में कार्य कर रहे हैं। आज की बात की जाए तो नेपाली लोग अपने देश को वार्षिक रूप से 4 बिलियन डॉलर की राशि विभिन्न माध्यमों से भेजते हैं, जो कि नेपाली सकल घरेलू उत्पाद का 25 प्रतिशत है। अत्यंत समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को अपने में संजोए नेपाल विश्व फलक पर अपनी गौरवमयी उपस्थिति दर्ज कराता है। विविधता से परिपूर्ण नेपाली समाज में अत्यंत विषमताओं का दर्शन होता है। आप अगर कहीं पर जाएँ, तो उस स्थान पर आपको लींबू, लेप्चा, लोपा, लोमा में फर्क महसूस होगा। नेपाल के लोग 100 से ज्यादा भाषाएँ बोलते हैं। देखा जाए तो नेपाल मंगोल तथा आर्य लोगों का समागम स्थल है। भौतिक और सांस्कृतिक रूप से नेपाल पृथक् परिक्षेत्र में बँटा हुआ महसूस होता है। इन लोगों की जीवनशैली, उनकी कार्य पद्धति, उनका रहन-सहन अलग-अलग रहता है, हालाँकि पूरे नेपाल में नेपाली भाषा का प्रचलन है, परंतु भाषा स्थान-स्थान पर परिवर्तित होती रहती है। अगर आप नेपाली भाषा के ज्ञाता हैं और नेपाली को भलीभाँति समझते हैं, तो व्यक्ति की

भाषा, उसकी शैली को सुनकर उसके क्षेत्र का पता चल सकता है। मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि नेपाली भाषा में मेरी उम्मीद से अधिक गढ़वाली, कुमाऊँनी भाषा के शब्द समाहित हैं या यूँ कहिए कि गढ़वाली-कुमाऊँनी भाषा में नेपाली भाषा के शब्दों की भरमार है। नेपाली गाँवों में घूमते हुए कहीं से भी यह महसूस नहीं होता है कि आप गढ़वाल अथवा कुमाऊँ में नहीं हैं। वही सीढ़ीनुमा खेत, वही ढलानदार स्लेट की छत और ज्यादातर सूती धोती पहने हुए महिलाएँ और वही कोदों का आटा और वही पहाड़ी मोटा चावल, रही बात दोनों मुल्कों के इनसान और जानवरों की, उनमें तो फर्क करना ही मुश्किल है। यहाँ पहाड़ की तरह ही वहाँ भी गठे हुए शरीर, सांवला रंग और अत्यंत चुस्त-दुरुस्त झबरू नस्ल के श्वान (कुत्ते) लोगों ने पाले हुए हैं। जहाँ ये एक ओर तो अनजान व्यक्तियों के लिए खूँखार होते हैं, वहीं अपने स्वामी के लिए जान देनेवाले वफादारी का पर्याय।

भौगोलिक दृष्टि से नेपाल को तीन भू-भागों में बाँटा जा सकता है। उच्च हिमालय, मध्य पर्वतीय और तराई। उच्च हिमालय में बिल्कुल यहाँ की तरह ही भोटिया लोग रहते हैं और ये लोग तिब्बती जैसे लगते हैं। इनमें मुख्यत: शेरपा, लोपा, लोबास एवं डोल्पोपो आदि शामिल हैं। ये लोग ज्यादातर कृषि और भेड़, बकरियों को पालते हैं। ये लोग याक का भी प्रयोग करते हैं। ये लोग हिमालय के विभिन्न क्षेत्रों में विचरण करते हैं और अपने भेड़-बकरियों के साथ भारतीय हिमालय में भी दिख जाते हैं। अगले कुछ पृष्ठों में मैंने नेपाल के विभिन्न जातियों/उप-जातियों के लोगों के विषय में जानकारी देने का प्रयास किया है।

थकाली

काली गंडकी घाटी में थकाली लोग नेपाल के व्यवसायी हैं। ये लोग भारतीय उप-महाद्वीप एवं तिब्बत के मध्य व्यापार करते थे। आज इन लोगों के पास होटल, लॉउंज, दुकानें आदि हैं। मुख्यत: ये लोग बौद्ध धर्म को माननेवाले हैं, परंतु कई लोगों ने अब हिंदू धर्म को अपना लिया है। थकाली

लोगों का खाना अत्यंत स्वादिष्ट होता है। इनके भोजन में हमारे उत्तराखंड की तरह हरी सब्जी, दाल, पर्वतीय चावल, आलू की सब्जी होता है, लेकिन स्वाद में आप निश्चित फर्क देख सकते हैं। शायद यह फर्क मसालों के कारण है। थकाली लोगों के व्यावसायिक प्रतिष्ठान पूरे नेपाल में देखे जा सकते हैं।

तमाँग

तमाँग लोग काठमांडू के उत्तर में पर्वतों पर रहते हैं। मुख्य रूप से ये लोग तिब्बती धर्म के अनुयायी हैं। इनके ग्रामों में बौद्ध विहारों के दर्शन हो सकते हैं। बड़ी संख्या में पर्यटक तमाँग विरासत को देखने के लिए इन क्षेत्रों में आते हैं। तमाँग लोगों के पूर्वज मुख्य रूप से घोड़ों के व्यापारी हैं और ये लोग तिब्बती सेना का हिस्सा माने जाते हैं, जिन्होंने नेपाल पर आक्रमण किया और वहीं अपना घर बना लिया। कालांतर में इन लोगों की जमीनों को बहुन एवं क्षेत्री लोगों को दे दिया गया। कई लोग आज भी मजदूरी करते हैं। तिब्बत की कलाकृतियाँ एवं तिब्बत के कालीन इन्हीं लोगों के द्वारा बनाए जाते हैं। काठमांडू में बड़ी-बड़ी दुकानों में ये बेहतरीन कालीन तमाँग कला का उत्कृष्ट नमूना पेश करते हैं। तिब्बत इंटरनेशनल होटल में मुझे इन बेहतरीन कालीनों को देखने का अवसर मिला। काठमांडू में अनेक दुकानों में परंपरागत शैली की कालीनों को देखा जा सकता है।

तिब्बती

तिब्बती शरणार्थी आज तिब्बत से पूरी दुनिया के देशों में बस गए हैं। यहाँ भी लगभग 50 हजार के करीब ये शरणार्थी रहते हैं। इन लोगों की आर्थिक स्थिति काफी अच्छी है और ये लोग मुख्यत: पर्यटन एवं कालीन के उद्योग से जुड़े हुए हैं। यहाँ स्वयंभू नाथ और बौद्धा के आसपास ये लोग रहते हैं। ये लोग बौद्ध उत्सवों को अत्यंत गरिमापूर्ण ढंग से मनाते हैं। काठमांडू परिक्षेत्र में तिब्बती लोग अपने प्रार्थना चक्र, पारंपरिक वेशभूषा के साथ दिख जाते हैं। तिब्बत के लोग आज भी अपनी मातृभूमि के लिए शांतिपूर्वक

आयोजन करते हैं। तिब्बती लोग अपने अनुष्ठानों के लिए जाने जाते हैं। बौद्धा काठमांडू के आसपास बड़ी संख्या में रहते हैं। इन लोगों का धर्मशाला की निर्वासित तिब्बती सरकार से बराबर संपर्क बना रहता है। दलाई लामा इनके सर्वोच्च आध्यात्मिक गुरु हैं।

शेरपा

ये लोग उच्च चोटियों में पर्वतारोहियों की मदद करनेवाले लोग अपने कठिन परिश्रम, मजबूती एवं दृढता के लिए विश्वविख्यात हैं। ये लोग तिब्बत से 500 वर्ष पूर्व सोलू खूनू क्षेत्र में आए। इन लोगों के बारे में कहा जाता है कि उनके नाम से उनके जन्मदिवस के विषय में जानकारी मिल जाती है। दवा (सोमवार), मिंगपार (मंगलवार), लाखपा (बुधवार), फरबा (वीरवार), पासंग (शुक्रवार), पेंबा (शनिवार) एवं नईमा (रविवार) आदि नामों से जाने जाते हैं।

एक और बात पर मैंने विशेष ध्यान दिया कि कई जातियाँ तो नेपाल और यहाँ उत्तराखंड व हिमाचल में दोनों ओर पाई जाती हैं। जैसे अधिकारी, पांडे,

शेरपा पर्वतारोही

जोशी, बिष्ट, खत्री, पंत, आचार्य, भंडारी, राणा, त्रिपाठी शर्मा आदि दोनों ओर पाए जाते हैं। हालाँकि कुछ में परिवर्तन भी है। उदाहरण के लिए भंडारी, बिष्ट यहाँ क्षत्रिय और ब्राह्मण वर्ग में आते हैं, तो नेपाल में सिर्फ ब्राह्मणों में उनकी गिनती होती है। भारतीय राज्यों में नेपाल का विवाह संबंध रहा है।

वर्ष 1959 में चीनी सेनाओं द्वारा तिब्बत पर आक्रमण किया गया। तब से नांगपा ला से व्यापार पूरी तरह अवरुद्ध हुआ है। शेरपा लोग मुख्यत: उसके पश्चात् पूरी तरह से पर्यटन क्षेत्र में आ गए हैं। ऊँची पर्वत शृंखलाओं की ट्रैकिंग में माहिर माने जानेवाले शेरपा लोग पर्यटन उद्योग की रीढ़ की हड्डी के रूप में स्थापित हैं। ये लोग गाइड, ट्रैवल एजेंट या होटलों के मालिक हैं। साधारणतया: लगता है कि शेरपा लोग पर्वतारोहियों के साथ कुली का काम करते हैं, परंतु वास्तविकता यह है कि बहुत कम लोग इस कार्य में लगे हैं। अधिकतर कुली का कार्य करनेवाले तमाँग या राय लोग होते हैं। प्रधानतया: शेरपा माउंट एवरेस्ट के आसपास खुबू क्षेत्र में रहते थे, परंतु वर्तमान में ये सोलू घाटी में ज्यादा बसे हैं। नई पीढ़ी के शेरपा लोगों पर पश्चिमी पर्यटकों के प्रभाव को देखा जा सकता है। इन लोगों की वेशभूषा पश्चिमी ही है।

मध्य हिमालय के लोग

कहा जाता है कि अगर नेपाली ग्रामीण जीवन का सही दर्शन महसूस करना हो तो मध्य हिमालय के नेपाली गाँवों का प्रवास करना चाहिए।

राय एवं लिंबू

राय और लिंबू का काठमांडू क्षेत्र में प्राचीन समय से आधिपत्य रहा है। ये लोग सिक्किम सीमा, अरुण घाटी तक फैले हुए थे। युद्ध कला में संपूर्ण विश्व में अपनी धाक जमाने के साथ ये लोग बड़ी संख्या में भारत पलायन कर गए। राय लोग पर्वतारोही एवं पर्यटकों के साथ कल्गे का काम करते देखे जा सकते हैं। ये लोग किराती कहलाते हैं। इनके नयन-नक्श मंगोल जातियों की तरह हैं। सक्षम, मजबूत कद काठीवाले ये लोग अपना परंपरागत शस्त्र

खुँकरी साथ में रखते हैं। नेपाली थेपी कुर्ता-पजामा पहने ये लोग आपको नेपाल के अधिकांश स्थानों पर मिल जाएँगे।

नेवाड़ी

नेवाड़ नेपाल की लगभग 6 प्रतिशत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं। नेवाड़ी भाषा तिब्बती, नेपाली, हिंदी से बिल्कुल भिन्न भाषा है और दुनिया की कठिनतम भाषाओं में एक है। नेवाड़ी कामेशियन और मंगोल दोनों के नयननक्श लिए अपनी परंपरागत कलाओं से प्रवीणता के लिए विख्यात हैं। काठमांडू घाटी की कलात्मक धरोहर में इन लोगों का बहुत बड़ा योगदान है। ये लोग धातु पर कार्य करते हैं या फिर किसान हैं। ये कुमारी की पूजा करते हैं और उसे देवी मानते हैं, नेवाड़ी लोग काठमांडू के प्रशासन तंत्र का हिस्सा हैं। ये लोग सलवार और दौरा (कुर्ता) पहनते हैं और ऊपर से टोपी लगाते हैं। नेवाड़ी लोगों की कलाकृतियाँ ल्हासा से प्रेरित लगती है। कुल मिलाकर नेपाल के कलात्मक लोगों की श्रेणी में इनका पहला नाम है। इनकी कलाकृतियाँ विदेशों में अत्यंत महँगे मूल्यों में बिकती हैं।

तराई

तराई क्षेत्र में लगभग नेपाल की जनसंख्या का 50 प्रतिशत भाग रहता है। ये लोग हिंदी, अवधी, मैथिली, भोजपुरी आदि भाषाएँ बोलते हैं। तराई में बड़ी संख्या में ये लोग पूर्वी उत्तर प्रदेश व बिहार से गए हैं। भारतीय लोगों की तरह ये लोग पूर्णतया जातिगत समाज में बँधे हैं। रीति-रिवाज, सामाजिक व्यवस्थाएँ सब भारत की तरह हैं। ये लोग अपने विवाह-संबंध हेतु भारत में आते हैं। तराई के इन लोगों को 'मधेसी' भी कहते हैं। कुल मिलाकर देखा जाए तो ये लोग गंगा की तराई के लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। तराई में चारू, मैथिली लोगों के अलावा कुछ पहाड़ क्षेत्र के लोग भी रहते हैं। तराई का पूरा क्षेत्र नेपाल का समृद्ध संपन्न क्षेत्र है। यहाँ पर कृषि व व्यापारिक गतिविधियों से लोगों की अच्छी आय होती है। नेपाल की कृषि और उद्योग

तराई के उपजाऊ खेत

की गतिविधियाँ इन लोगों के हाथ में हैं। इनकी बोलचाल की भाषा बिहार एवं उत्तर प्रदेश की है।

नेपाल में मातृशक्ति

यूँ तो मातृशक्ति हर राष्ट्र की अमूल्य धरोहर होती है। उस देश का मान और सम्मान होती है। शास्त्रों में कहा भी गया है—'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जहाँ नारी को पूजा जाता है, उसका सम्मान किया जाता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। नेपाल की संस्कृति और वहाँ की परंपराएँ भी बहुत कुछ इसी तरह भारतीय संस्कृति के समान हैं। जिस तरह आज हमारा देश 'पुरुष प्रधान' देश कहलाता है, ठीक इसी तरह नेपाल भी पुरुष प्रधान देश है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं का सम्मान नहीं।

हमारे पहाड़ की तरह नेपाल में भी महिलाएँ इतनी सशक्त और पुरुषार्थी होती हैं कि घर-परिवार को आर्थिक रूप से सुदृढ करने के लिए स्वयं भी हाथ बढ़ाती हैं। चाहे वह हथकरघा उद्योग में हो, जड़ी-बूटी के क्षेत्र में हो,

हल चलाती नेपाली महिला

कृषि के क्षेत्र में हो या मेहनत–मजदूरी के क्षेत्र में, सभी जगह अपने परिवार के लिए मजबूत स्तंभ का कार्य करती हैं। नेपाल के राजनैतिक इतिहास में भी महिलाओं की भूमिका बड़ी सशक्त और महत्त्वपूर्ण रही है। इसका

कृषि में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती नेपाली महिलाएँ

उदाहरण नेपाल की पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती विद्या देवी भंडारी संपूर्ण मातृशक्ति के लिए मिसाल हैं। नेपाल की भारतीय महिलाओं की स्थिति हिमालय क्षेत्र के राज्यों की तरह है, जहाँ वे पारिवारिक जिम्मेवारी के साथ खेती-बाड़ी में पूरा योगदान देती हैं।

हालाँकि शिक्षा के क्षेत्र में अभी नेपाल राष्ट्र को महिलाओं की शिक्षा के लिए तेजी से प्रयास करने हैं और महिला साक्षरता प्रतिशत को बढ़ाना है, पर महिलाओं की स्थिति को लेकर कुछ भ्रांतियाँ भी समाज में हैं, जैसे हमारी सनातन संस्कृति में महिलाएँ अपने घर में सबसे अंत में भोजन करती हैं, तो कई बार यह विषय इस चर्चा को बढ़ाता है कि 'महिलाओं को बराबरी का दर्जा' प्राप्त नहीं है, क्योंकि पहले पुरुष भोजन करते हैं, फिर अंत में महिलाएँ। लेकिन मैं इससे सहमत नहीं हूँ। मेरा मानना है कि यदि हम वैदिक काल से चली आ रही परंपराओं का अवलोकन करें तो हम पाते हैं कि जब-जब इस सृष्टि पर दु:ख, संकट और निराशा के बादल मँडराते हैं, तब-तब, आगे आकर मातृशक्ति ने अपनी शक्ति का लोहा मनवाकर देव, मानव सहित संपूर्ण ब्रह्मांड को भयमुक्त किया है। चाहे देवकथाओं में वह माँ दुर्गा के अवतार रूप में हो, सतयुग में सावित्री का तप हो, द्वापर में

महिला सशक्तीकरण को समर्पित मैती आंदोलन

द्रौपदी का तेज हो या कलियुग में लक्ष्मीबाई, जीजाबाई, रानी पद्मावती से लेकर आधुनिक में कल्पना चावला, इंदिरा गांधी, सरोजिनी नायडू, प्रतिभा पाटिल से लेकर सेना के तीनों अंगों समेत, खेल, सिनेमा और अन्य सभी क्षेत्रों में महिलाओं ने अपनी प्रभावी और महत्त्वपूर्ण भूमिकाओं से उत्कृष्ट छाप छोड़ी है। ऐसे में यदि महिलाएँ अपने परिवार में भोजन अंत में ग्रहण करती हैं, तो यह उनको कमजोर बताना ठीक नहीं, बल्कि यह महिलाओं का अपने बड़े-बुजुर्गों, बच्चों, पति और अन्य लोगों के प्रति सम्मान और समर्पण के भाव का द्योतक है। इस कारण नारी का स्थान सर्वोपरि है। अपने परिवार, समाज और देश के लिए इस सीमा तक के समर्पण के कारण ही देवी-देवताओं में नारी का स्थान पहले आता है।

ऐसी ही कुछ परंपराएँ नेपाल में भी हैं। वहाँ के लोगों से बातचीत करके मालूम हुआ कि हमारे पहाड़ों की तरह नेपाल में भी पूरे घर-परिवार में नियोजन और निर्वहन की जिम्मेदारी महिलाओं पर ही है। वर्षों पूर्व की रूढ़िवादी सोच की सीमाओं को तोड़ती नेपाली नारी ने पिछले कुछ दशकों से खेल, साहित्य, फिल्मी दुनिया, राजनीति, शिक्षा आदि अन्य क्षेत्रों में भी अपनी भागीदारी बढ़ाई है।

आज स्थिति यह है कि नेपाली संसद् में 30 प्रतिशत भागीदारी महिलाओं की है, लेकिन अभी काफी कुछ विसंगतियाँ भी हैं, मसलन मजदूर वर्ग के क्षेत्र में 80 प्रतिशत महिलाएँ हैं। हालाँकि नेपाली संविधान में महिलाओं को समानता का अधिकार प्राप्त है, लेकिन व्यावहारिक रूप से ऐसा देखने में नहीं मिलता है, खास तौर से नेपाल के कुछ पिछड़े क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति अभी भी बहुत अच्छी नहीं है, यदा-कदा नारी प्रताड़नाओं की खबरें भी आती रही हैं, लेकिन मुझे भरोसा है कि शिक्षा के प्रचार-प्रसार से धीरे-धीरे इन सबका न्यूनीकरण होकर एक दिन ऐसी कुरीतियाँ खत्म होगीं। इसके लिए निश्चित रूप में सामूहिक प्रयास एवं जन-जागरण की जरूरत होगी।

चारू

चारू लोग नेपाल के पुराने बाशिंदों में से हैं। ये लोग संभवत: राजस्थान से नेपाल में आए थे। इन लोगों की पंद्रह से बीस लाख तक की जनसंख्या है। मुख्यत: इन लोगों के घर झोपड़ीनुमा होते हैं। ये घर मिट्टी के ही बने होते हैं। चारू लोग चितवन के आसपास बसे हुए हैं, हालाँकि पूरे तराई क्षेत्र में इनको देखा जा सकता है। चारू लोगों का धर्म पशु-पक्षी, जंगली जानवरों से पूर्वजों के आसपास सिमटा हुआ है। मूलत: हिंदू धर्म के अनुयायी चारू लोग जमीनदारों के यहाँ काम करते हैं। वर्ष 2000 से पूर्व यहाँ पर चारू लोग बँधुआ मजदूरों के रूप में एक सामाजिक अभिशाप झेल रहे थे। ये पीढ़ी-दर-पीढ़ी कर्जे में डूबे रहते हैं। वर्ष 2000 के बाद इनके सामाजिक, आर्थिक जीवन में बदलाव देखने को मिला है। चारू लोग चितवन पार्क और बरदिया राष्ट्रीय उद्यान में गाइड का कार्य भी करते हैं। कई पर्यटक चारू ग्रामों में ग्रामीणों के साथ उनके रीति-रिवाजों, उनकी जीवनशैली व सांस्कृतिक गतिविधियों का भरपूर आनंद लेते हैं।

बहुन और क्षेत्री

बहुन और क्षेत्री लोग नेपाल की जनसंख्या का 30 प्रतिशत से अधिक हैं। बहुन और क्षेत्री शब्द ब्राह्मण और क्षत्रिय का विकृत रूप है। ये लोग नेपाली समाज के दो महत्त्वपूर्ण स्तंभों के रूप में जाने जाते हैं। भारत की तरह ब्राह्मण और क्षत्रिय लोगों की नेपाली समाज निर्माण और उसे पुष्पित-पल्लवित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। ये लोग पृथ्वी नारायण शाह के समय से कर संग्रहण जैसे छोटे-मोटे प्रशासनिक कार्यों, साहूकार (कर्ज देनेवाले लोग) आदि के रूप में जाने जाते हैं। काठमांडू से बाहर ये लोग बड़ी संख्या में कृषि और अन्य व्यापारिक गतिविधियों में भी संलग्न हैं। ये लोग पवित्र हिंदू संस्कारों से जुड़े हुए होते हैं। ये लोग पूर्णिमा के दिन विशेष पूजा कार्यक्रम में जनेऊ धारण करते हैं।

मगर

ये लोग नेपाली जनसंख्या का लगभग 8 से 10 प्रतिशत हैं। मगर लोग मध्य और पश्चिमी नेपाल में बसे हैं। इनका मूल निवास तिब्बत, बर्मा माना जाता है। धर्म के मामले में ये हिंदू धर्म के कट्टर अनुयायी माने जाते हैं। ये लोग कृषि व्यापार से जुड़े हैं। राजा पृथ्वी शाह की सेना में ये पराक्रमी योद्धा के रूप में भी जाने जाते रहे हैं। नेपाल की एकता स्थापित करने में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान माना जाता है। मगर लोग कद-काठी से मजबूत होते हैं और बाहर से देखने में ये क्षेत्री लोगों से बिल्कुल भिन्न नहीं लगते हैं। इनके दो मंजिला भवन लाल मिट्टी से लिपे हुए विशिष्ट शैली में बने होते हैं।

गुरुंग

गुरुंग मुख्यत: मध्य नेपाल, पोखरा के आसपास बागलुंग और मेनांग के मध्य बसे हुए हैं। विश्व प्रसिद्ध अन्नपूर्णा श्रृंखलाओं की तलहटी स्थित घंडूर्क क्षेत्र में भी ये बसे हैं। पहली बार मुझे पता चला कि गुरंग की उत्पत्ति गुरुता शब्द से हुई है। गोरखा मुख्यत: पोखरा और काठमांडू के मध्य स्थित हैं। गुरुंग पश्चिमी तिब्बत के मूल बाशिंदे माने जाते हैं। गुरंग लोगों के गाँवों की विशिष्टता यह है कि यहाँ पर गाँव के मध्य एक सार्वजनिक स्थान होता है, जहाँ गाँव के युवा विभिन्न गतिविधियों में सम्मिलित होते हैं। गुरंग लोग काफी संख्या में (50,000 के करीब) पलायन कर यहाँ भारत में भी बस गए हैं। भारतीय सेना में इनकी अच्छी-खासी संख्या है। भारतीय और इंग्लैंड की सेना में शीर्ष अधिकारी के रूप में गुरुंग बड़ी संख्या में देखे जा सकते हैं।

मैथिली (जनकपुर)

जनकपुर नेपाल का प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। मिथिला राज्य की राजधानी के रूप में जनकपुर प्राचीनकाल से ही अपने वैभव, अपने धार्मिक महत्त्व, अपने पौराणिक मंदिरों के लिए विश्वविख्यात है। यह माँ सीता की जन्मस्थली मानी जाती है। रामायण की कथानुसार माता सीता के पिता महाराज जनक

जनकपुर स्थित माँ सीता का मंदिर

के नाम पर इस नगर का नाम जनकपुर रखा गया। यह शहर हिंदुओं के प्रमुख तीर्थ स्थान के रूप में विख्यात है। विशुद्ध रूप से भारतीयों के अत्यंत निकटस्थ यहाँ के लोग हिंदू धर्म को मानते हैं। भगवान् राम, शिव व विष्णु के अनुयायी ये लोग मैथिली भाषा बोलते हैं, जिसका उद्भव हिंदी से ही हुआ है। मैथिली लोग माता सीता के गृह नगर जनकपुर से ताल्लुक रखते हैं। माता सीता को मिथिला की राजकुमारी भी कहा जाता है। मैथिली लोग आज भी माँ सीता की पूजा करते हैं। जनकपुर में एक बड़ा मंदिर है। भारत से आज भी बड़ी संख्या में लोग मिथिला राजकुमारी माँ सीता के चरणों में शीश नवाने जनकपुर जाते हैं। भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने भी अपनी नेपाल यात्रा के दौरान जनकपुर की यात्रा की थी। इन लोगों का भारत के लोगों से अत्यंत निकटता का संबंध है। आज भी विवाह संबंध के लिए ये लोग भारत से जुड़े हुए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हाल की यात्रा में माँ जानकी के मंदिर में पूजा अर्चना कर भारत और नेपाल के संबंधों को और प्रगाढ़ बनाने की दिशा में सांस्कृतिक धरोहरों की महत्ता को रेखांकित किया गया।

□

6

आस्था के आधार स्तंभ पशुपतिनाथ एवं केदारनाथ

नेपाल माहात्म्य में यह उल्लेख है कि भगवान् श्री कृष्ण ने भी लंबे समय तक पशुपतिनाथ क्षेत्र में निवास किया था और गिरि श्रेष्ठ के अनुसार मणिधातु पर उन्होंने भगवान् बुद्ध का रूप धारण कर तपस्या की थी। कहते हैं कि बुद्धरूपी भगवान् श्री कृष्ण के तप के प्रभाव से ही मणिमति नदी का जन्म

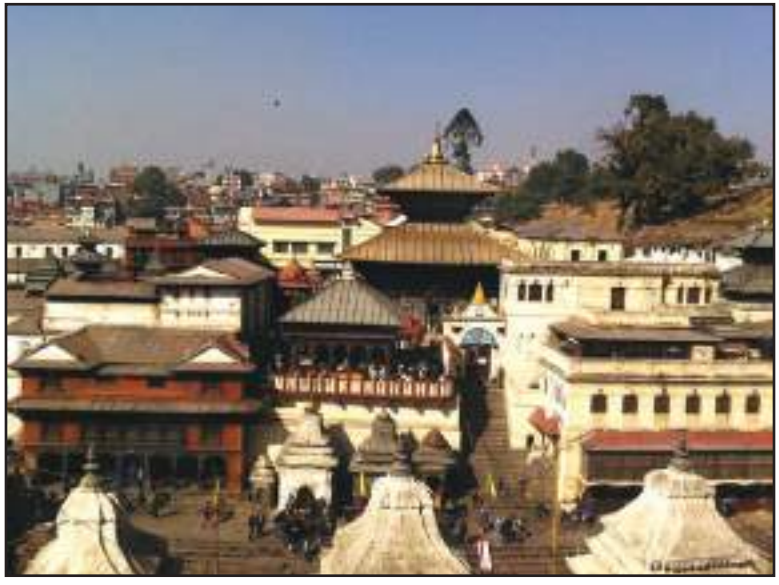

सदियों पुराना भगवान् पशुपतिनाथ परिसर

हुआ। कुल मिलाकर कहने का अभिप्राय यह है कि नेपाल एक ऐसा देश है, जहाँ बौद्ध और हिंदू धर्म दोनों एक-दूसरे में घुल मिल से गए हैं। कहा जाता है कि खुद भगवान् बुद्ध ने बागमती और मणिमती नदी के पवित्र संगम स्थल पर 'ऋषिकेश्वर' लिंग की स्थापना की थी।

बौद्ध और हिंदू दोनों धर्मों की वास्तुकला और मूर्तिकला ने एक-दूसरे को प्रभावित किया है। बौद्ध मंदिरों पर शैव धर्म की मूर्तिकला और वास्तुकला तथा शैव मंदिरों पर बौद्ध मूर्तिकला एवं वास्तुकला के दर्शन होते हैं। नेपाल एक ऐसा राष्ट्र है, जहाँ हिंदू धर्मालंबियों ने भगवान् बुद्ध को दस अवतारों में माना है।

नेपाल के अधिष्ठाता पशुपतिनाथ

नेपाल पूरे विश्व में हिंदुओं के लिए आस्था का केंद्र है। यह मंदिरों का देश है। यहाँ एक कहावत कही जाती है, 'जितने आदमी उतने मंदिर।' यहाँ हर गली में कोई-न-कोई मंदिर नजर आ जाता है। यहाँ की भूमि तपोभूमि भी कही जाती है। एक कथा के अनुसार, भगवान् शिव एक बार ब्रह्मा द्वारा रचित सुंदर वसुंधरा को देखने के लिए निकले। उन्हें नेपाल की हरी-भरी घाटी इतनी पसंद आई कि वे कैलाश पर्वत को भी भूल गए। कहते हैं उन्होंने तीन सींगवाले मृग का रूप धारण किया और घाटी की सुंदरता में खो गए। जब कई दिनों तक भगवान् शिव वापस कैलाश नहीं लौटे, तो ब्रह्मा और विष्णु दोनों परेशान हो गए। उन्हें यह डर सताने लगा कि भगवान् शंकर के बगैर सृष्टि अब कैसे चलेगी। दोनों ने उनकी तलाश शुरू कर दी, पता चला कि शिव तीन सीगोंवाले मृग के रूप में विचरण कर रहे हैं। ब्रह्मा ने मृग रूपी शिव को पकड़ने की कोशिश की, तो उनके हाथ में एक सींग आया। यह सींग तीन हिस्सों में टूट गया। इस टूटे हुए सींग का एक हिस्सा काठमांडू क्षेत्र में गिरा और यह समूचा क्षेत्र पशुपति क्षेत्र के नाम से मशहूर हुआ। बाद में भगवान् विष्णु ने पहल की और बागमती नदी के किनारे की एक पहाड़ी पर भगवान् शिव को पशु योनि से मुक्ति दिलाई, साथ ही लिंग रूप में यहाँ उनकी स्थापना

भी की। दूसरी ओर ब्रह्माजी के पास सींग का जो दूसरा भाग था, उसे उन्होंने काठमांडू से थोड़ी दूर 'गोकणेश्वर' में स्थापित किया। यहाँ आज गोकणेश्वर का मंदिर स्थित है। नेपाल के इसी गोकणेश्वर क्षेत्र में रावण ने रुककर कठोर तपस्या की थी। नेपाल माहात्म्य में एक श्लोक मिलता है—

स्थितो हं पशुरूपेण श्लेष्मान्तकवने यतः।
अतः पशुपतिलोके मम नाम भविष्यिति॥

अर्थात् इस श्लेष्मांतक वन क्षेत्र में ईश्वर मृग रूप में विचरण करते रहे हैं। अतः भविष्य में इस क्षेत्र को पशुपति के नाम से भी जाना जाएगा। एक और श्लोक नेपाल माहात्म्य में मिलता है। यह श्लोक इस प्रकार है—

ब्रह्मापि शृंगमादाय तदा दक्षिणसारणम्।
गत्वा संस्थापयामास गोकर्णेश्वरमुक्तमम्॥
अत्रेव रावणस्ते पे तपः परमदारूणम्॥

संपूर्ण नेपाल के लिए काठमांडू स्थित भगवान् पशुपतिनाथ का मंदिर श्रद्धा का मुख्य केंद्र है। यह मंदिर पैगोड़ा शैली का है। पूरा मंदिर दो मंजिला है। मुख्य मंदिर की छतें ढलान लिये हुए हैं। इनकी छतों पर चढ़ी हुई पीतल की चादरों पर सोने का पानी चढ़ा हुआ है, जो यह आभास दिलाता है कि मानो मंदिर की छतें सोने की हैं। मुख्य मंदिर के गर्भगृह में जहाँ मुख्य शिवलिंग स्थापित है, उसके चारो ओर दरवाजे हैं। मंदिर की भीतरी और बाहरी दीवारें चांदी की हैं।

काठमांडू के लगभग हर मंदिर में यहाँ की श्रेष्ठ काष्ठकला के दर्शन होते हैं। पशुपतिनाथ मंदिर में भी यह कला अपने खूबसूरत रूप में मौजूद है। मंदिर की पैगोडा शैली में निर्मित दोनों छतों पर लकड़ी का अच्छा काम देखने को मिलता है। लकड़ी के बने देवी-देवताओं और किन्नरों के चित्रों ने मंदिर की खूबसूरती में चार चाँद लगा दिए हैं। मंदिर में हनुमान, राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और युधिष्ठिर, द्रौपदी, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव की काष्ठ प्रतिमाएँ हैं। इसके अलावा, गणेश, माता पार्वती और भोलेनाथ तथा भगवान् विष्णु व कुमार की भी छह काष्ठ प्रतिमाएँ मंदिर में स्थापित हैं।

लकड़ी की बनी इन प्रतिमाओं की विशेषता यह है कि हजारों वर्ष बीत जाने पर वे आज भी खराब नहीं हुई हैं। पशुपतिनाथ मंदिर की प्राचीनता को लेकर मतभेद है। कुछ इतिहासकार इसे तीसरी ईसा पूर्व में निर्मित मानते हैं, तो कुछ इतिहासकारों का मत है कि यह मंदिर पहली शताब्दी में निर्मित हुआ था। समय-समय पर नेपाल के शासकों ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार कराया। सन् 1584-1614 के बीच नेपाल के मल्ल शासक शिवसिंह मल्ल की रानी गंगा देवी ने इसका पुनर्निर्माण कराया तथा इसमें आवश्यक सुधार भी किए। मंदिर में प्रवेश करते ही सामने की ओर पीतल से बनी विशाल नंदी की प्रतिमा का निर्माण राजा धर्मदेव ने कराया था। इसके बाद 1640 में नेपाल नरेश प्रताप मल्ल ने इस मंदिर के क्षेत्र में अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित कीं और कई छोटे-छोटे मंदिर बनवाए। इस मंदिर को हर बार की तरह फिर से सन् 1692 में पूरी तरह से सजाया-सँवारा गया, क्योंकि मंदिर के लकड़ी से बने एक बड़े भाग को दीमक खराब कर गई थी। इसके अलावा चंद्र शमशेर और शाह वंश के शासकों की भी भगवान् पशुपतिनाथ के मंदिर से अटूट श्रृद्धा रही। इन लोगों द्वारा मंदिर का पूरा खयाल रखा गया। मंदिर में पवित्र शिवलिंग के दक्षिण मुख की ओर नेपाल नरेश महेंद्र वीर विक्रम शाह की पीतल की एक मूर्ति स्थापित है। कुछ साल पहले मंदिर के मुख्य द्वार की दाईं ओर जगद्गुरु शंकराचार्य का मंदिर भी निर्मित करवाया गया है।

पशुपतिनाथ मंदिर का उल्लेख तो 'शिव पुराण' में भी मिलता है। पशुपतिनाथ मंदिर में स्थापित शिवलिंग पंचमुखी है। यह पंचमुखी शिवलिंग चमकदार काले पत्थर का है, जिसकी ऊँचाई लगभग एक मीटर है। इस पंचमुखी लिंग के भूमि से प्राप्त होने पर एक कहावत भी प्रचलित है। कहते हैं, ब्राह्मण नित्यानंद की गाय सुबह-सुबह जब चरने के लिए गौशाला से निकलती थी, तो वह पहले सीधे एक उभरे हुए टीले पर जाकर खड़ी हो जाती थी। इस गाय के वहाँ खड़े होते ही उसके थनों से खुद ही दूध प्रवाहित होने लगता था। नित्यानंद परेशान हुआ कि आखिर गाय का दूध कौन दुह लेता है। एक दिन वह गाय के पीछे-पीछे गया, तो देखा कि उसकी गाय एक उभरे

हुए टीले पर खड़ी है और उसका दूध अपने आप गिर रहा है। यह देखकर नित्यानंद आश्चर्यचकित हुआ। उसी रात उसे स्वप्न में भगवान् शिव के दर्शन हुए। उसने स्वप्न से प्रेरित होकर उक्त स्थान की खुदाई कराई, तो उसे वहाँ शिवलिंग प्राप्त हुआ। इस शिवलिंग के पाँच मुख क्रमशः उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में हैं तथा पाँचवाँ मुख ऊपर की ओर है। इन मुखों को क्रमशः सद्योजात, वामदेव, अघोर और तत्पुरुष एवं पाँचवाँ मुख ईशान कहलाता है। इस मुख की महिमा को योगी भी नहीं जानते हैं। भगवान् पशुपतिनाथ मंदिर की चारों दिशाओं में जो मुख बने हैं, उसमें एक ओर 16 मणिका की रुद्राक्ष माला व एक ओर कमंडल है। इन अलग-अलग मुखों की अलग-अलग महत्ता है। इन सभी मुखों की पूजा करते हुए ईश्वर से प्रार्थना और कामना की जाती है कि शिव, आप हर दिशा (उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम) में मेरी रक्षा करें। मेरी शक्ति बनें। मुझे ऊर्जा और तेज प्रदान करें। लिंग का ऊपर का भाग, जिसे पाँचवाँ मुख (ईशान) कहा जाता है, इसकी पूजा-अर्चना शक्ति, दृढता, ज्ञान और वैभव के लिए की जाती है।

पशुपतिनाथ मंदिर में पूजा-अर्चना

पशुपतिनाथ मंदिर के प्रवेश द्वार पर ही हिदायत दी गई है कि केवल हिंदू ही प्रवेश कर सकते हैं। मंदिर के अहाते में एक ओर कीर्ति भैरव और शीतला माता का मंदिर है। भगवान् पशुपतिनाथ का अभिषेक बागमती के जल से किया जाता है। शिवरात्रि में इस मंदिर में हजारों की संख्या में देश-विदेश से लोग पूजा-अर्चना करने आते हैं। भारत में जिस तरह से शिव मंदिरों में बेलपत्र, धतूरे के फूल और बेर आदि चढ़ाए जाते हैं, शिवलिंग को दूध से नहलाते हैं या जल चढ़ाते हैं, ठीक उसी तरह से यहाँ पशुपतिनाथ मंदिर में भी पूजा-अर्चना की जाती है।

पशुपतिनाथ मंदिर में पंचामृत, जिसमें शहद, दूध, चीनी, घी और दही का मिश्रण होता है, से भी स्नान कराने की परंपरा है। इसके अलावा, बेल पत्रों आदि के साथ लोग रुद्राक्ष माला भी चढ़ाते हैं। पशुपतिनाथ मंदिर में सबसे

पशुपतिनाथ मंदिर का रात्रि दृश्य

पहले भक्तों को वासुकी भगवान् के दर्शन करने चाहिए।

लगभग 12 बजे पंचमुखी शिवलिंग का पंचामृत अभिषेक होता है। रुद्र पाठ भी होता है। देश-विदेश के श्रद्धालु लोग इस दौरान दक्षिणा जमा करवाकर रुद्राभिषेक संपन्न करते हैं। इसके बाद लिंग का विधिवत शृंगार किया जाता है। चारों मुखों पर स्वर्ण और चांदी के मुकुट रखे जाते हैं। इसके अलावा ऊपरी भाग को सोने के छत्र से सुसज्जित किया जाता है। लिंग के ऊपरी भाग, जिसे 'ईशान' कहते हैं, उस पर चंदन से श्रीयंत्र निर्मित किया जाता है और डेढ़ बजे आरती होती है। इसके बाद किसी ब्राह्मण के हाथ के बने हुए भोजन, जिसमें खीर, चावल, हलुआ, दाल व सब्जी होती है, का भोग लगाया जाता है। इसके बाद मंदिर के कपाट बंद कर दिए जाते हैं। शाम 7 से 8 बजे के मध्य फिर से भगवान् पशुपतिनाथ की आरती होती है।

मान्यता है, भगवान् पशुपतिनाथ मंदिर के पुजारी की नियुक्ति के नियम भी भगवान् शंकराचार्य द्वारा बनाए गए थे। कहते हैं शंकराचार्य जिस समय नेपाल गए, वहाँ पर ठकुरी वंश के राजा शिव देव का शासन होता था। उसके शासनकाल में बौद्ध धर्म चरम पर था और हिंदुओं के बड़ी संख्या

में बौद्ध धर्म ग्रहण करने से अव्यवस्था सी पैदा हो गई। शंकराचार्य ने बौद्धों से शास्त्रार्थ किया और उनकी विद्वत्ता के समक्ष वे नतमस्तक हो गए। इस घटना का प्रभाव यह रहा कि बड़ी संख्या में हिंदू लोग, जो बौद्ध बन गए थे, वे वापस मुख्यधारा में लौट गए।

केदारनाथ और भगवान् पशुपतिनाथ के विषय में मान्यता है कि इन मंदिरों में जाने का परम पुण्य प्राप्त होता है, इसलिए चारधाम यात्रा के शैव-भक्तों के लिए ये परम श्रद्धा के केंद्र हैं। ये मंदिर भारत और नेपाल के मध्य आध्यात्मिक, धार्मिक कड़ी को भी जोड़ते हैं।

भगवान् शंकराचार्य ने यह व्यवस्था की कि पशुपतिनाथ की पूजा-अर्चना दक्षिण भारत के पुजारी करेंगे। बद्रीनाथ एवं केदारनाथ के पुजारियों की नियुक्ति भी दक्षिण भारत से ही की जाती है। दक्षिण भारतीयों को उत्तर भारत के मंदिरों में पुजारी नियुक्त करने के पीछे की दूर दृष्टि आज भी कितनी महत्त्वपूर्ण है, इससे हम सभी परिचित हैं। पूजा के लिए जो भट्ट पुजारी होते हैं, वे सभी दक्षिण भारत से आते हैं। भगवान् शंकर के शिवलिंग के चारों मुखों की ओर एक-एक पुजारी रहता है, जो भट्ट कहलाता है। पुजारी की नियुक्ति से पूर्व उसकी कठिन परीक्षा होती है। उसे धर्म, कर्मकांड में पारंगत होने के अलावा हिंदू धार्मिक ग्रंथों का अच्छा ज्ञान व स्पष्ट मंत्रोच्चार में निपुण होना आवश्यक है। मंदिर में भगवान् का शृंगार और पूजा-अर्चना के लिए नेपाली पुजारी भी होते हैं, इन्हें भंडारी कहा जाता है, लेकिन ये लोग मुख्य शिवलिंग को स्पर्श नहीं कर सकते। पुराने समय में भट्ट एवं भंडारियों को वेतनादि नहीं मिलता था। वेतन के रूप में धान की व्यवस्था की जाती थी। इसके अलावा नकद चढ़ाई जानेवाली भेंट को तीन भागों में विभक्त किया जाता था। एक भाग भंडारियों को दिया जाता है, जिसे भंडारी आपस में वितरित करते हैं। शेष दो तिहाई भाग भट्ट लोग आपस में बाँटते हैं। मुख्य भट्ट को 'रावल' भी कहते हैं और यही परंपरा बद्रीनाथ, केदारनाथ में भी चली आ रही है।

भगवान् केदार की महिमा

हिमालय की केदारनाथ पर्वत शृंखलाओं में स्थित भगवान् केदारनाथ का मंदिर अपनी भव्य छटा बिखेरते हुए साक्षात् शिव के ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थापित है। यह ज्योतिर्लिंग 3584 मीटर की ऊँचाई पर आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित किया गया था। मंदाकिनी नदी के तट पर स्थित भगवान् शंकर का यह

केदारनाथ मंदिर में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी

मंदिर विश्व के प्राचीनतम मंदिरों में से है। भगवान् पशुपतिनाथ के मंदिर की भाँति नंदी बैल भी यहाँ पर रक्षक के रूप में स्थित है। 1500 साल से अधिक पुराने इस मंदिर में चतुर्भुजाकार मंच का निर्माण किया गया है, जिस पर भारी पत्थरों को काटकर भव्य मंदिर का निर्माण किया गया है। पशुपतिनाथ मंदिर हो या केदारनाथ-बदरीनाथ का मंदिर या फिर कोई और पौराणिक मंदिर, सबको देखकर मन में यह प्रश्न उठता है कि उस दौर में, जब हमारे पास क्रेन, बुलडोजर जैसे उन्नत किस्म के उपकरण नहीं थे, निर्माण कला के क्षेत्र में आधुनिक प्रौद्योगिकी व ज्ञान उपलब्ध नहीं था तो हमने कैसे इन मजबूत मंदिरों का निर्माण किया, एक ऐसा निर्माण, जो युगों-युगों से पूरी मानवता को प्रेरित कर रहा है। इन सब बातों से दो चीजें बिल्कुल स्पष्ट हैं और मैं इसको प्रमाण के रूप में भी देखता हूँ कि उस समय का हमारा ज्ञान-विज्ञान,

पारंपरिक परिधान में पूजा-अर्चना करती नेपाली महिलाएँ

हमारी प्रौद्योगिकी आज से कहीं ज्यादा विकसित थी। चाहे वह भवन निर्माण, स्थापत्य का क्षेत्र रहा हो, बड़े-बड़े पत्थरों के परिवहन में प्रयोग की जानेवाली प्रौद्योगिकी हो या फिर अभियांत्रिकी की कोई और विधा हो, सब क्षेत्रों में पुरातन ज्ञान हमारी आज की उपलब्धियों से सर्वश्रेष्ठ था। इतने ऊँचे पहाड़ों पर भवन निर्माण की पराकाष्ठा को छूना स्वप्न सा लगता है। इसके अतिरिक्त, मुझे इन सब अद्‌भुत निर्माण के पीछे एक दैवीय शक्ति का हाथ लगता है, जो स्वत: ही सब कार्य अपने आप पूरा कराती है।

केदारनाथ मंदिर के अंदर गर्भगृह है, जहाँ भगवान् की पूजा-अर्चना की जाती है। लोक कथाओं के अनुसार कुरुक्षेत्र के युद्ध के उपरांत पांडव अपने पापों के प्रायश्चित् के लिए इस मंदिर में आए थे और उन्होंने पूजा-अर्चना की थी। जनश्रुति के अनुसार, पांडव अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए भगवान् शंकर को ढूँढ़ते हुए यहाँ पर आए थे। उनसे बचने के लिए भगवान् ने पशु (भैंस) के रूप में अपने को परिवर्तित कर दिया। भीम ने किसी तरह से भगवान् को पहचान लिया। भगवान् धरती में समा ही रहे थे कि भीम ने पीछे से उन्हें पकड़ लिया। ऐसा माना जाता है कि भगवान् का मुखवाला भाग

पशुपतिनाथ मंदिर का विहंगम दृश्य

पशुपतिनाथ में प्रकट हो गया, जबकि पिछला भाग आज भी केदारनाथ में शिला के रूप में स्थित है। इस तरह जनमानस में एक अभिन्न जुड़ाव है, इन दो पावन मंदिरों को लेकर। यही वजह है प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में भारत से हिंदू धर्मावलंबी भगवान् पशुपतिनाथ के दर्शन करने नेपाल जाते हैं, तो लाखों नेपाली श्रद्धालु केदारनाथ शीश नवाने पहुँचते हैं।

पशुपति के आस-पास जागेश्वर की याद ताजा

यह मेरा परम् सौभाग्य है कि मुझे भगवान् पशुपतिनाथ के संपूर्ण परिसर के दर्शन वहाँ के पीठाधीश्वर के साथ करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भगवान् पशुपतिनाथ मंदिर प्रांगण में कई मंदिर स्थित हैं। यहाँ आकर मुझे अपने उत्तराखंड स्थित जागेश्वर मंदिरों का स्मरण हो आया। जागेश्वर मंदिर की तरह पशुपतिनाथ के परिसर में विभिन्न देवी-देवताओं के मंदिर स्थित हैं। केंद्र में भगवान् पशुपतिनाथ विराजमान हैं। उस परिसर के समस्त अधिष्ठाता देव, भगवान् पशुपतिनाथ को अपना प्रणाम कर रहे हैं। भगवान् पशुपतिनाथ मंदिर के ठीक पीछे प्रवाहित होती बागमती नदी का पवित्र घाट है। नेपाली लोगों के बीच बागमती का वही महत्त्व है, जो हमारे यहाँ पर पावन गंगा का है। इस

नदी के तट पर नेपाल के हिंदू अंतिम संस्कार किया करते हैं। ऐसी मान्यता है कि इस गंगा सदृश नदी के किनारे अंतिम संस्कार अत्यंत पुण्यकारी है। ठीक हमारी पद्धति के अनुसार ही यहाँ भी मृत शरीर को पवित्र नदी में स्नान कराया जाता है और फिर गौ-दान करके दाह संस्कार किया जाता है। मुझे यह जानकर काफी अच्छा लगा कि मेरे मित्र उपेंद्र महतो ने यहाँ पर श्मशान घाट का निर्माण कराया है।

भगवान् पशुपतिनाथ से कुछ ऊँचाई पर भगवान् वासुकी का मंदिर स्थित है। पैगोडा शैली में निर्मित यह मंदिर उत्तराखंड की पूजा-पद्धति के काफी करीब है। उत्तराखंड की भाँति नेपाल में भी नागों की बड़ी श्रद्धा से पूजा होती है। नाग पंचमी के दिन बहुत श्रद्धापूर्वक नेपाली लोग पूजा-अर्चना में हिस्सा लेते हैं। मंदिर के पश्चिम में तांडव शिव मंदिर स्थित है। कीर्ति मुख भैरव मंदिर और कृष्ण भगवान् का मंदिर भी इस प्रांगण में स्थित है। पशुपतिनाथ मंदिर के दक्षिणी छोर पर चौंसठ लिंगों के आकर्षक मंदिर हैं। यहाँ पाँच सौ लिंगों की स्थापना भी की गई है। ऐसा माना जाता है कि इनकी परिक्रमा करनेवाला 84 लाख योनियों से मुक्ति पा जाता है।

पशुपतिनाथ के दक्षिण द्वार में उन्मत्त भैंरों की मूर्ति है। यह भगवान् भैरव का क्रोधित रूप है। शासक नरसिंह मल्ल से इस मंदिर की मरम्मत कराई गई थी और उक्त मूर्ति की स्थापना भी उन्होंने ही की थी। भगवान् पशुपतिनाथ के मंदिर के आसपास सभी मंदिरों में चहल-पहल रहती है। अपने पारंपरिक परिधान में लोग श्रद्धापूर्वक पूजा-अर्चना में सुबह 4-5 बजे से लग जाते हैं और सायं की आरती तक यह क्रम जारी रहता है। पावन मंदिर परिसर में धार्मिक माहौल में टोलियाँ हिंदी-नेपाली में अपने वाद्ययंत्रों के साथ भगवान् की स्तुति गाते हैं। ये लोग जगह-जगह से आकर अपने आराध्य देवों की स्तुति कर घर परिवार की कुशलता और उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए आभार प्रकट करते हैं।

□

7

नेपाली भाषा : नेपाल का प्राण

नेपाल सांस्कृतिक रूप से अत्यंत विविध देश होने के साथ-साथ भाषाओं के मामले में भी अत्यंत समृद्ध है। देखा जाए तो ये भाषाएँ आर्यन, तिब्बती, बर्मी, मंगोलिया एवं स्थानीय स्रोतों के आधार पर चार वर्गों में विभक्त की जा सकती हैं। नेपाल में 2001 की जनगणना के अनुसार 92 भाषाएँ बोली जाती हैं। अगर प्रतिशत के हिसाब से देखा जाए, तो 57 प्रतिशत लोग नेपाली, 10 प्रतिशत मैथिली, 7 प्रतिशत भोजपुरी, 4 प्रतिशत थारू, 5 प्रतिशत तमाँग, 3 प्रतिशत नेपाल भाषा या नेवाड़ी, 2 प्रतिशत मगर, 2 प्रतिशत अवधी, 2.79

नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान

प्रतिशत लिंबू, एक प्रतिशत बजिका तथा बाकी 81 भाषाएँ एक प्रतिशत से कम जनसंख्या द्वारा बोली जाती हैं। नेपाल के नियमों में यह प्रावधान है कि सभी भाषाओं का उपयोग आधिकारिक रूप से किया जा सकता है, हालाँकि नेपाली एवं अंग्रेजी का अधिक-से-अधिक प्रयोग किया जाता है।

संस्कृत भाषा से निकली हुई नेपाली भाषा पूरे नेपाल को एक सूत्र में बाँधने का कार्य करती है। देवनागरी लिपि होने के कारण इसमें संस्कृत-हिंदी के कई शब्द समाहित हैं।

नेपाल का तराई का क्षेत्र अवधी, भोजपुरी, मैथिली भाषा का प्रयोग करता है, जबकि पोखरा, काठमांडू जैसे महानगरों में आप नेपाली हिंदी, अंग्रेजी भाषा बोलकर आसान से काम चला सकते हैं।

समृद्धि व सम्मान की दरकार

नेपाली या खस कुरा नेपाल की राष्ट्रभाषा है। यह भाषा नेपाल की लगभग 44 प्रतिशत लोगों की मातृभाषा भी है। यह भाषा नेपाल के अतिरिक्त भारत के सिक्किम, पश्चिम बंगाल, उत्तर-पूर्वी राज्यों (असम, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश मेघालय) तथा उत्तराखंड के अनेक भारतीय लोगों की मातृभाषा है। भूटान, तिब्बत और म्यांमार के भी अनेक लोग यह भाषा बोलते हैं।

नेपाली साहित्य के आदिकवि भानुमुक्त आचार्य हैं। इस भाषा के महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा हैं। इस भाषा के प्रमुख लेखकों में मुख्य हैं—

1. बालकृष्ण सम, 2. सिद्धिचरण श्रेष्ठ, 3. विश्वेश्वर प्रसार कोईराला, 4. लेखनाथ पौडवाल, 5. माधव प्रसाद घिमिरे, 6. बैरागी कॉइला, 7. लीलबहादुर क्षत्री 8. परशु प्रधान, 9. बानिरा गिरी, 10. गोविंद गोठाले, 11. तारानाथ शर्मा, 12. सरूभक्त, 13. पारिजात, 14. इंद्रबहादुर राई, 15. मोतिराम भट्ट।

नेपाल के अधिकांश क्षेत्र में हिंदी स्थानीय भाषा की तरह बोली जाती है और बहुसंख्य लोग नेपाली और नेपाली के साथ हिंदी बोल या समझ सकते हैं। इसके बावजूद हिंदी का विकास यहाँ मात्र एक बोलचाल की भाषा के रूप में ही सीमित रहा है। मेरा यह भी मानना है कि ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, संस्कृति

और कला की समृद्ध भाषा के रूप में जो सम्मान नेपाली भाषा को मिलना चाहिए था, वह अभी तक नहीं मिल पाया है।

एक लंबे समय तक नेपाली साहित्य पर हिंदी पूरी तरह से काबिज रही। शशिधर सच्चिदानंद और संत अभयानंद जैसी हस्तियों ने हिंदी को ही अपने भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। 19वीं शताब्दी में पं. वाणि विलास पांडेय ने संस्कृति और हिंदी में रचनाएँ लिखी। पं. विद्यारण्य केसरी ने हिंदी और नेपाली में 'द्रौपदी स्तुति' और 'गोपिका स्तुति' की रचना की। महाराजा रण बहादुर शाह के दरबारी कवि सुंश ने ब्रजभाषा में 'श्रृंगार चूड़ामणि' की रचना की थी। नेपाल के राजकीय अभिलेखागार में 'अर्थालंकार' और 'रस तरंगिणी' जैसे अलंकार ग्रंथ सुरक्षित हैं।

यदि यह कहा जाए कि नेपाली भाषा और नेपाली साहित्य आज जिस समृद्ध और सशक्त अवस्था में विद्यमान हैं, उसमें हिंदी भाषा और हिंदी के साहित्यकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान है, तो यह कदापि गलत नहीं होगा। नेपाल के कई पुराने कवियों के प्रेरणा स्रोत महाकवि तुलसी, कृष्णभक्त सूरदास, प्रेम दीवानी मीरा, कालिदास, बिहारी और रसखान तो रहे ही, भारतेंदु हरिश्चंद्र, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा जैसी साहित्यिक विभूतियों ने भी नेपाल के साहित्यकारों को नई दिशा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। नेपाली कवियों की रचनाओं में यह प्रभाव साफ देखा जा सकता है। नेपाल के दर्जनों पुराने कवियों ने नेपाली और हिंदी, दोनों में ही रचनाएँ लिखीं। उस समय नेपाली को भाषा और हिंदी को पक्की या खड़ी बोली के नाम से जाना जाता है।

मेरा मानना है हिंदी नेपाली की बड़ी बहन है। नेपाल में जहाँ हिंदी भाषा के प्रति अनुराग है, वहीं कुछ क्षेत्र में हिंदी का विरोध भी हुआ और उसे एक विदेशी भाषा घोषित करने का काम पंचायती राज में शुरू हुआ। नेपाली पंचायती सरकार ने एक नारा दिया था 'एक राजा–एक देश, एक भाषा–एक भेष'। राणा शासन भारत से चिढ़ा बैठा था, क्योंकि उसके शासनकाल में आजादी का स्वर मुखर करना यानी मौत को आमंत्रित करना था। इस दौरान हिंदी के विरुद्ध एक अभियान चलाने का प्रयास किया गया।

नेपाली भाषा न केवल नेपाल में, बल्कि भारत में भी अत्यंत लोकप्रिय है। भाषा और संस्कृति के लिहाज से अपार विविधता समेटे भारत में नेपाली बोलनेवाले भारतीयों की संख्या लगभग एक करोड़ है। नेपाली भाषा से भारतीयों का लगाव बराबर बना हुआ है। वे नियमित रूप से भारत के अलग-अलग हिस्सों में नेपाली साहित्य और संस्कृति से जुड़े कार्यक्रमों का आयोजन कराते रहते हैं। मुझे याद है कि नेपाल के पहले कवि यानी आदि कवि भानु भक्त आचार्य की जयंती के अवसर पर दिल्ली में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। आचार्य भानु ने अपने साहित्य से नेपाली भाषा को लोकप्रिय बनाया, साथ ही उन्होंने रामायण जैसे हिंदू महाकाव्य का नेपाली भाषा में अनुवाद भी किया। मुझे इस बात की अत्यंत प्रसन्नता हुई कि नई दिल्ली में आचार्य भानु की जयंती पर हुए कार्यक्रम में न सिर्फ उनकी कविताओं का पाठ किया गया, बल्कि उनके साहित्य पर भी चर्चा हुई। ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से जहाँ भाषा उन्नयन को बढ़ावा मिलता है, वहीं नवोदित साहित्यकारों को उभरने का एक मंच भी मिलता है।

भारत में नेपाली

सिक्किम, पश्चिम बंगाल का पर्वतीय क्षेत्र, उत्तर प्रदेश, हिमाचल, उत्तराखंड के नेपाली बाहुल्य क्षेत्रों में नेपाली बोली जाती है। इसके अतिरिक्त विभिन्न राज्यों में नेपाली मूल के लोग नेपाली का प्रयोग करते हैं। नेपालीभाषी भारतीय समुदाय का मानना है कि इस भाषा को सिर्फ भौगोलिक और राजनीतिक पहचान तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए। भारत में रहनेवाले नेपालीभाषी लोगों के सबसे बड़े संगठनों में से एक नेपाली सम्मेलन के पूर्व महासचिव विष्णु बहादुर गुरंग का कहना है कि 'नेपाली भाषा के दायरे में वे सभी लोग आने चाहिए, जो नेपाली भाषा बोलते हैं और नेपाली संस्कृति को मानते हैं।' ऐसा व्यक्ति नेपाल या भारत या अमेरिका, कहीं का भी नागरिक हो सकता है।

संवैधानिक भाषाओं में एक

नेपाली भी उन भाषाओं में शामिल है, जिन्हें भारतीय संविधान में मान्यता दी गई है। वह संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं में से एक है। इस भाषा को भारतीय संविधान में मान्यता दिए जाने का मतलब है कि यहाँ इस भाषा का समृद्ध साहित्यिक अस्तित्व मौजूद है।

नेपाली साहित्य; खासकर दार्जिलिंग और सिक्किम सहित उत्तर भारत में फल-फूल रहा है। नेपाली में बहुत सारे प्रकाशन हैं। सिक्किम के मुख्यमंत्री पवन चामलिंग खुद नेपाली भाषा के एक जाने-माने लेखक हैं। वे 'निर्माण प्रकाशन' भी चलाते हैं, जो नेपाली साहित्य प्रकाशित करता है।

हर साल भारत की राष्ट्रीय साहित्य अकादमी जिन कई भारतीय भाषाओं में अमूल्य साहित्यिक योगदान देनेवाले लेखकों को सम्मानित करती है, उनमें नेपाली भाषा के लेखक भी शामिल हैं। ऑल इंडिया रेडियो भी दिन में तीन बार नेपाली में एक-एक घंटे का कार्यक्रम प्रसारित करता है। इन कार्यक्रमों में नेपाली भाषा में समाचार, गीत और नाटक प्रसारित होते हैं।

भारत के नेपाली रचनाकार पद्मश्री सानु लामा मानते हैं कि नेपाली भाषा साहित्य और संस्कृति दुनिया भर में रहनेवाले नेपाली लोगों को जोड़ती है। इसे बचाने और विकसित करने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए। नेपालीभाषी समुदाय महसूस करता है कि नेपाली साहित्य और साहित्य के संरक्षण और विकास के लिए कदम उठाए जाने चाहिए। सानुलामा कहते हैं, 'नेपाली भाषा, साहित्य और संस्कृति दुनियाभर में रहनेवाले नेपाली लोगों को जोड़ते हैं। इसे बचाने और विकसित करने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए।'

भारत-नेपाल को जोड़ती नेपाली भाषा

अगर भारत में नेपालियों की बात की जाए, तो सभी नेपाली बोलते हैं; परंतु भारत में दो तरह के नेपाली भाषा समुदाय हैं। पहले वे जो भारतीय नागरिक हैं और देश के उत्तरी और पूर्वोत्तर इलाके में रहते हैं। इनकी संख्या एक करोड़ के आसपास बताई जाती है। लाखों लोगों द्वारा दोनों देशों में घर

बनाया गया है, ऐसी स्थिति में संख्या का ठीक से अनुमान लगाना कठिन है।

दूसरा समुदाय उन लोगों का है, जो मूलत: नेपाली नागरिक हैं और काम की तलाश में भारत में आ गए हैं। ऐसे लोगों की संख्या 20 लाख से 50 लाख के आसपास बताई जाती है। ये दोनों समुदाय भौगोलिक और राजनीतिक पहचान के लिहाज से बँटे हुए हैं, लेकिन उनकी भाषा और संस्कृति उन्हें एक बनाती है। देश के विभिन्न भागों में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जहाँ नेपाली भाषा, नेपाली संस्कृति, नेपाली कला सबको एकसूत्र में पिरोती नजर आती है।

नेपाल में हिंदी

नेपाल विश्व का एकमात्र ऐसा देश है, जिसे हिंदू राष्ट्र होने का गौरव प्राप्त था। हिंदुस्तान के बाद किसी देश में सबसे अधिक हिंदी बोलने, समझने और लिखने वाले लोग हैं, तो वह नेपाल राष्ट्र ही है। नेपाली राष्ट्र के संविधान में हालाँकि हिंदी को मान्यता नहीं दी गई है, लेकिन यह सच्चाई है कि नेपाल के संपूर्ण तराई क्षेत्र से लेकर पहाड़ी क्षेत्र तक में हिंदी को लोग बेहतर समझते हैं और बोलते भी हैं।

यदि नेपाल की भाषा और ऐतिहासिकता की बात की जाए तो यह कहा जा सकता है कि नेपाल की प्राचीनकाल में कोई भाषा नहीं थी। शिक्षा और संस्कृति की भाषा संस्कृत थी। करीब एक हजार साल पीछे चलें तो नेपाल के नाथ योगियों और संतों ने जिस अपभ्रंश भाषा का इस्तेमाल अपनी रचनाओं में किया, उसे लोग हिंदी का ही बाल्य रूप स्वीकार करते हैं। इस अपभ्रंश भाषा की रचनाएँ काठमांडू उपत्यका में 'चर्या व चचा' के नाम से प्रसिद्ध है। मध्ययुग में काठमांडू उपत्यका में नेवारी के साथ-साथ मैथिली, ब्रजभाषा, हिंदी और उसके बाहर पश्चिमी व पूर्वी तराई क्षेत्रों में क्रमश: भोजपुरी, मैथिली, अवधी, भोजपुरी एवं हिंदी व ब्रजभाषा का प्रयोग होता था। सन् 1646 में जनकपुर धाम के महात्मा सूर किशोर दास ने 'मिथिला विहास' और इसके बाद 1768 में श्री पृथ्वी नारायण शाह ने भी हिंदी भाषा को पूरा सम्मान दिया।

सन् 1768 में पृथ्वीनारायण शाह द्वारा नेपाल राष्ट्र की स्थापना के पश्चात् तमाम प्रशासनिक कामकाज हिंदी में ही निपटाए जाते थे। इसका प्रमाण नेपाल सरकार द्वारा प्रकाशित पत्र-संग्रह से भी मिलता है। नेपाली शाह शासकों के हृदय में हिंदी के प्रति एक अनुराग था। पृथ्वी नारायण शाह, रणबहादुर शाह और राजा राजेंद्र के मझले पुत्र उपेंद्र विक्रम शाह ने खुद ही हिंदी भाषा को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाया। हिंदी नेपाल में कितनी पुरानी और गहरी पैठ रखती है, इसका उदाहरण 'वर्णरत्नाकार' नामक एक कृति है। इसे हिंदी के आदिकाल की कृति माना जाता है। इसकी रचना नेपाल में ही हुई थी, ऐसा मानते हैं। 'वर्णरत्नाकार' की रचना 1298-1324 ई. के मध्य मानी जाती है। नेपाल के तराई प्रदेश के सिमरौनगढ़ के मैथिल राजा हरिसिंह देव का इस अवधि में शासन था। उनके दरबार में ज्योतिरीश्वर ठाकुर नामक एक राष्ट्रकवि थे। ठाकुर द्वारा ही यह रचना लिखी गई। गद्य साहित्य में इसे प्रथम ग्रंथ स्वीकार किया गया है। यह ग्रंथ मूलत: मैथिली भाषा में है, लेकिन भोजपुरी का पुट भी इसमें नजर आता है।

हिंदी, भोजपुरी तथा संस्कृत के मनीषी एवं लेखक पं. दीप नारायण मिश्रा ने 2050 में नेपाल हिंदी साहित्य परिषद् का गठन किया तथा यह संस्था सतत रूप से हिंदी के विकास के लिए काम कर रही है। इस संस्था का औपचारिक पंजीकरण 2058 साल वैसाख 2 गते के दिन संपन्न हुआ था। इस संस्था का मूल उद्देश्य हिंदी के उन्नयन हेतु कार्य करना है।

नेपाल की अधिकांश भाषाएँ देवनागरी लिपि का ही प्रयोग करती हैं। इस नाते सभी भाषाओं के बीच मधुर संबंध सेतु बनाने की आवश्यकता है। सभी भाषाएँ परस्पर सहयोग से ही विकसित हो सकती हैं। हिंदी अपनी भाषिक विशेषताओं, सरलता, सहजता, शाब्दिक उदारता और साहित्यिक समृद्धि के कारण सारे विश्व में निरंतर लोकप्रिय हो रही है। हिंदी की इस व्यापकता और विशालता के पीछे विश्वभर में फैले हिंदी भाषियों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। विश्व का शायद ही कोई देश हो, जहाँ कोई हिंदीभाषी या हिंदी प्रेमी न हो। हिंदी सही मायने में विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है, लेकिन यह यात्रा

चुनौतियों से भरी है। मौजूदा चुनौतियों का व्यावहारिक समाधान ढूँढ़ने तथा समय सापेक्ष गतिशीलता एवं विकास के लिए नेपाल हिंदी साहित्य परिषद् कृतसंकल्प है। हिंदी के विकास, हिंदी की लोकप्रियता बढ़ाने हेतु यह साहित्य परिषद् कई कार्यक्रम आयोजित करती है, उदाहरण के लिए—तुलसी जयंती एवं बुद्ध जयंती के अवसर पर प्रवचन एवं कवि गोष्ठी का आयोजन, सूरदास एवं मीरा जयंती के अवसर पर कार्यक्रम, होली के अवसर पर बसंतोत्सव, नेपाल एवं सीमावर्ती क्षेत्र के हिंदी साहित्यकारों को सम्मानित करना आदि।

कुल मिलाकर देखा जाए तो हिंदी और नेपाली दोनों बहनें हैं, जो नेपाल और भारत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर रही हैं। दोनों भाषाएँ एक लिपि का उपयोग करती हैं और दोनों का मूल संस्कृत है। विश्व के किसी अन्य देश के साथ हमारी राष्ट्रभाषा का अनूठा संबंध नहीं हो सकता।

□

8

त्योहारों का देश-नेपाल

नेपाल नैसर्गिक सौंदर्य के साथ भारत की तरह सभी धर्मों को समुचित आदर देनेवाला अत्यंत सहनशील सहिष्णु राष्ट्र है। नेपाल के लोगों में सभी धर्मों के रीति-रिवाजों का सम्मान करते हुए सभी त्योहारों को हर्षोल्लास से मनाए जाने की परंपरा है। नेपाल के त्योहारों में मुख्य त्योहार इस तरह हैं—

दसई

दसई यानी दशहरा या विजयदशमी त्योहार नेपाल का सबसे बड़ा त्योहार है। दसई 'दसवीं' का अपभ्रंश रूप है। यह त्योहार 10 दिनों तक मनाया जाता है। इन दस दिनों में सभी हिंदू त्योहार दुर्गा पूजा, अष्टमी, नवमी, दशहरा आदि बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। संपूर्ण देश में लोग अपने परिवारवालों के साथ एकत्रित होकर अपने मूल स्थानों पर यह त्योहार परंपरागत तरीके से मनाते हैं। नवरात्र के दिनों में अलग-अलग स्थानों में जलाशयों में स्नान कर पूजा-अर्चना करते हैं। इस अवसर पर देवी भागवत का भव्य आयोजन भी विभिन्न पूजा स्थलों में किया जाता है। इन त्योहारों में सभी रीति-रिवाज हमारी तरह ही हैं। देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है, जो इस प्रकार है, कुमारी, त्रिमूर्ति, कल्याणी, भुवनेश्वरी, मोहिनी, कालिका, चंडिका, संभवी, दुर्गा, एवं सुभद्रा। नवमी, दशमी के साथ ही दुर्गा पूजा का महा अनुष्ठान समाप्त होता है। भगवान् राम की रावण पर विजय पर्व के रूप में यह त्योहार मनाया जाता है। विश्वभर से नेपाली प्रवासी इस त्योहार

दशहरा पर्व का उल्लास

को मनाने के लिए अपने घरों को आते हैं। इस दौरान अंतरराष्ट्रीय फ्लाइट से काठमांडू आना अत्यंत महँगा होता है।

यह पर्व सितंबर, अक्तूबर महीने में आनेवाले पर्व शुक्ल पक्ष की पहली तिथि से प्रारंभ होता है। इस त्योहार को मनाने की परंपरा बिल्कुल भारतीय परंपरा की तरह है। पहले दिन घट की स्थापना की खास रस्म होती है। मिट्टी के घड़े में शुद्ध पवित्र स्रोत से जल भरा जाता है। माँ दुर्गा प्रतीक के रूप में नौ दिनों तक चंडी पाठ किया जाता है।

गाँवों, कस्बों, शहरों में कथाओं का आयोजन किया जाता है, जिसमें माँ काली, ब्रह्माणी, वैष्णवी, माहेश्वरी आदि की कथा का श्रवण किया जाता है। अनुष्ठान पूर्ण होने पर नए कपड़े पहनकर लोग माँ के चरणों में जानवरों की बलि चढ़ाते हैं। मुरगे, बकरे, भेड़ से लेकर भैंसे तक की बलि चढ़ाई जाती है। हिमाचल, उत्तराखंड समेत देश के अन्य पर्वतीय क्षेत्रों में ही यह पूजा पद्धति देखने को मिलती है। उत्तराखंड के कई मंदिरों में आज भी इस दौरान पशुबलि होती है।

भगवान् पशुपतिनाथ के परिसर में भी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलि दी जाती है। भारत की तरह लोग अपनी मनोकामना पूर्ण होने पर देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए विधि-विधान से पूजा-अर्चना करके बलि देते हैं, हालाँकि व्यक्तिगत रूप से मैं पशुबलि प्रथा का विरोधी हूँ। मेरा मानना है कि ईश्वर अपनी संतान के भक्तिभाव, प्रेम, समर्पण, दया, धर्म से प्रसन्न होकर आशीष देते हैं। किसी असहाय, बेजुबान जानवर की बलि देने से ईश्वर कैसे प्रसन्न हो सकता है ? कई लोग मेरी इस बात से असहमत होंगे, लेकिन मैं अपनी इस पुस्तक के माध्यम से यह आह्वान करना चाहूँगा कि हम सबको एक होकर संकल्प लेना चाहिए कि मंदिरों में पशुबलि प्रथा को समाप्त कर शुद्ध शाकाहारी स्वस्थ परंपरा कायम करनी चाहिए। उत्तराखंड में कई स्थानों पर पशुबलि समाप्त करके हमने नारियल की बलि देने की परंपरा स्थापित की है।

कृष्ण जन्माष्टमी

कृष्ण जन्माष्टमी भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मनाई जाती है। भगवान् कृष्ण ने कंस के अत्याचारों से लोगों को मुक्ति दिलाने के

कृष्ण जन्माष्टमी की भव्यता

लिए देवकी के गर्भ से आधी रात को कारागार में जन्म लिया था। नेपाल में कृष्ण जन्माष्टमी को उसी श्रद्धा भाव से मनाया जाता है, जैसा कि उत्तर भारत में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। भारत की तरह लोग पूरा दिन उपवास रखते हैं। भगवान् की बाल्यकाल की झाँकियों से पूरे मंदिर सजे रहते हैं। पूरे मंदिर में भगवान् की मूर्तियों का शृंगार होता है। जगह-जगह पर पंडाल लगाकर भगवान् के जन्मोत्सव को पूरे भक्ति भाव और उल्लास के साथ मनाया जाता है। लोग इस दिन व्रत रखते हैं और घर में भगवान् श्रीकृष्ण के भोग हेतु विभिन्न प्रकार के पकवान बनाते हैं। लोग नए कपड़े पहनकर मंदिरों में जाते हैं और वहाँ के उत्सवों में हिस्सा लेते हैं। शहरों में हिंदुस्तान की तरह धार्मिक झाँकियाँ निकाली जाती हैं। लोग इस दिन पूजा-अर्चना के साथ दान और अन्य भव्य अनुष्ठानों का आयोजन करते हैं। रात को 12 बजे भगवान् कृष्ण के जन्म के साथ उपवास खोला जाता है।

बुद्ध जयंती

संपूर्ण नेपाल में पूरी श्रद्धा के साथ बैशाख पूर्णिमा के दिन बुद्ध जयंती मनाई जाती है। इस दिन 563 ई.पू. में बुद्ध का जन्म लुंबिनी (भारत), जो कि

बुद्ध जयंती का पर्व

आज नेपाल में स्थित है, में हुआ था। पूर्णिमा के दिन ही 483 ई.पू. में 80 वर्ष की आयु में देवरिया जिले के कुशीनगर में निर्वाण प्राप्त किया था। भगवान् बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति (बुद्धत्व या संबोधी) और महापरिनिर्वाण, ये तीनों एक ही दिन अर्थात् बैशाख पूर्णिमा के दिन ही हुए थे। यह एक दुर्लभ संयोग है, जो अन्य किसी दिव्य पुरुष या महापुरुष के विषय में देखने-सुनने को नहीं मिला। अपने मानवतावादी एवं विज्ञानवादी बौद्ध धर्म-दर्शन से भगवान् बुद्ध दुनिया के सबसे महान् महापुरुष हैं। इसी दिन भगवान् बुद्ध को बुद्धत्व की प्राप्ति हुई थी। आज बौद्ध धर्म को मानने वाले विश्व में 180 करोड़ से अधिक लोग इस दिन को बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। हिंदू धर्मावलंबियों के लिए भगवान् बुद्ध विष्णु के नौवें अवतार हैं। अत: हिंदुओं के लिए भी यह दिन पवित्र माना जाता है। यह त्योहार भारत, चीन, नेपाल, सिंगापुर, वियतनाम, थाईलैंड, जापान, कंबोडिया, मलेशिया, श्रीलंका, इंडोनेशिया, पाकिस्तान तथा विश्व के बड़े देशों में मनाया जाता है।

देवोत्थान एकादशी

हर वर्ष कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की 'देवउठनी एकादशी' पर तुलसी का विवाह भगवान् विष्णु के स्वरूप शालिग्राम से कराने की परंपरा है। ऐसी मान्यता है कि इनकी पूजा से सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। शालिग्राम एक विशेष प्रकार के पत्थर को कहते हैं। यह काले रंग का और चिकना पत्थर होता है। भगवान् विष्णु के वरदान के कारण शालिग्राम के विशिष्ट पत्थर नेपाल में बहनेवाली गंडकी नदी से ही प्राप्त होते हैं। यह नदी तुलसी का ही एक रूप है, यानी गंडकी नदी और तुलसी एक ही हैं। विष्णु तुलसी और गंडकी नदी से जुड़ी पुरानी कथा के अनुसार प्राचीन समय में तुलसी पतिव्रता और धार्मिक आचरणवाली स्त्री थी। इनका विवाह शंखचूड़ नाम के दैत्य से हुआ था। शंखचूड़ बहुत ही पराक्रमी और शक्तिशाली असुर था। सभी देवता भी उसे मार पाने में असमर्थ थे, क्योंकि शंखचूड़ के लिए तुलसी का सतीत्व रक्षा कवच बना हुआ था। शंखचूड़ से त्रस्त होकर सभी देवता भगवान् विष्णु

के पास मदद माँगने के लिए गए। तब विष्णु भगवान् ने बताया कि स्वयं उन्होंने ही शंखचूड़ के पिता दंभ को ऐसे पराक्रमी पुत्र का वरदान दिया था। इस कारण वे शंखचूड़ का वध नहीं कर सकते हैं। विष्णु ने सभी देवताओं को शिव से प्रार्थना करने के लिए कहा। भगवान् विष्णु ने तुलसी से छलपूर्वक विवाह कर उसका सतीत्व नष्ट किया और अंततः शंखचूड़ मारा गया। भगवान् विष्णु ने शंखचूड़ से मुक्ति दिलाई। माँ तुलसी को जब यह ज्ञात हुआ कि भगवान् ने कपटपूर्वक उनके पति का वध करने हेतु उनके साथ विवाह किया तो उन्होंने भगवान् को पत्थर बनने का श्राप दे दिया। भगवान् विष्णु का प्रतीक शालिग्राम पत्थर गंडकी में पाया जाता है। पूरे नेपाल में विशेष हर्षोल्लास व भक्ति भाव से यह त्योहार मनाया जाता है।

मकर संक्रांति

मकर संक्रांति पर्व नेपाल के सभी प्रांतों में अलग-अलग नाम व भाँति-भाँति के रीति-रिवाजों द्वारा भक्ति एवं उत्साह के साथ धूमधाम से मनाया जाता

मकर सक्रांति का पावन पर्व

है। मकर संक्रांति के दिन किसान अपनी अच्छी फसल के लिए भगवान् को धन्यवाद देकर अपनी अनुकंपा को सदैव लोगों पर बनाए रखने का आशीर्वाद माँगते हैं। इसलिए मकर संक्रांति के त्योहार को फसलों एवं किसानों के त्योहार के नाम से भी जाना जाता है। नेपाल में मकर संक्रांति को माघ-संक्रांति, सूर्योत्तरायण और थारू समुदाय में 'माघी' कहा जाता है। इस दिन नेपाल में सार्वजनिक छुट्टी रहती है। थारू समुदाय का यह सबसे प्रमुख त्योहार है। नेपाल के बाकी समुदाय भी तीर्थस्थान में स्नान करके दान-धर्मादि करते हैं और तिल, घी, चीनी और कंद-मूल खाकर धूमधाम से मनाते हैं। वे नदियों के संगम पर लाखों की संख्या में नहाने के लिए जाते हैं। तीर्थस्थलों में रूरूधाम (देवघाट) व त्रिवेणी मेला सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है। तराई के क्षेत्र में मकर संक्रांति को खिचड़ी नाम से भी जाना जाता है। इस दिन उड़द, चावल, तिल, चिवड़ा, गौ, स्वर्ण, ऊनी वस्त्र, कंबल आदि दान करने का अपना महत्त्व है।

होली

रंगों का त्योहार होली पूरे नेपाल में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। होली का पर्व लोग अपने सभी गिले-शिकवे भूलकर मनाते हैं। होली का त्योहार बसंत ऋतु में मनाया जाता है। यह पर्व हिंदू पंचांग के अनुसार, फाल्गुन मास की पूर्णिमा को बहुत ही हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। होली के पर्व में बड़े भी बच्चे बन जाते हैं और खूब रंग, गुलाल और अबीर से खेलते हैं।

होली का पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन मनाया जाता है। सभी एक रंग में रंग जाते हैं, इसलिए इसे रंगों का त्योहार कहते हैं। होली के पहले दिन होलिका दहन होता है, जिसमें महिलाएँ घर पर सुंदर-सुंदर रंगों की रंगोलियाँ बनाती हैं और पुरुष बल्ले (गाय के गोबर के बल्ले, जिन्हें घर की महिलाएँ पहले ही बना लेती हैं) ले जाकर रात्रि को दहन करते हैं। अगले दिन लोग एक-दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल फेंकते हैं। होली के गीत गाए जाते हैं और घर-घर जाकर लोगों को रंग लगाया जाता है। होली के दिन लोग पुराने सारे

शिकवे-शिकायतों को भूलकर गले मिलते हैं और फिर दोस्त बन जाते हैं। इस त्योहार की सबसे ज्यादा पसंदीदा मिठाई, गुँजिया खाते हैं और एक-दूसरे को गुलाल का तिलक लगाते हैं। सबसे अधिक रौनक तराई क्षेत्र में नजर आती है, जहाँ के लोग होली को पूरे हर्षोल्लास व उत्साह से मनाते हैं।

महाशिवरात्रि

महाशिवरात्रि से जुड़ी कई पौराणिक कथाएँ हैं। इनमें से एक के अनुसार इसी दिन समुद्र मंथन के दौरान निकले कालकूट नामक विष को भगवान् शिव ने अपने कंठ में रख लिया था। इसका एक महत्त्व यह भी है कि इसी दिन माँ गौरी और भगवान् शिव की शादी हुई थी। इस पर्व में श्रद्धालु रात भर 'ओम नमः शिवाय' का जप करते हैं। मंदिरों में शिवलिंग पर दूध, घी, शहद चढ़ाते हैं

महाशिवरात्रि के अवसर पर पूजा-अर्चना

और भोलेनाथ की पूजा-अर्चना करते हैं। इस दिन रुद्राभिषेक का विशेष महत्त्व है। यह त्योहार पड़ोसी देश भारतवर्ष में भी श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया जाता है। नेपाल में हिंदुओं का पावन तीर्थ है, जो कि विश्व भर में पशुपतिनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। पशुपतिनाथ पवित्र बागमती नदी के तट पर स्थित है। पशुपति क्षेत्र विकास ट्रस्ट, जो कि पूरे क्षेत्र की देख-रेख करता है और मंदिर

परिक्षेत्र के नियंत्रण के लिए जवाबदेह है; सभी उत्सवों के लिए विशेष तैयारी करता है। श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा का मुख्य ध्येय सामने रखते हुए शिवरात्रि की तैयारी काफी दिन पूर्व से की जाती है और हर साल इस पावन पर्व पर 10 से 15 लाख श्रद्धालुओं के आने की उम्मीद रहती है।

महाशिवरात्रि का पर्व महादेव शिव, जो हिंदुओं के त्रिदेवों में से एक हैं, के प्रति मान-सम्मान, भक्ति व धार्मिक उत्साह के साथ मनाया जाता है। महाशिवरात्रि का त्योहार नेपाल के सबसे प्रमुख तथा महत्त्वपूर्ण त्योहारों में से एक है और हिंदू तालिका के अनुसार इसे माघ मास के कृष्ण पक्ष में मनाया जाता है। महाशिवरात्रि का यथाशब्द अर्थ है शिव की महान् रात और इसे मुख्यत: भारत तथा नेपाल में मनाया जाता है।

महाशिवरात्रि से अनेक मनोरंजक पौराणिक कथाएँ जुड़ी हैं। इनमें सर्वाधिक लोकप्रिय कहानी के अनुसार शिवरात्रि की रात शिव व पार्वती का विवाह हुआ था। कुछ विद्वानों का मानना है कि शिवरात्रि की माँगलिक रात को भगवान् शिव ने तांडव नृत्य किया था। यह नृत्य सृष्टि संरक्षण तथा विनाश का मुख्य मौलिक नृत्य है। 'लिंग पुराण' में चर्चित एक अन्य अनुश्रुति के अनुसार शिवरात्रि के शुभ अवसर पर भगवान् शिव, लिंग के रूप में व्यक्त हुए थे। समुद्र मंथन के दौरान निकले विष का सेवन करके भगवान् शिव ने संसार को विनाश से बचाया था। विष को अपने गले में धारण करने के परिणामस्वरूप 'शिव का कंठ नीला' पड़ गया था और इसके बाद से महादेव को नीलकंठ भी कहा जाता है। अत: शिवरात्रि का पर्व शिव भक्तों द्वारा अत्यंत शुभ माना जाता है और वे इसे महाशिवरात्रि के रूप में मनाते हैं।

भाई टीका

नेपाल में भैया दूज को 'भाई टीका' कहते हैं। इस दिन बहनें अपने भाई के उज्ज्वल भविष्य एवं समृद्धि की कामना करते हुए अपने हाथ से उन्हें टीका लगाकर मिठाई खिलाती हैं। भाई अपनी बहनों के पैर छूकर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इस दिन विवाहित बहनें अपने मैत (मायके) में आती हैं और उनके

भाई उन्हें कपड़े, पैसे, उपहार, गहने आदि भेंट करते हैं। भाई-बहन के अपार प्रेम को प्रदर्शित करता यह त्योहार नेपाल के हर कोने में पूरे हर्षोल्लास से मनाया जाता है।

खिच्च पूजा

कार्तिक माह में मनाए जानेवाली यह पूजा/उत्सव हिंदू धर्म संस्कृति के प्रकृति प्रेम को उजागर करती है। लोग इस दिन कुत्तों को, कौवों को भाँति-भाँति के पकवान खिलाकर उनसे अपनी कुशल, सुख-समृद्धि की प्रार्थना करते हैं। गाय और कुत्तों के गले में पुष्प माला डालकर उनके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान व्यक्त किया जाता है। कौवों को मिष्ठान एवं अन्य खाद्य पदार्थ खिलाने के पीछे तात्पर्य है कि घर में ऐसा करने से अनिष्ट और मृत्यु कष्ट आदि टल लाता है। गाय को माँ का स्वरूप मानकर उसका टीका किया जाता है और उसकी पूजा की जाती है।

छठ पूजा

छठ पूजा अथवा छठ पर्व कार्तिक शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को बड़ी धूमधाम से मनाया जानेवाला एक हिंदू पर्व है। सूर्योपासना का यह अनुपम

छठ पूजा का उत्सव

लोकपर्व मुख्य रूप से पूर्वी भारत के बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में मनाया जाता है। उत्तराखंड का उत्तरायणी पर्व हो या केरल का ओणम, कर्नाटक की रथसप्तमी हो या बिहार का छठ पर्व, सभी इस तथ्य के द्योतक हैं कि भारत मूलत: सूर्य संस्कृति के उपासकों का देश है तथा बारह महीनों के तीज–त्योहार सूर्य के संवत्सर चक्र के अनुसार मनाए जाते हैं। छठ से जुड़ी पौराणिक मान्यताओं और लोकगाथाओं पर गौर करें तो पता चलता है कि भारत के आदिकालीन सूर्यवंशी भारतीय राजाओं का यह मुख्य पर्व था। मगध और आर्यावर्त के राजनीतिक इतिहास के साथ भी छठ पर्व की ऐतिहासिक कड़ियाँ जुड़ी हैं।

नाग पंचमी

नेपाल में नाग पंचमी एक लोकप्रिय त्योहार के रूप में मनाया जाता है। सावन के महीने में मनाए जानेवाला यह त्योहार पौराणिक काल के गरुड़ और नाग के युद्ध को स्मरण कराता है। ऐसी मान्यता है कि चंगु नारायण में स्थित गरुड़ को इस उत्सव के दिन पसीना आता है। नाग पंचमी के दिन देश

नगपंचमी की पूजा अर्चना

भर में नाग देवता की पूजा की जाती है और दूध चढ़ाया जाता है। नाग पंचमी के पीछे हिंदू धर्म के उस महान् दर्शन की पवित्र भावना परिलक्षित होती है, जिसके तहत दुनिया की सारी रचनाएँ जैसे नदियाँ, जीव-जंतु, पौधे, वृक्ष उस आदिशक्ति द्वारा रचित की गई हैं और उनमें ईश्वर के दर्शन होते हैं। इसी सोच के तहत हम पेड़-पौधे, जानवरों, यहाँ तक कि शिलाओं में भी भगवान् का दर्शन करते हैं। नेपाल की तरह नाग पंचमी भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में भी मनाई जाती है।

तिहार (दीपावली)

नेपाली में 'तिहार' दीपावली पर्व को कहा जाता है। नेपाल के सर्वाधिक लोकप्रिय त्योहार दसई के बाद यह दूसरा लोकप्रिय त्योहार है। भारत की भाँति नेपाल में दीपावली के लिए पूरे बाजार, व्यापारिक प्रतिष्ठान, मंदिरों की खास सजावट होती है। लोग अपने मित्रों व नाते रिश्तेदारों को मिठाई और उपहार देते हैं। इस दिन लोग पूरे घरों की सफाई पर दीपमाला से घरों की सफाई कर

दीपावली की शोभा बिखेरता नेपाल

दीपमाला से घरों को सजाते हैं। ऐसी मान्यता है कि इस दिन भगवान् राम रावण पर विजय प्राप्त कर अयोध्या लौटे थे। उनके स्वागत में चारों तरफ रोशनी की जाती है और पटाखे जलाकर खूब आतिशबाजी की जाती है। व्यापारी वर्ग माँ लक्ष्मी की विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन करते हैं। लोग घर पर भाँति-भाँति के पकवान बनाते हैं और एक-दूसरे के घर मिठाई देकर अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करते हैं। पूरे देश में इस दौरान उत्सव का माहौल रहता है। विदेशों में बड़ी संख्या में कार कर रहे अप्रवासी नेपाली तिहार की छुट्टियों में घर आते हैं।

□

9

पर्यटन का पर्याय : नेपाल

हिमालय के बारे में सोचते हुए अकसर यह विचार मन में आ जाता है कि अगर हम मात्र पर्यटन उद्योग को सुनियोजित विकास की पराकाष्ठा पर ले जाने में सक्षम हो जाएँ, तो क्षेत्र की आर्थिकी में नए युग का सूत्रपात निश्चित है। बहुत हद तक नेपाल के लिए भी यह धारणा सौ प्रतिशत सच प्रतीत होती है। गगनचुंबी हिमालय, अनुपम जैव विविधता, मिलनसार लोग, हिंदू एवं बौद्ध स्थापत्य की गौरवगाथा सबकुछ नेपाल को अद्वितीय बना देते हैं। मैं हमेशा से विभिन्न माध्यमों से, विभिन्न मंचों से कहता आया हूँ कि

विश्व की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट

स्विट्जरलैंड जैसे कई देश हिमालय की सुंदरता में समाए हुए हैं। हिमालय के प्राकृतिक सौंदर्य के समक्ष स्विट्जरलैंड गौंठा पड़ जाता है। भारत के उत्तर में बसा नेपाल अपनी प्राकृतिक छटा, नैसर्गिक सौंदर्य और विविधताओं के कारण न केवल हिमालय में, बल्कि पूरे विश्व में अद्वितीय स्थान रखता है। भारत, चीन, भूटान की सीमाओं से घिरा नेपाल खूबसूरत रंगों की छटा बिखेरते रोमांच, साहसिक पर्यटन, अध्यात्म के विभिन्न आयामों को समेटे हुए नेपाल विश्वभर के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। चाहे पर्वतारोहण हो, रिवर रॉफ्टिंग हो, जंगल सफारी हो, स्कीइंग हो या फिर हिम शिखरों के मध्य हिंदू एवं बौद्ध धार्मिक और आध्यात्मिक स्थलों का दर्शन हो, नेपाल अद्‌भुत है। नेपाल में मुझे पता चला कि विश्व की दस श्रेष्ठ गगनचुंबी, हिमाच्छादित चोटियाँ नेपाल में ही हैं। नेपाल के पर्यटन स्थलों के विषय में लिखा जाए, तो कई ग्रंथ लिखे जा सकते हैं, परंतु इस पुस्तक के विषय क्षेत्र के विस्तार के दृष्टिगत मैंने संक्षेप में ही नेपाल के प्रमुख पर्यटक केंद्रों की जानकारी पाठकों को उपलब्ध कराने का प्रयास किया है। नेपाल इंद्र धनुष के रंगों से भरपूर एक

हवाई सेवाओं का विस्तृत जाल

नयनाभिराम अन्नपूर्णा पर्वत श्रृंखला

खूबसूरत देश है। यहाँ पर वह सबकुछ है, जिसकी तमन्ना एक आम सैलानी को होती है। देवताओं का घर कहा जाने वाला नेपाल विविधताओं से परिपूर्ण है। इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जहाँ एक ओर बर्फ से ढकी हुई पहाड़ियाँ हैं, वहीं दूसरी तरफ बिल्कुल समतल मधेस में विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थान हैं। रोमांचक खेलों के शौकीन यहाँ पर्वतारोहण हेतु दुनिया के विभिन्न हिस्सों से एकत्रित होते हैं।

लुंबिनी

लुंबिनी महात्मा बुद्ध की जन्मस्थली के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ पर विश्व भर से कई हजारों श्रद्धालु/पर्यटक नियमित रूप से आते हैं। यह उत्तर प्रदेश की उत्तरी सीमा के निकट नेपाल में स्थित है। यूनेस्को तथा विश्व के सभी बौद्ध संप्रदाय, महायान, ब्रजयान, थेरवार आदि इस धार्मिक केंद्र से जुड़े हुए हैं। महान् सम्राट अशोक द्वारा स्थापित अशोक स्तंभ में ब्राम्ही लिपिकृत भाषा में यहाँ पर बुद्ध के जन्म स्थान होने का वर्णन किया हुआ है।

मुक्तिनाथ का मंदिर

मुक्तिनाथ

मुक्तिनाथ वैष्णव संप्रदाय के प्रमुख मंदिरों में से एक है। यह तीर्थ स्थान भगवान् शालिग्राम के लिए प्रसिद्ध है। भगवान् शालिग्राम की मूर्ति मुख्य रूप से नेपाल की ओर प्रवाहित होनेवाली गंडकी नदी में पाई जाती है, जिस क्षेत्र में मुक्तिनाथ स्थित है, वह पूरा क्षेत्र मुक्तिनाथ क्षेत्र के रूप में प्रख्यात है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार यह वह क्षेत्र है, जहाँ पर लोगों को मुक्ति या मोक्ष प्राप्त होता है। मुक्तिनाथ की यात्रा काफी मुश्किल है। बड़ी संख्या में हिंदू एवं बौद्ध धर्मावलंबी इस क्षेत्र की यात्रा तीर्थाटन के लिए करते हैं। इस क्षेत्र की यात्रा के लिए शारीरिक रूप से स्वस्थ होना अत्यंत आवश्यक है। यह यात्रा पोखरा से आरंभ होती है। पोखरा हवाई अड्डा ही इसका समीपवर्ती हवाई अड्डा है। इस रास्ते पर बद्रिका आश्रम के शंकराचार्य माधवाश्रम महाराज का आश्रम भी स्थित है। शंकराचार्यजी द्वारा नेपाल में कई संस्कृत विद्यालय संचालित हो रहे हैं। यह एक महज संयोग ही है कि शंकराचार्यजी का मूल निवास स्थान

भारत में भगवान् केदारनाथ की घाटी जनपद रुद्रप्रयाग में ही स्थित है और वहीं पर उनका कोटेश्वर धाम के नाम से एक बड़ा आश्रम भी है। मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि रुद्रप्रयाग के इस हिमालय पुत्र ने नेपाल में भी धर्म, संस्कृति, अध्यात्म एवं शिक्षा की अलख जगाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। हाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मुक्तिधाम की यात्रा की है।

ककनी

काठमांडू शहर के लगभग 30 किमी. उत्तर-पश्चिम में स्थित ककनी विख्यात पर्यटक केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है। इस स्थान से हिमालय का अद्‌भुत

ककनी क्षेत्र का नयनाभिराम दृश्य

नजारा देखने को मिलता है। ककनी से गणेश हिमाल गौरी-शंकर 7134 मीटर, चौबा भायर 6109 मीटर, हिमालचुली 7893 मीटर, अन्नपूर्णा 8091 मीटर सहित अनेक हिमाच्छादित गगनचुंबी पर्वतों के दर्शन अत्यंत आसानी से किए जा सकते हैं।

गोसाईकुंड

हिमालय पर्वतों के बीच स्थित झीलों का धार्मिक महत्त्व है। इसी कड़ी में समुद्र तल 4360 मीटर की ऊँचाई पर स्थित गोसाईकुंड नेपाल के प्रमुख

तीर्थस्थलों में से एक है। काठमांडू से 132 किमी. दूर धुंचे से गोसाई कुंड पहुँचना सबसे सही विकल्प है। उत्तर में पहाड़ और दक्षिण में विशाल झील इस क्षेत्र को अत्यंत रमणीक बना देते हैं। यहाँ और भी नौ प्रसिद्ध झीलें हैं, जैसे कि सरस्वती, भैरव सौर्य और गणेश कुंड आदि।

धुलीखेल

यह प्राचीन नगर काठमांडू से 30 किमी. पूर्व अर्निको राजमार्ग काठमांडू-कोदारी राजमार्ग के एक ओर बसा है। यहाँ से कयरेलुंग और पश्चिम में हिमालचुली शृंखलाओं के खूबसूरत दृश्यों का आनंद उठाया जा सकता है।

पशुपतिनाथ मंदिर

भगवान् पशुपतिनाथजी का वह खूबसूरत मंदिर काठमांडू से करीब 5 किमी. उत्तर-पूर्व में स्थित है। बागमती नदी के किनारे इस मंदिर के साथ और भी मंदिर बने हुए हैं। पशुपतिनाथ मंदिर के बारे में माना जाता है कि नेपाल में हिंदुओं का सबसे प्रमुख और पवित्र तीर्थस्थल है। भगवान् शिव को समर्पित यह मंदिर प्रतिवर्ष हजारों देशी-विदेशी श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करता है। गोल्फ कोर्स और हवाई अड्डे के पास बने इस मंदिर को साक्षात् भगवान् शिव का निवासस्थान माना जाता है।

चांगुनारायण मंदिर

पैगोडा शैली में निर्मित यह मंदिर नेपाल के प्राचीनतम मंदिरों में एक है। इस मंदिर के बारे में कहा जाता है कि यह काठमांडू घाटी का सबसे पुराना मंदिर है। इतिहास के झरोखे में देखें तो इस मंदिर का निर्माण चौथी शताब्दी के आसपास हुआ था। इस मंदिर को 1702 में पुनः बनाया गया, जब आग लगने के कारण यह नष्ट हो गया था। यह मंदिर घाटी के पूर्व और पहाड़ की ऊँचाई पर भक्तपुर से चार किमी. उत्तर में खूबसूरत और

पैगोड़ा शैली का चांगुनारायण मंदिर

शांतिपूर्ण स्थान पर स्थित है। यह मंदिर यूनेस्को विश्व की स्थापत्य, उसका वातावरण देश-विदेश के लोगों के आकर्षण का केंद्र है। दुर्भाग्य से हाल में आए भूकंप से नेपाल के कई मंदिरों की भाँति इस मंदिर की संरचना को भी काफी क्षति हुई है।

बूढ़ा नीलकंठ

भगवान् पशुपतिनाथ मंदिर के पश्चात् सबसे अधिक प्रसिद्ध मंदिर बूढ़ा नीलकंठ भगवान् विष्णु को समर्पित है। ऐसा माना जाता है कि एक नेपाली कृषक को हल लगाते समय धरती में इस प्रतिमा का आभास हुआ। खुदाई उपरांत पता चला कि इस मूर्ति में भगवान् विष्णु अपनी शयनावस्था में शेषनाग पर विराजमान स्थिति में हैं। इस मंदिर में पूजा-अर्चना बालकों द्वारा की जाती है। हजारों की संख्या में श्रद्धालु भगवान् नारायण के दर्शन हेतु इस स्थान पर आते हैं। काठमांडू में स्थित यह मंदिर एक परिसर के रूप

शेषनाग की शैया पर विराजमान भगवान् नारायण

में है, जहाँ पर नारायण की प्रतिमा एक तालाब में शयनावस्था में भक्तों के आकर्षण एवं आस्था का केंद्र है।

भक्तपुर दरबार स्क्वायर

भक्तपुर के दरबार स्क्वायर का निर्माण 16वीं शताब्दी और 17वीं शताब्दी में हुआ था। इसके अंदर एक शाही महल दरबार और पारंपरिक नेवाड़ पैगोड़ा शैली में बने बहुत सारे मंदिर हैं। इसमें एक स्वर्णद्वार भी विद्यमान है, जो कि काफी आकर्षक है। विदेशी पर्यटकों का बड़ा जमावड़ा यहाँ पर देखने को मिलता है। इसे देखकर अंदर की खूबसूरती का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। यह जगह भी यूनेस्को की विश्व धरोहर का हिस्सा है। नेपाली भवन निर्माण में वंश की राजशाही का प्रभाव सर्वत्र देखने को मिलता है। शाही परिवार से जुड़ी इमारतें, मंदिर, महल नेपाल की धरोहर के रूप में यहाँ पर सुरक्षित हैं। भक्तपुर का दरबार स्क्वायर इसी कड़ी का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। यूनेस्को की आठ सांस्कृतिक विश्व धरोहरों में

भक्तपुर दरबार स्क्वायर

से एक काठमांडू दरबार प्राचीन मंदिरों, महलों और गलियों का एक समूह है। राजधानी की सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक गतिविधियों का यह केंद्र विश्वविख्यात है।

स्वर्ण द्वार

खूबसूरती की मिसाल स्वर्ण द्वार नेपाल की शान है। बेशकीमती पत्थरों से सजे इस दरवाजे का धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्त्व है। शाही अंदाज में बने इस द्वार के ऊपर देवी काली और गरुड़ की प्रतिमाएँ लगी हैं। माना जाता है कि इसके माध्यम से स्वर्ण द्वार पर अप्सराओं को दर्शाया गया है। इसका वास्तुशिल्प और इसकी सुंदरता पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देती है।

बोधनाथ स्तूप

नेपाल में बौद्ध अनुयायियों की श्रद्धा का केंद्र काठमांडू घाटी के मध्य स्थित बोधनाथ स्तूप तिब्बती संस्कृति का महत्त्वपूर्ण केंद्र है। 1959 में चीन के हमले के बाद बड़ी संख्या में भारत-नेपाल में चले आए तिब्बती लोगों ने

शरण ली और यह स्थान तिब्बती बौद्धधर्म का प्रमुख केंद्र बन गया। बोधनाथ नेपाल का सबसे बड़ा स्तूप है। इसका निर्माण 14वीं शताब्दी के आसपास हुआ था, जब मुगलों ने आक्रमण किया था। बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटक इस स्थान पर देखे जा सकते हैं।

नेपाल हालाँकि हिंदू राष्ट्र है, परंतु बौद्ध एवं हिंदू धर्म का समागम इससे अच्छा और कहीं देखने को नहीं मिलता है। नेपाल हिंदू बौद्ध धर्म का संगठन स्थल है। तिब्बती बौद्ध धर्म के सबसे पवित्र स्थलों में से एक यह स्तूप नेपाल का सबसे विशाल स्तूप है। बौद्ध धर्म के अनुयायी इस स्थान पर पूजा हेतु आते हैं। दूसरे धर्मों के पर्यटक भी यहाँ पर आते हैं।

संदर्भ

इस स्तूप को नेपाली में 'बौद्धा' नाम से पुकारा जाता है। इसकी प्रारंभिक ऐतिहासिक सामग्री इसके नीचे ही दबे होने का अनुमान है। यह स्तूप लिच्छवी राजाओं मानदेव द्वारा निर्मित और शिवदेव द्वारा विस्तारित माना जाता है। हालाँकि, इसके वर्तमान स्वरूप के निर्माण की तिथि भी अज्ञात ही है। स्तूप के आसपास बौद्ध कलाकृतियों से जुड़ी कई दुकानें हैं, जहाँ पर बौद्ध शिल्प, आध्यात्मिक चित्रकारी, पूजा का सामान मिलता है। इस स्थान पर विदेशियों की भरमार देखने को मिलती है। इसकी गर्भबेदी की दीवार पर स्थापित छोटी-छोटी प्रस्तर मूर्तियाँ और ऊपर की छत्रावली संस्कृत बौद्ध धर्म का प्रतीक मानी जाती है। यहाँ पर संस्कृत बौद्ध वांग्मय तिब्बती भाषा में भी मौजूद है।

यद्यपि यह सोचना अजीब सा लगता है कि नेपाल में कोई पर्यटक संग्रहालय देखने आए। नेपाल को प्रकृति ने इतने उपहार दिए हैं कि पर्यटक के पास विकल्पों का एक खजाना मौजूद है। फिर भी नेपाल में अनेक ऐसे संग्रहालय हैं, जिनसे नेपाल की ऐतिहासिक विरासत का पता चलता है। इनमें से कुछ संग्रहालयों का संक्षिप्त वर्णन निम्नवत् है—

राष्ट्रीय संग्रहालय

स्वयंभू के निकट छावनी में स्थित इस संग्रहालय में कुछ अप्रतिम कांस्य प्रतिमाएँ हैं तथा चित्रावली संग्रहीत है। यहाँ पर प्राचीन आग्नेयास्त्रों, चर्म तोपों तथा 1934 के महाभूकंप के अवशेषों का भी संग्रह किया गया है।

संग्रहालय में दुर्लभ मूर्ति

राष्ट्रीय मौद्रिक संग्रहालय

राष्ट्रीय संग्रहालय परिसर में ही स्थित इस संग्रहालय में नेपाली सिक्कों का अद्‌भुत संग्रह है। इसमें लिच्छवी, मल्ला तथा शाह राजवंश काल के सिक्के संजोकर रखे गए हैं।

त्रिभुवन संग्रहालय

काठमांडू दरबार स्क्वायर में हनुमान ढोका महल में स्थित इस संग्रहालय में महाराज त्रिभुवन की झाँकी दिखाई गई है, जिन्होंने 1951 में राणा शासन देश को मुक्त कराया था। इसकी वीथिका में शाही परिवार के दुर्लभ फोटो, चित्र तथा रूप चित्र प्रदर्शित किए गए हैं।

नारायणहिती महल संग्रहालय

दशकों तक राजशाही की आन, बान और शान का प्रतीक रहे नेपाल के नारायणहिती महल को 2009 में संग्रहालय घोषित किया गया। काठमांडू का

नारायणहिती महल संग्रहालय

यह खूबसूरत महल नेपाल के राजाओं का निवास स्थान रहा है। आज यह महल एक बड़े संग्रहालय के रूप में तब्दील कर दिया गया है। इस संग्रहालय में राजशाही के समय की सारी वस्तुएँ विद्यमान हैं।

पाटन संग्रहालय

पाटन दरबार में स्थित इस संग्रहालय की विशिष्टता यहाँ रखी कांस्य

पाटन संग्रहालय

प्रतिमाओं तथा धार्मिक वस्तुओं की है। यहाँ की कुछ कलाकृतियाँ तो ग्यारहवीं शताब्दी की हैं।

महेंद्र संग्रहालय

हनुमान ढोका महल समूह में ही स्थित इस संग्रहालय में महाराज महेंद्र (1955–1972) के जीवनकाल से संबंधित वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया है। उनका कैबिनेट कक्ष, कार्यालय तथा अन्य व्यक्तिगत संपत्तियाँ जैसे मेडल, स्मृति चिह्न, सिक्के, डाक टिकट, साहित्य संग्रह आदि का भावपूर्ण प्रदर्शन किया गया है।

प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय

स्वयंभू स्तूप के पीछे स्थित इस संग्रहालय में जानवरों, तितलियों तथा पौधों का प्रदर्शन किया गया है। रुई, ऊन आदि से भरे हुए जानवर तथा घड़ियाल इस संग्रहालय के प्रमुख आकर्षण हैं।

राष्ट्रीय पुस्तकालय संग्रहालय

पाटन स्थित पुल चौक के हरिभवन में स्थित इस पुस्तकालय संग्रहालय में अंग्रेजी, संस्कृत तथा हिंदी में लिखित लगभग 7000 पुस्तकों का अनूठा संग्रह है। इस संग्रहालय में रखी हुई कुछ पुस्तकें तो 17वीं शताब्दी में लिखित हैं।

असा संग्रहालय

प्राचीन काठमांडू के पश्चिमी कोने में स्थित इस संग्रहालय में लगभग 7000 पर्ण लिखित पुस्तकें तथा लगभग 1200 ताड़-पत्तों पर लिखित अभिलेखों का अप्रतिम संग्रह है। इसमें से प्राचीनतम पांडुलिपि 1464 ई. की लिखित है। अधिकतर पांडुलिपियाँ संस्कृत अथवा नेपाली भाषा में लिखित हैं।

राष्ट्रीय उद्यान

वन संपदा के मामले में नेपाल धनी है। नेपाली सरकार ने अपने वनों को न केवल बचाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है, बल्कि वन्यजीव संरक्षण के मामले में भी गंभीरता से प्रयास किए गए हैं। मौजूदा समय में विश्व में कुछ दो हजार 670 नेशनल पार्क हैं और इन पार्कों के खाते में 3 खरब 39 करोड़ 73 लाख 16 हजार 382 हेक्टेयर भूमि आती है। नेपाल में 8 नेशनल पार्क भी हैं तथा 4 वन्यजीव संरक्षण केंद्र और हंटिंग रिजर्व पार्क हैं। नेपाल की कुछ भूमि, जिसका क्षेत्रफल एक लाख 47 हजार 181 वर्ग किमी. का है, उसमें से 20 हजार 422 वर्ग किमी. का क्षेत्र प्राणि हिस्सा इन पार्कों के कब्जे में है।

नेपाल में कई राष्ट्रीय पार्क भी हैं। जहाँ जंगलों में विभिन्न प्रकार के जानवरों से मिला जा सकता है। मुख्य रूप से चितवन पार्क, एवरेस्ट नेशनल पार्क, बरदिया नेशनल पार्क, लाँगटाँग नेशनल पार्क, शिवजी नेशनल पार्क हैं, जो नेपाल की 19.42 प्रतिशत भूमि को घेरे हुए हैं। नेपाल को चिड़ियों से प्यार है, तभी तो यहाँ 848 किस्म की चिड़ियाँ पाई जाती हैं। मोनल यहाँ का राष्ट्रीय

पक्षी है। रंग-बिरंगी तितलियाँ भी यहाँ पर खूब मिलती हैं। तितलियों की 300 किस्में यहाँ पर पाई जाती हैं। यहाँ से वोदीपुर, लेखनाथ, लुंबिनी, तानसेन, आमसाम और मानंग जा सकते हैं।

वैसे नेपाल में विश्व से आनेवाले पर्यटकों की सर्वाधिक संख्या भारतीयों की ही होती है। फिर भी जापान, मलेशिया, सिंगापुर, कोरिया, बाँग्लादेश, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, कनाडा, न्यूजीलैंड, इटली आदि अनेक देशों से भी यहाँ पर पर्यटक आते हैं। नेपाल की राष्ट्रीय भाषा नेपाली है, लेकिन अंग्रेजी और हिंदी में भी बातचीत की जा सकती है। यहाँ नेपाली रुपया चलता है। भारतीय एक सौ रुपए नेपाल के 160 रुपए के बराबर होते हैं और पोखरा में एक कैसीनो है। यहाँ पर विभिन्न प्रकार की संस्कृतियाँ और कलाएँ विकसित हैं। फिल्मों की शूटिंग के लिए यहाँ पर कई स्थान हैं। देश-विदेश की कई फिल्मों की यहाँ पर शूटिंग की जाती है।

रॉयल चितवन राष्ट्रीय पार्क

रॉयल चितवन नेशनल पार्क नेपाल के चितवन जिले के नारायणी क्षेत्र में स्थित है। यह काठमांडू से करीब 120 किमी. दूर दक्षिण-पूर्व में स्थित

रॉयल चितवन नेशनल पार्क

है। यहाँ पहुँचने में लगभग 6 घंटे का समय लगता है। यह पार्क 923 वर्ग किमी. क्षेत्रफल को घेरे हुए है। इसकी स्थापना 1973 में हुई थी। इस पार्क को 1984 में यूनेस्को की वर्ल्ड हेरीटेज लिस्ट में शामिल किया गया था। यह पार्क कुदरत की खूबसूरती का अनोखा उदाहरण है। इस पार्क के दायरे में शिवालिक की सुंदर पहाड़ियाँ और नारायणी नदी के तटों पर मीलों लंबे जंगलों के साथ-साथ 20 प्रतिशत हिस्से में हरी-भरी घास के मैदान हैं। इस पार्क में चीता, गैंडे, स्लाथ, सांभर, मृग, चीतल एवं चित्तीदार हिरण, हाग, डियर, जंगली कुत्ते, हाथी, लंगूर, रहीसस बंदर, साँपों की कई विशिष्ट प्रजातियाँ पाई जाती हैं। चितवन पार्क में घूमने का सबसे अनुकूल मौसम सितंबर से नवंबर और फरवरी से अप्रैल के बीच का होता है। विदेशियों के लिए यहाँ पर 650 रुपए का शुल्क लगता है, जबकि नेपाल के लोगों के लिए सिर्फ 10 रुपए का शुल्क देय है।

बरदिया नेशनल पार्क

यह पार्क 1984 में स्थापित किया गया था। बरदिया नेशनल पार्क 968 वर्ग किमी. क्षेत्र में फैला हुआ है। यह काठमांडू से 525 किमी. की दूरी पर मध्य-पश्चिमी तराई क्षेत्र में करनारी नदी के किनारे स्थित है। इस पार्क में

बरदिया नेशनल पार्क

स्तनधारियों की 33 प्रजातियों के साथ-साथ पक्षियों की भी 250 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। विशिष्ट पक्षियों की प्रजातियों में कारमारैंट और हीरोन्स की 5 प्रजातियाँ, इग्रेट की 4 प्रजातियाँ, कबूतरों और किंगफिशर की 4 प्रजातियाँ, कठफोड़वा की 10 प्रजातियाँ और बुलबुल एवं सनवर्ड की 5 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। स्तनधारियों में चीते, छिपकली, तेंदुआ, मंगूस, सियार, बंदर, भालू, नीलगाय, जंगली सुअर इत्यादि पाए जाते हैं। मछली पकड़ने का भी आनंद यहाँ पर लिया जा सकता है। इस पार्क से होकर बहनेवाली नदियों में बाबई और भैरी के किनारे बैठकर आप डाल्फिन भी देख सकते हैं।

सगरमाथा नेशनल पार्क

सगरमाथा नेशनल पार्क 1976 में स्थापित किया गया था। यह पार्क एक हजार 148 किमी. के क्षेत्र में फैला हुआ है। इसे 1979 में यूनेस्को ने वर्ल्ड

सगरमाथा नेशनल पार्क

हैरीटेज साइट में शामिल किया गया था। यह खुंबू क्षेत्र में काठमांडू के उत्तर-पूर्व में स्थित है। विश्व की सबसे ऊँची चोटी, जिसे नेपाली सगरमाथा कहते

हैं और विश्व में इसे माउंट एवरेस्ट के नाम से जाना जाता है, इसी पार्क के परिक्षेत्र में आती है। इस नेशनल पार्क के परिक्षेत्र में विश्व की 7 अन्य ऊँची चोटियाँ भी स्थित हैं। इस पार्क में भी स्तनधारियों की तमाम प्रजातियाँ और 108 पक्षियों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

लंगटंग नेशनल पार्क

नेपाल की राजधानी काठमांडू से 32 किमी. की दूरी पर यह पार्क स्थित है। यह पूर्व की दिशा में पड़ता है और एक हजार 710 किमी. का क्षेत्र घेरे हुए

लंगटंग नेशनल पार्क

है। इस पार्क की स्थापना 1976 में की गई थी। इस वन क्षेत्र की 25 प्रतिशत भूमि पर ओक, सागौन एवं चीड़ के कीमती वृक्ष है। यहाँ पर 30 स्तनधारियों और 160 पक्षियों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं। तंगटंग घाटी में प्राचीन मंदिर और गाँव हैं, तो ग्लेशियर और गोसाई कुंड व पंच पोखरी भी दर्शनीय स्थल हैं। यह पार्क भी अपने प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है।

रारा नेशनल पार्क

यह नेपाल का सबसे छोटा पार्क है, जो मात्र 106 किमी. के क्षेत्र में फैला है। यह नेपाल की राजधानी काठमांडू से 371 किमी. की दूरी पर पूर्व–

रारा नेशनल पार्क

पश्चिम दिशा में है। रारा नेशनल पार्क में हिमालयी काला भालू, तेंदुआ एवं लाल पांडा पाया जाता है। यहाँ की रारा झील प्राकृतिक सुंदरता में चार चाँद लगा देती है। यहाँ से चुचेमारा चोटी भी साफ नजर आती है।

शे नेशनल पार्क, फोकसुंडो

यह नेपाल का सबसे बड़ा पार्क है, जो 3 हजार 555 वर्ग किमी.

शे नेशनल पार्क, फोकसुंडा

के क्षेत्र में फैला हुआ है। यह पार्क डोल्पा एवं मुगु के पहाड़ी इलाके में स्थापित है। इस पार्क की स्थापना 1984 में हुई थी। यहाँ के मुख्य आकर्षण हैं—फोकसुडो झील, रिग्मो झील और उनका सुंदर किनारा, खूबसूरत जल प्रपात तथा प्राचीन बौद्ध मंदिर। यहाँ से एक जल प्रपात 150 मीटर की ऊँचाई से गिरता है और यह नेपाल का सबसे ज्यादा ऊँचाई से गिरनेवाला जल प्रपात है।

खपटह नेशनल पार्क

इस पार्क की स्थापना 1984 में की गई थी। यह पार्क 225 वर्ग किमी. क्षेत्र में फैला हुआ है। इस पार्क में चीड़, देवदार और फर के वृक्ष बहुतायत

खपटह नेशनल पार्क

में पाए जाते हैं। औषधीय महत्त्व के कई पौधे इस पार्क मिलते हैं। इस पार्क की धार्मिक महत्ता भी है। यहाँ स्वामी सच्चिदानंद, जो कि खपटह स्वामी के नाम से भी जाने जाते हैं, उनका आश्रम भी यहीं पर है। इसके अलावा, सहस्र लिंग का एक प्रसिद्ध मंदिर भी है।

काठमांडू स्थित दर्शनीय स्थल

काठमांडू कई मायनों में मुझे देहरादून से काफी मिलता-जुलता लगा। देहरादून के जौलीग्रंट की तरह पहाड़ियों से घिरा हवाई अड्डा नयनाभिराम दृश्य प्रस्तुत करता है। मुझे बताया गया कि काठमांडू के हवाई अड्डे में लैंड करने के लिए विशेष अनुभव की आवश्यकता होती है। काठमांडू में संपूर्ण नेपाल के दर्शन हो जाते हैं। काठमांडू में आगे वर्णित दर्शनीय स्थल हैं। काठमांडू एक आधुनिक शहर होने के साथ यहाँ पर पारंपरिक मंदिरों और भवनों की वास्तुकला देखने से ही बनती है। एक और सदियों पुराना पशुपतिनाथ मंदिर, दूसरी ओर पाश्चात्य रंग में रँगा ठमेल बाजार देशी-विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है।

गार्डन ऑफ ड्रीम

थामेल एवं पूर्व रॉयल पैलेस के समीप यह सुंदर और ऐतिहासिक गार्डन ऑफ सिक्स सीजन के नाम से प्रसिद्ध है, जिसे 1920 ई. में स्थापित किया

गार्डन ऑफ ड्रीम

गया था। इस उद्यान की खास बात यह है कि इसे एडवर्डियन स्टाइल में डिजाइन किया गया है। देश-विदेश के पर्यटक इस सुंदर जगह को देखने दूर-दूर से आते हैं। देश-विदेश से आए सैलानियों से भरे इस उपवन का नजारा सायंकाल बहुत ही खूबसूरत होता है।

फ्रीक स्ट्रीट

यह काठमांडू की सबसे महत्त्वपूर्ण सड़क है, जहाँ सैलानियों की भीड़ उमड़ती है। इसके अलावा, काठमांडू में स्वयंभू चौक, थमेल चौक पर्यटन

फ्रीक स्ट्रीट काठमांडू

के मुख्य आकर्षण हैं। सड़क के किनारे परंपरागत सामान बेचने की दुकानें सजी रहती हैं।

काठमांडू दरबार स्क्वायर, पाटन और भक्तपुर दरबार स्क्वायर। भक्तपुर में काफी लंबे-चौड़े क्षेत्र में कई भवनों, मंदिरों आदि में कलात्मक नमूना देखा जा सकता है। यहाँ पर पचपन खिड़कियों का सुंदर भवन कलात्मक लकड़ी का अद्‌भुत नमूना पेश करता है।

नगरकोट

यह काठमांडू से 32 किमी. की दूरी पर काफी ऊँचाई पर स्थित है। इस स्थान का खास महत्त्व इसलिए भी है कि यहाँ से प्रात:काल सूरज निकलने

नगरकोट

का मनोरम दृश्य देखा जाता है। सूर्योदय का दृश्य बरबस सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। इसके लिए पर्यटक रात में ही नगरकोट पहुँच जाते हैं। ठहरने के लिए कई होटल आदि यहाँ पर हैं। यहाँ पर अन्य स्थानों की अपेक्षा कुछ अधिक ही ठंड रहती है। नगरकोट की काफी कुछ समानता मुझे उत्तराखंड के पर्यटक केंद्र रानीखेत जैसी लगती है, जहाँ साफ मौसम में संपूर्ण हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखला का मनमोहक दर्शन मन और मस्तिष्क को एक नई स्फूर्ति प्रदान करता है।

पोखरा

पोखरा विश्व के सबसे खूबसूरत शहरों में शुमार है। यह नेपाल का दूसरा बड़ा पर्यटक स्थल है, जो काठमांडू से 200 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह सुरम्य पर्यटक केंद्र नेपाल के मध्य भाग में स्थित है। यहाँ पर प्रकृति कुछ ज्यादा ही मेहरबान है। यहाँ से हिमालय पर्वत श्रेणियों को अपेक्षाकृत नजदीक

पर्यटक स्थल पोखरा

से देखा जा सकता है। अन्नपूर्णा, धौलगिरी और मान्सलू चोटियों को यहाँ निकट से देखा जा सकता है। यह कुदरत का अद्‌भुत करिश्मा ही है कि 800 मीटर की ऊँचाई पर बसे पोखरा से 8000 मीटर से भी ऊँचे पहाड़ सिर्फ 25–30 किमी. की दूरी पर स्थित हैं। पहाड़ों के अलावा, झीलें, नदियाँ, झरनों के साथ मंदिर, स्तूप और म्यूजियम भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। यहाँ भी हवाई अड्‌डा है। सड़कें अच्छी हैं। बाजार भी सजे-धजे रहते हैं। यहाँ पर खरीददारी का भरपूर मजा लिया जा सकता है। अब तो एक कैसिनो भी खुल गया है।

पहाड़ों की वादियों से सजे शहर में पहाड़ों की छाया जब झीलों के लहराते पानी पर पड़ती है, तो उस समय का दृश्य ऐसा लगता है कि मानो किसी कलाकार ने अपनी कला को अंजाम दे दिया है। यहाँ पर भी सूर्योदय के दर्शन के लिए लोग सारंगकोट में 1591 मीटर की ऊँचाई पर अलस्सुबह ही पहुँच जाते हैं। जब सूरज की पहली किरण बर्फ जमे पहाड़ों पर पड़ती है, तो उस समय की सुनहरी किरणें पहाड़ का शृंगार कर देती हैं और प्रकृति की खूबसूरती में खो जाता है। प्रकृति का यह अद्‌भुत दृश्य कभी न भूलनेवाला बन जाता है।

पोखरा को झीलों का शहर भी कहते हैं। पोखरा में आठ झीलें हैं—फेवा,

पर्यटक स्थल पोखरा का नैसर्गिक सौंदर्य

बनगास, रूपा, मैदी, दीपपांग, गुंडे, मालदी, खास्त। फेवा झील में तो बाराही मंदिर भी है, जहाँ लोग दर्शन करने जाते हैं। इसमें बोटिंग, स्वीमिंग, सनवाचिंग आदि को अपना शौक बना सकते हैं। यहाँ पर काली-गंडक नदी में विश्व में सबसे गहराईवाला स्थान है। यह नदी कहीं अंडरग्राउंड है, तो कहीं सिर्फ दो मीटर चौड़ी और कहीं-कहीं तो यह 40 मीटर गहरी है। महेंद्र पुल, के.एल. सिंह ब्रिज, रामघाट, पृथ्वी चौक से इस नदी का उफान देखा जा सकता है। झीलों, नदियों के साथ देवी फाल अर्थात् मनमोहन झरना मनमस्तिष्क को ताजगी देता है। यहीं पर गुप्लेश्वर महादेव गुफा के अंदर शिवजी का मंदिर दर्शनीय है। इनके अलावा, गुफाएँ भी आनंदित करती हैं। पोखरा में इंटरनेशनल म्यूजियम और गोरखा मेमोरियल म्यूजियम अपनी-अपनी कहानी बताकर इतिहास से परिचित कराते हैं। तितली म्यूजियम का भी भ्रमण किया जा सकता है। यहाँ पर प्रसिद्ध विंध्यवासिनी मंदिर पहाड़ी पर स्थित है। कुछ बौद्ध स्तूप भी यहाँ दर्शनीय हैं। भद्रकाली मंदिर में भी श्रद्धालु दर्शनार्थ आते हैं।

नेपाल कैसे पहुँचा जाए

नेपाल जाने के लिए दिल्ली, मुंबई, बनारस, कलकत्ता से काठमांडू की

उड़ानें हैं। दिल्ली से बस द्वारा काठमांडू जाया जा सकता है। उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तर-पूर्व भारत और उत्तराखंड के सड़क मार्ग द्वारा भी नेपाल जा सकते हैं। पोखरा के लिए वायुमार्ग द्वारा दिल्ली और वाराणसी के अलावा भैरहवा से वायुयान की सुविधा उपलब्ध है। काठमांडू से पोखरा के लिए कई हवाई उड़ानें हैं। काठमांडू से पोखरा हवाई यात्रा का समय 20 से 25 मिनट है। सड़क मार्ग से उत्तर प्रदेश और बिहार के सीमावर्ती स्थानों से काठमांडू और पोखरा के लिए बस सेवा भी उपलब्ध है। बस द्वारा सौनोली बार्डर से नेपाल में प्रविष्ट हो सकते हैं। कम छुट्टियाँ हों, तो भी नेपाल में पूरा आनंद लिया जा सकता है, क्योंकि एक साथ बहुत कुछ देखने को यहाँ पर मिल सकता है। इसके अलावा पैराग्लाइडिंग, अल्ट्रा लाइट, माउंटेन फ्लाइट, हेली-सर्विस, माउंटेन-बाइकिंग, गोल्फ, राफ्टिंग, मेडीटेशन, योगा, मसाज, आयुर्वेद, बटरफ्लाई आदि का भी भरपूर आनंद लिया जा सकता है। नेपाल में हवाई सेवाओं की अच्छी अवस्थापना है। 40 से अधिक हवाई अड्डों के माध्यम से ये देश पूरी दुनिया से जुड़ा है।

भारतीयों को नेपाल जाने के लिए किसी वीजा की जरूरत नहीं होती है। उन्हें वहाँ पर जाने के लिए एक सरकारी फोटो पहचान-पत्र दिखाना जरूरी होता है, जो कि पासपोर्ट भी हो सकता है और पासपोर्ट भी न हो, तो मतदाता पहचान-पत्र से काम चलाया जा सकता है। नेपाल का पर्यटन उद्योग वहाँ की आय का प्रमुख स्रोत माना जाता है। काठमांडू का हवाई अड्डा बहुत कुछ भारतीय हवाई अड्डों की तरह ही दिखता है। आप यहाँ पर नेपाली मुद्रा ले सकते हैं, हालाँकि नेपाल में भारतीय मुद्रा हर जगह मान्य है। हवाई अड्डे पर पर्यटक स्थलों की सारी जानकारी उपलब्ध कराने का अच्छा प्रबंध है।

आतिथ्य सत्कार में नेपाल बेजोड़ है। नेपाल की राजधानी काठमांडू और भारत के मध्य वोल्वो बस सेवा का प्रबंध भी किया गया है। मेरा आपको सुझाव है कि आप एक बार नेपाल अवश्य जाएँ। मेरा पूर्ण विश्वास है कि आप वहाँ के नैसर्गिक सौंदर्य से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेंगे।

□

10

आन-बान-शान के प्रतीक गोरखा

गोरखा वीरता के प्रहरी

फील्ड मार्शल मानेक शॉ ने एक बार कहा था कि 'अगर कोई यह कहे कि वह मौत से नहीं डरता, तो या तो वह झूठ बोल रहा है, या फिर वह गोरखा है।' नेपाली योद्धा पूरे विश्व में अपने पराक्रम और अपनी वीरता के लिए जाने जाते हैं। अद्वितीय साहस का परिचय देते हुए वीर गोरखाओं ने न

प्रथम विश्व युद्ध के गोरखा सैनिक

द्वितीय विश्व युद्ध में गुरखा सैनिक

केवल भारतीय उप-महाद्वीप में, बल्कि लंदन, बाँग्लादेश, श्रीलंका, संयुक्त राष्ट्र, शांति सेना, जर्मनी, उत्तर अफ्रीका, लेबनान, सियरा लोन से लेकर फ्रांस, फिलिस्तीन, अर्जेंटिना, अफगानिस्तान, इराक आदि देशों में अपने अद्वितीय शौर्य पराक्रम एवं साहस का परिचय दिया है।

इतिहास

24 अप्रैल, 1815 को पहली बार गोरखाओं को भारतीय सेना में शामिल किया गया। कहा जाता है कि एंग्लो नेपाल युद्ध (वर्ष 1814 से 1816) में गोरखाओं के अद्‌भुत पराक्रम से प्रभावित होकर इन्हें ब्रिटिश सेना में सम्मिलित किया गया। प्रारंभ में इन्हें 'नसीरो रेजीमेंट' का नाम दिया गया। तत्पश्चात् उसे किंग जॉर्ज गोरखा राइफल कहा जाने लगा। भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत, नेपाल व ब्रिटेन के मध्य एक करार हुआ, जिसके तहत छह रेजीमेंट भारत को मिलीं।

आजाद भारत में ये छह गोरखा रेजीमेंट क्रमशः 1 जीआर, 3 जीआर, 4 जीआर, 5 जीआर, 8 एवं 9 जीआर भारतीय सेना में सम्मिलित हुईं, जबकि 2 जीआर व 6,7,10 जीआर ब्रिटिश सेना में शामिल की गईं। 11 जीआर से एक नई रेजीमेंट का गठन किया गया। गोरखा सैनिकों ने वर्ष 1947-48

गोरखा प्रशिक्षण केंद्र सुबाथु हिमाचल प्रदेश

में उड़ी सेक्टर, 1962 में लद्दाख, 1965 तथा 1971 में कश्मीर में अपने अदम्य साहस, शौर्य, पराक्रम के बल पर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। गोरखा राइफल का रेजीमेंटल चिह्न दो खुखरी (विशिष्ट प्रकार का मुड़ा हुआ चाकू) है, जो गोरखा सैनिकों का व्यक्तिगत शस्त्र है। दशहरे के पर्व पर बड़े उत्साह से सभी लोग एक स्थान पर एकजुट होकर अपने आराध्य को जानवरों की बलि देते हैं। बलि प्रथा उत्तराखंड व हिमाचल प्रदेश और अन्य हिमालयी पर्वतीय क्षेत्रों में भी देखने को मिलती है। साधारणतया देखने पर कई रीति-रिवाज गढ़वाल, कुमाऊँ, हिमालय के मिलते-जुलते हैं। गोरखा रेजीमेंट का युद्धनाद 'जय, महाकाली, आयो गोरखाली' है, जिसका अर्थ होता है माँ काली की जय और गोरखा आ गए हैं। वर्ष 1845, 1846 और 1848-49 के प्रथम और द्वितीय एंग्लो सिख युद्ध में सिखों की पराजय का मुख्य कारण गोरखाओं का पराक्रम ही रहा। वर्ष 1852-1859 में गोरखा योद्धाओं ने ब्रिटिश सेना का साथ दिया और उनकी सिरमौर बटालियन को

रानी की ओर से बहादुरी और शौर्य वफादारी के लिए सम्मानित किया गया। इसके पश्चात् 1878–1880 युद्ध में भी अफगानिस्तान में रूसी प्रभाव को समाप्त करने के लिए पाँच गोरखा रेजीमेंट की तैनाती की गई। काफी संघर्ष के बाद अफगान सेनाओं को पराजय का मुँह देखना पड़ा। प्रथम विश्व युद्ध 1914–18 में 90,000 से अधिक गोरखा सैनिकों ने ब्रिटिश साम्राज्य के तहत अपनी वीरता की कहानी इतिहास में अंकित करवाई।

प्रथम विश्वयुद्ध में गुरखा रेजीमेंट ने ब्रिटिश भारतीय सेना के साथ कार्य किया। कॉनवेल्थ आर्मी के महत्त्वपूर्ण हिस्से के रूप में गोरखा सैनिकों ने मोंटे कैसिनों पश्चित से पूर्व में रंगून में अपना श्रेष्ठतम प्रदर्शन कर युद्ध में अपने आपकी श्रेष्ठ योद्धा के रूप में पहचान बनाई।

A one-man army

Gurkha used 400 bullets, 17 grenades, a mine and even a tripod to defeat 30 Taliban on his own

सार्जेंट दीप प्रसाद तालिबानियों का काल

नेपाल के इन योद्धाओं ने जहाँ अपने आपको सर्वश्रेष्ठ योद्धा के रूप में स्थापित किया, वहीं सर्वोच्च बलिदान की परंपरा का निर्वाह करते हुए 20,000 से अधिक सैनिकों ने अपने प्राण तक न्योछावर कर दिए। वर्ष 1930 में नार्थ फ्रंटियर प्राविंस में वीर गोरखाओं ने अपने पराक्रम का लोहा मनवाया। वर्ष 1939 से 1945 तक द्वितीय विश्व युद्ध में एक लाख 37,000 गोरखाओं को ब्रिटिश आर्मी की सेवा में लगाया गया, जिसमें से 23000 से ज्यादा वीर जवान वीरगति को प्राप्त हुए। 8 जुलाई, 1939 को जन्मे रामबहादुर लिंबे को सर्वोच्च सम्मान, 'विक्टोरिया क्रास' से सम्मानित किया गया। इंग्लैड, सिंगापुर, थाईलैंड के अतिरिक्त काफी गोरखा लोग हांगकांग में भी रहते हैं। ये मुख्यत: वहाँ की निजी सुरक्षा एजेंसियों में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। वर्ष 1937 के बाद काफी गोरखा सैनिक मलायन सशस्त्र बल की सेवाओं में शामिल हुए। गोरखा सैनिकों के युद्ध कौशल व उनके समर्पण के चलते संयुक्त राज अमेरिका की नौसेना ने भी बहरीन स्थित अपने ठिकानों हेतु और काबुल, अफगानिस्तान में अपने दूतावास की सुरक्षा हेतु गोरखाओं को नियुक्त कर रखा है।

शौर्य सम्मान की गाथा

वर्ष 2015 को गोरखा अपने सैन्य गौरवपूर्ण इतिहास की 200वीं वर्षगाँठ मना चुके हैं। विश्व में सर्वश्रेष्ठ योद्धा के रूप में अपने को स्थापित कर चुके हैं। गोरखा न केवल भारतीय सेना, बल्कि ब्रिटिश सेना, सिंगापुर सेना एवं ब्रूनई के सुरक्षा बलों में भी नित अपनी शौर्य गाथाएँ लिख रहे हैं। गोरखा शब्द का उद्‌भव हिंदू संत गुरु गोरखनाथ से आया है। गोरखनाथ मूलत: गौरक्षा अर्थात् गाय का रक्षक है। सर राल्फ टरनर, जिन्होंने तीसरी क्वीन गुरखा राइफल में 1914–18 तक गोरखा यूनिटों का नेतृत्व किया था, उन्होंने गोरखा सैनिकों की वीरता और समर्पण की पराकाष्ठा की चर्चा की है। उन्होंने गोरखा सैनिकों के विषय में लिखा है, 'वीरों में शूरवीर, उदारों में अत्यंत उदार किसी भी देश के पास आपसे वफादार मित्र नहीं हैं।'

अफगानिस्तान में आतंक विरोधी अभियान 17 सितंबर, 2010 में हेलमंड की नियंत्रण पोस्ट पर अद्‌भुत साहस का परिचय देते हुए 30 तालिबानियों का समूल नाश करनेवाले सार्जेंट दीपप्रसाद पुन की वीर गाथा के चर्चे न केवल ब्रिटेन और नेपाल में अपितु पूरे विश्व में गूँजते दिखाई दिए। इसके लिए उन्हें मिलिट्री क्रास से सम्मानित किया गया। सार्जेंट पुन: की अद्वितीय वीरता का जिक्र करते हुए प्रिंस हैरी ने उन्हें बधाई दी।

हिम्मत का दूसरा नाम गोरखा जवान है। ब्रिटिश साम्राज्य की ओर से पहले विश्वयुद्ध में पहली बार बड़ी संख्या में गुरखा सैनिक भारतीय उप-महाद्वीप से बाहर युद्ध के लिए गए। हिमालय की तलहटी में बसा एक

गोरखा प्रशिक्षण केंद्र सुबाथु हिमाचल प्रदेश

जिला है गोरखा, जो आज भी अपने मशहूर योद्धाओं के लिए सुविख्यात है। गोरखा कोई जाति नहीं, बल्कि सुरवार, गुरंग, राय, मागर, लिंबू आदि जातियों के लोग हैं। दुश्मन के दिल में खौफ पैदा करनेवाले गुरखाओं के बारे में यह प्रसिद्ध है कि अगर खुखरी बाहर निकल गई, तो बिना खून बहाए म्यान में वापस नहीं जाती है। ब्रिटिश गोरखा वेलफेयर सोसाइटी के टिकेंद्र दीवान कहते हैं, 'हिम्मत और वफादारी के साथ जुड़ी मासूमियत गोरखा सैनिकों की ख्याति का कारण है।'

इसे विडंबना ही कहेंगे कि ब्रिटिश सेना के लिए इतना बलिदान देने के बावजूद लंबे समय तक उन्हें ब्रिटेन में रहने का अधिकार नहीं था। सैनिक सेवा के तुरंत बाद उन्हें वापस नेपाल भेज दिया जाता है। इसके अलावा, उन्हें साथी ब्रिटिश सैनिकों की तुलना में कम पेंशन मिलती थी। वर्ष 2007 से ब्रिटिश सरकार ने उन्हें 1997 से समान पेंशन देने का फैसला किया। गुरखा सैनिकों की वीरता देखते हुए इराकी संघर्ष में भी बगदाद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा और विश्वविख्यात अलरशीद होटल की सुरक्षा का जिम्मा इन जाँबाज प्रहरियों को दिया गया। यहाँ पर मैं बताना चाहूँगा कि अलरशीद होटल में सारे विदेशी राजनयिक एवं अति-विशिष्ट व्यक्ति रह रहे हैं। 1/11 गुरखा राइफल, जिसका नेतृत्व ले. मनोज पांडेय ने किया, उनकी वीरता के कारनामों पर बॉलीवुड की फिल्म एल.ओ.सी. कारगिल बनी है।

भारतीय सेना वर्तमान में 42 बटालियन, 7 गोरखा रेजीमेंट में कार्य कर रही है। भारतीय सेना में 40,000 से अधिक गोरखा आज भी कार्य कर रहे हैं, जो कि 7 रेजीमेंट से आते हैं। हाल ही में सेवानिवृत्त हुए भारतीय सेना प्रमुख जनरल दलबीर सिंह सुहाग भी गोरखा रेजीमेंट से ही थे। वर्ष 1815 में ब्रिटिश राज ने सुबाथू हिमाचल प्रदेश में एक केटोनमेंट की आधारशिला रखी।

सुबाथू जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश एक छोटा सा नगर है, जहाँ सेना कैंटोनमेंट के बीच ब्रिटिशकालीन भवन दिखाई देते हैं। आज भी यहाँ पर गुरखा प्रशिक्षण केंद्र है। वर्ष 1829 में लार्ड विलियम्स बेंटिक के लिए

वाइसरॉयल लॉज की स्थापना की गई थी। 1837 में प्रसिद्ध अमेरिकी मिशनरी डॉक्टर मारकस ने यहाँ पर अपना केंद्र बनाया। इन्हीं मिशनरियों में एक सत्यानंद स्टोवस हुए, जिन्होंने कोटगढ़ को घर बनाकर सेवा द्वारा पूरे क्षेत्र की आर्थिकी बदल दी। अंग्रेजों द्वारा 4000 फीट की ऊँचाई पर स्थित सुबाथू अपने ब्रिटिशकालीन भवनों के लिए विख्यात है। विश्वविख्यात सनावर विद्यालय के संस्थापक हेनरी लॉरेंस, उनकी पत्नी होनोरिया और उनकी छह वर्षीय पुत्री लितिशीया का स्मारक यहाँ पर मौजूद है। अगर आप कभी सुबाथू जाएँ तो वहाँ पर आपको उप-निवेशवादी डिजाइन के भवन देखने को मिलेंगे।

राजकुमार हैरी, जिन्होंने दस वर्ष की सेवाएँ ब्रिटिश सेना को दी हैं, उन्होंने गोरखा सैनिकों की वीरता के विषय में कहा, "गोरखा को मैं सलाम

सुबाथू कैंट हिमाचल प्रदेश

करता हूँ।" गोरखा अद्वितीय हैं। वे आगे लिखते हैं, "उनकी इच्छा गोरखा यूनिट में सेवा करने की थी, जो पूरी नहीं हो सकी।" वीरता के लिए गोरखाओं को भारत में भी पूरा सम्मान मिला है।

वर्ष 1962 में भारत-चीन संघर्ष के दौरान 1/8 गोरखा राइफल के

मेजर धन सिंह थापा को परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। 11 गोरखा राइफल के लेफ्टीनेंट मनोज कुमार पांडेय को ऑपरेशन विजय के लिए वीर चक्र से सम्मानित किया गया। 5/5 गोरखा राइफल के वीर जाँबाज नायक नर बहादुर को पहला अशोक चक्र दिया गया। अदम्य साहस के लिए गुरखा रेजीमेंट को 26 विक्टोरिया क्रास से सम्मानित किया गया।

□

11

नेपाल : शिक्षा, विकास और समृद्धि

नेपाल में भारत की तर्ज पर गुरुकुल शिक्षा का प्रचलन था। नेपाल में वर्ष 1853 में पहला गुरुकुल विद्यालय स्थापित किया गया। इसमें अधिकतर उच्च वर्ग के नेपाल के छात्र-छात्राएँ आते थे। नेपाल में एक वर्ग विशेष को ही शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। नेपाल के अधिकतर लोग उच्च शिक्षा के लिए इलाहाबाद, बनारस, लखनऊ, दिल्ली, इंग्लैंड एवं अन्य यूरोपीय देशों में जाते रहे हैं। आज भी नेपाल से हजारों विद्यार्थी देहरादून, दिल्ली, बनारस, इलाहाबाद, पूना, बैंगलौर जाते हैं।

नेपाल-भारत लाइब्रेरी

नेपाल का शैक्षिक इतिहास

नेपाल के शिक्षा मंत्रालय की नींव वर्ष 1951 में पड़ी थी। इस मंत्रालय के अधीन नेपाल में शिक्षा के सभी आयामों की देख-रेख करना था। वर्ष

शिक्षा से रोजगार के बढ़ते अवसर-काठमांडू ट्रेड टॉवर

1951 से पहले शिक्षा की व्यवस्था मात्र नेपाली राजपरिवार, उनके संबंधियों और आर्थिक रूप में समृद्ध लोगों के लिए सीमित थी।

नेपाल में आधुनिक शिक्षा की शुरुआत प्रधानमंत्री जंगबहादुर राणा की विदेश यात्रा के बाद सन् 1854 में स्थापित दरबार हाईस्कूल से हुई थी। इससे पहले नेपाल में कुछ धर्मशास्त्रीय दर्शन पर आधारित शिक्षा दी जाती थी। आधुनिक शिक्षा की शुरुआत 1854 में होने के बावजूद यह आम नेपाली जनता के लिए सर्वसुलभ नहीं थी, लेकिन देश के विभिन्न भागों में कुछ विद्यालय दरबार हाईस्कूल की शुरुआत के बाद खुलना शुरू हुए। नेपाल का पहला उच्च शिक्षा केंद्र काठमांडू में राणा त्रिचंद कैंपस है। प्रधानमंत्री राणा चंद्र शमशेर ने अपने साथ राजा त्रिभुवन नाम जोड़ के इस कैंपस का नाम रखा

था। इस कैंपस की स्थापना के बाद नेपाल में उच्च शिक्षा का अर्जन बहुत सहज होने लगा था, लेकिन सन् 1959 तक भी देश में एक भी विश्वविद्यालय स्थापित नहीं हो सका था। राजनीतिक परिवर्तन के पश्चात् राणा शासन मुक्त देश ने अंतत: 1959 में त्रिभुवन विश्वविद्यालय की स्थापना की। उसके बाद महेंद्र संस्कृत विश्वविद्यालय के साथ अन्य विश्वविद्यालय खुलते गए। हाल ही में सरकार ने 4 नए विश्वविद्यालय स्थापित करने की घोषणा की है। नेपाल की शिक्षा का सबसे मुख्य योजनाकार शिक्षा मंत्रालय है। इसके अलावा शिक्षा विभाग, पाँच क्षेत्रीय शिक्षा निदेशालय, पचहत्तर जिला शिक्षा कार्यालय, परीक्षा नियंत्रक कार्यालय, सानोठिमी उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद, पाठ्यक्रम विकास केंद्र, विभिन्न विश्वविद्यालयों के परीक्षा नियंत्रक कार्यालय नेपाल की शिक्षा का विकास विस्तार तथा नियंत्रण के क्षेत्र में कार्यरत हैं।

पिछले दो दशकों में शैक्षिक क्षेत्र में व्यापक सुधार हुआ है। जहाँ वर्ष 1951 में नेपाल में 10 हजार विद्यार्थी 300 स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, वहीं साक्षरता दर 5 प्रतिशत के करीब थी। वर्ष 2010 में यह संख्या 49000 तक हो गई और नेपाल ने 64 प्रतिशत तक की राष्ट्रीय साक्षरता दर को प्राप्त किया। नेपाल में भारत की तरह पिछड़े, दुर्गम, सीमांत स्थानों पर शैक्षिक सुविधाओं की काफी कमी है। नेपाल में चितवन जिला 100 प्रतिशत साक्षर होने का दावा करता है। महिलाओं में शिक्षा का प्रचार-प्रसार एक प्रमुख चुनौती है। पिछले दो दशकों में कई निजी विद्यालयों ने नेपाल में पहचान बनाई है।

भारत की तरह नेपाल में शिक्षा प्राथमिक, माध्यमिक, मिडिल, वरिष्ठ माध्यमिक, स्नातक, स्नात्तकोत्तर, शोध तक मानी जाती है। पृथक्-पृथक् परिषदों के तहत नेपाल में प्राविधिक या तकनीकी शिक्षा का प्रबंध किया जाता है। कुछ अपवादों को छोड़ दिया जाए, तो नेपाल के समस्त विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं। नेपाल में 10 विश्वविद्यालय मुख्य रूप से कार्य कर रहे हैं। इनमें काठमांडू विश्वविद्यालय, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, पोखरा विश्वविद्यालय, नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय आदि

छात्राओं के लिए विद्यालय

प्रमुख हैं। नेपाल सरकार संयुक्त राष्ट्र के मानकों के अनुसार, सभी को शिक्षा प्रदान करने के लिए कृतसंकल्पित है। नेपाल में इस समय 34000 से अधिक प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय हैं। लगभग 1000 से अधिक कॉलेज एवं संबद्ध परिषदें हैं।

नेपाल के प्रमुख विश्वविद्यालय हैं—1. त्रिभुवन विश्वविद्यालय, 2. नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय (पूर्व नाम महेंद्र संस्कृत विश्वविद्यालय), 3. काठमांडू

काठमांडू इंजीनियरिंग कॉलेज

विश्वविद्यालय, 4. पूर्वांचल विश्वविद्यालय, 5. पोखरा विश्वविद्यालय, 6. लुंबिनी विश्वविद्यालय, 7. नेपाल कृषि तथा वन विश्वविद्यालय, 8. मध्य पश्चिमांचल विश्वविद्यालय, 9. सुदूर पश्चिमांचल विश्वविद्यालय, 10. खुला विश्वविद्यालय।

नेपाल में अंतरराष्ट्रीय स्तर की (जी.सी.ई.) मान्यता प्राप्त शिक्षा प्रदान करने हेतु चार प्रमुख संस्थान हैं, जिनमें ब्रिटिश कॉलेज, ग्लोबल कॉलेज इंटरनेशनल, चेल्सिया इंटरनेशनल अकादमी एवं बूढ़ा नीलकंठ विद्यालय आदि शामिल हैं।

पिछले कुछ दशकों में नेपाल की सरकार ने प्रौद्योगिकी विज्ञान एवं प्रबंधन की शिक्षा को महत्ता देते हुए उत्कृष्ट शैक्षिक संस्थानों की स्थापना की है। इसका सुखद परिणाम यह रहा है कि पिछले कुछ वर्षों में नेपाली युवा विदेशों में प्रौद्योगिकी और प्रबंधन की जिम्मेदारी भी सँभाल रहे हैं। इससे पूर्व नेपाल के लोग अधिकतर सेवा क्षेत्र में कार्यरत थे, उसमें भी अधिकतर होटल

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल

व्यवसाय, सुरक्षा एवं घरेलू कार्यों से जुड़े रहते थे। नेपाल के प्रमुख विज्ञान महाविद्यालयों में अमृत विज्ञान महाविद्यालय, ब्रिटिश कॉलेज वी.एस. निकेतन महाविद्यालय, जेवियर कॉलेज नेशनल स्कूल ऑफ साइंस, साइंस एवं डेयरी प्रौद्योगिकी विद्यालय, नेपाल विज्ञान प्रौद्योगिकी अकादमी आदि शामिल हैं। प्रबंधन महाविद्यालयों के माध्यम से प्रबंधन के क्षेत्र में कौशल एवं उद्यमिता

विकास को बढ़ावा दिया जा रहा है। प्रबंधन शिक्षा के उत्कृष्ट महाविद्यालयों में एवं चाणक्य प्रबंधन महाविद्यालय, काठमांडू प्रबंधन महाविद्यालय, लिवरपूल अंतरराष्ट्रीय संस्थान, गोपेंद्र महाविद्यालय आदि शामिल हैं।

नेपाल में मेडिकल शिक्षा

मेरा व्यक्तिगत रूप से मानना है कि नेपाल में मेडिकल शिक्षा का स्तर अन्य छोटे एवं विकासशील देशों की तुलना में काफी अच्छा है। देश में आठ से अधिक स्तरीय मेडिकल कॉलेज हैं। इनमें त्रिभुवन विश्वविद्यालय के अधीन इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसिन को सर्वोत्कृष्ट माना जाता है। भारत समेत सार्क देशों के बच्चे यहाँ पर अध्ययन हेतु आते हैं। इस संस्थान में स्नातक एवं स्नातकोत्तर शिक्षा स्तर अंतरराष्ट्रीय स्तर का है। इस संस्थान की स्थापना जापान सरकार द्वारा की गई है। भारत सहित अन्य देशों के सहयोग से कई प्रोजेक्ट इस विश्वविद्यालय में चलाए जा रहे हैं। मेडिकल काउंसिल ऑफ

इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ साइंसेज, नेपाल

इंडिया भी इस संस्थान के पाठ्यक्रमों को मान्यता देती है। नेपाल में चिकित्सा शिक्षा का दूसरा उत्कृष्ट संस्थान बी.पी. कोइराला चिकित्सा महाविद्यालय है। यह संस्थान भारतीय नेपाली मित्रता का जीता-जागता उदाहरण है। दोनों देश मिलकर क्या कर सकते हैं, यह हम इस संस्थान से भलीभाँति सीख सकते हैं। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली इसका मेंटर संस्थान है। काठमांडू स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसिन की तरह यह संस्थान भी भारतीय विद्यार्थियों के लिए उच्च मेडिकल शिक्षा हेतु सीटें आरक्षित रखता है। नेपाल में इन संस्थाओं के अतिरिक्त 6 अन्य मेडिकल कॉलेज हैं। शिक्षा जगत् में उल्लेखनीय कार्य करनेवाली भारतीय मूल की संस्था मनिपाल द्वारा भी नेपाल स्थित पोखरा में एक अंतरराष्ट्रीय स्तर के मेडिकल की स्थापना की गई है। सुरम्य पर्यटक स्थल पोखरा का यह महाविद्यालय अपने ऊँचे शैक्षिक मापदंडों के लिए जाना जाता है। इन संस्थाओं के अतिरिक्त नेपाल में जानकी मेडिकल

कोइराला मेडिकल कॉलेज

कॉलेज काठमांडू मेडिकल कॉलेज काठमांडू विश्वविद्यालय मेडिकल कॉलेज, नेपाल मेडिकल कॉलेज आदि शामिल हैं। प्रौद्योगिकी शिक्षा के क्षेत्र में नेपाल ने काफी प्रगति की है। नेपाल में 6 प्रमुख अभियांत्रिकी महाविद्यालय हैं, जिसमें गंडकी विज्ञान इंजीनियरिंग महाविद्यालय, ऑक्सफोर्ड इंजीनियरिंग एवं प्रबंधन महाविद्यालय, पोखरा इंजीनियरिंग महाविद्यालय, पश्चिमांचल परिसर, पुलचौक परिसर एवं ख्वापा अभियांत्रिकी महाविद्यालय प्रमुख हैं।

शैक्षिक पलायन

नेपाल की आर्थिकी, उसकी जनसंख्या को देखें, तो यह हैरानीवाली बात है कि नेपाल के तीस से चालीस हजार से अधिक विद्यार्थी विदेशों में उच्च शिक्षा हेतु जाते हैं। हाल के वर्षों की राजनैतिक अर्थव्यवस्था, स्तरीय विद्यालय या विश्वविद्यालय की कमी, प्राध्यापकों की कमी, नेपाल में नौकरी के अवसरों के अभाव के चलते नेपाल के विद्यार्थी उच्च शिक्षा हेतु भारत, चीन, अमेरिका, इंग्लैंड, मलेशिया, सिंगापुर, जापान आदि देशों में जाते हैं। पिछले एक दशक से जापान, कोरिया, मलेशिया, जर्मनी जानेवाले छात्र-छात्राओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि देखने को मिली है।

विदेशों में अधिकतर नेपाली विद्यार्थी व्यापार, प्रबंधन, विज्ञान, इंजीनियरिंग, होटल प्रबंधन के लिए आते हैं। पिछले कुछ वर्षों में नेपाल से अनेक मेडिकल स्नातक भी उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका, यूरोप गए हैं।

नेपाल में भारत के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अधीन तीन विश्वविद्यालय हैं, जिसमें बी.पी. कोइराला आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय, मेडिकल साइंस की राष्ट्रीय अकादमी, पाटन आयुर्विज्ञान अकादमी शामिल हैं।

भारत की तरह नेपाल में विज्ञान, कला संकाय में 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है जबकि इंजीनियरिंग, फार्मेसी, कृषि, आई.टी. प्रबंधन में चार वर्षीय पाठ्यक्रम है। पशु चिकित्सा, आयुर्विज्ञान और आर्किटेक्चर में साढ़े पाँच वर्षीय पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है।

नेपाल में उच्च शिक्षा के अवसर अत्यंत सीमित हैं। इसी कारण हजारों लोग शिक्षा के लिए विदेशों का रुख करते हैं। संसाधनों की कमीवाले विद्यार्थी चीन और भारत का रुख करते हैं। नेपाल में कई अंतरराष्ट्रीय संस्थान शिक्षा उन्नयन में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं।

शिक्षा मुख्य चुनौती

नेपाल का भारत पर आधारित मॉडल शैक्षिक दुनिया का सबसे युवा

मॉडल है। हिंदुस्तानी शैक्षणिक मॉडल पर आधारित यह शैक्षिक मॉडल बच्चों के सर्वांगीण विकास की बात तो करता है, परंतु इसमें बदलते समय के साथ कई आमूलचूल परिवर्तन आवश्यक हैं। शिक्षा का प्रसार महिलाओं, पिछड़े-दलित वर्गों में काफी कम है। स्कूली शिक्षा की सबसे बड़ी चुनौती गरीबी है। अध्यापकों, संसाधनों की कमी, संस्थागत आधारभूत ढाँचे की कमी, शिक्षा उपरांत रोजगार के अवसरों की कमी मुख्य चुनौतियाँ हैं। सीमांत पर्वतीय व पिछड़े क्षेत्रों में एवं नेपाल में शिक्षा के प्रचार-प्रसार की अत्यंत आवश्यकता है। आनेवाले समय में शैक्षिक उन्नयन की दिशा में सरकार को अपनी पूरी क्षमता से कार्य करना होगा। देश की उच्च शिक्षा में निजी क्षेत्रों को प्रोत्साहित करना श्रेयस्कर रहेगा, वहीं प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था को और अधिक मजबूत करना होगा।

मेरा मानना है कि नेपाल शैक्षिक जगत् में उन्नयन के मार्ग से ही नेपाल की खुशहाली का रास्ता प्रशस्त हो सकता है। नेपाल को यदि चहुँमुखी विकास के मार्ग पर अग्रसर होना है, तो उसे अपनी शिक्षा व्यवस्था को और अधिक मजबूत करना होगा; विशेषकर पर्वतीय क्षेत्रों में शिक्षा के ढाँचागत अवस्थापना विकास की तरफ ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। जहाँ ढाँचागत अवस्थापना के लिए आवश्यक निवेश जुटाना आवश्यक है, वहीं शिक्षा के उच्च मापदंडों का निर्धारण उनका अनुपालन एक कठिन चुनौती है। समाज के पिछड़े, गरीब उपेक्षित सीमावर्ती, दुर्गम क्षेत्र के लोगों को शिक्षा से जोड़ना एक दुष्कर कार्य है, जिसे शीर्ष प्राथमिकता मिलनी चाहिए। महिला, जनजाति, पिछड़ी जाति के लोगों को विशेष प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। नेपाल के अधिकतर क्षेत्रों में शिक्षा से जुड़े लोगों में क्षमता का अभाव देखने को मिलता है। सरकारी, गैर-सरकारी, विदेशी एजेंसियों में समन्वय स्थापित कर कई चुनौतियों से निपटा जा सकता है।

सीमावर्ती दूरस्थ क्षेत्रों में स्कूलों के भवन जर्जर अवस्था में हैं और अध्यापकों की भारी कमी का सामना कर रहे हैं। देखा जाए तो नेपाल में शिक्षा के अवसरों में अत्यंत असमानता देखने को मिलती है। भारत के हिमालय

की तरह महिलाओं को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता है। महिलाओं में शिक्षा के प्रचार-प्रसार की कमी है। यही चुनौती आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों में देखने को मिलती है। कौशल विकास के प्रयास अभी बहुत छोटे स्तर पर हो रहे हैं, चूँकि नेपाल के युवा बड़ी संख्या में विदेश जाते हैं, ऐसे में उनका अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार प्रशिक्षित होना अनिवार्य है। नेपाल को इस दिशा में तुरंत कार्य करने की आवश्यकता है। विशेषकर विदेशी एजेंसियों से बेहतर समन्वय स्थापित कर कौशल विकास योजनाओं का सुचारू ढंग से संचालन होना चाहिए।

इसके अतिरिक्त नेपाली शैक्षणिक संस्थाओं को विदेशी विश्वविद्यालय, शोध संस्थानों, प्रबंध संस्थानों एवं अन्य एजेंसियों से मिलकर कार्य करने चाहिए, क्योंकि इससे न केवल शैक्षिक उन्नयन होगा, बल्कि विदेश में रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। मुझे लगता है आई.आई.टी, आई.आई.एम. और एम्स की तर्ज पर शीर्ष शैक्षणिक संस्थान खोले जाने से नेपाल अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक हब के रूप में स्थापित होने की क्षमता रखता है।

□

12

नेपाल-भारत के रिश्ते अटूट

संपूर्ण विश्व में हिमालय आपदा संभावित क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। प्रत्येक वर्ष हिमालय क्षेत्र में कहीं-न-कहीं प्राकृतिक आपदा से सैकड़ों लोगों का जीवन प्राकृतिक आपदा की भेंट चढ़ जाता है। हाल के वर्षों में इन आपदाओं में वृद्धि दर्ज की गई है। मुझे लगता है कि प्रकृति से छेड़छाड़ पर्यावरणीय असंतुलन, ग्लोबल वार्मिंग, अँधाधुंध अनियोजित विकास, भौतिकतावाद की दौड़ ने हिमालय को आपदा की ओर धकेलने का काम किया है।

25 अप्रैल, 2015 11:56 मिनट पर नेपाल में भयानक भूकंप आया। रिक्टर स्केल पर 7.8 की तीव्रतावाला यह विनाशकारी भूकंप नेपाल के इतिहास में एक प्रलयंकारी काला दिन था। हजारों भवन देखते-देखते मटियामेट हो गए और दस हजार से अधिक लोग इस वीभत्स दुर्घटना में काल कवलित हो गए। नेपाल में आए इस भीषण प्रलय से सबसे पहले भारत ने युद्ध स्तर पर आपदा सहायता भेजने का निर्णय किया। कुछ घंटों में ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में नेपाल को तुरंत सहायता उपलब्ध कराई गई। यह हमारे दोनों देशों की निकटता का परिणाम था कि भारत ने नेपाल की इस आपदा को अपनी आपदा माना। चाहे भारत की वर्तमान सरकार हो, पिछली सरकार हो या नेपाल में प्रधानमंत्री श्री प्रचंड की सरकार हो या आज की सरकार, सबका पूरा जोर इस बात पर है कि नेपाल-भारत संबंधों में परस्पर विश्वास का माहौल कायम हो और संबंध प्रगाढ़ता की ओर अग्रसर हों। यह सर्वविदित

है कि नेपाल और भारत के संबंधों का एक अत्यंत लंबा इतिहास है। हमारे बीच परस्पर सहयोग और संबंध इतने व्यापक और बहु-आयामी हैं कि इन्हें किसी सीमा में बाँधना असंभव है। लगभग हर क्षेत्र में हम एक-दूसरे का सहयोग कर रहे हैं और करते आए हैं। कुल मिलाकर देखा जाए और कुछ एक अपवाद छोड़ दें, तो एक-दूसरे के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर आदर्श पड़ोसी धर्म का निर्वाह किया है। यह सच है कि समय-समय पर कुछ अवरोध हमारे संबंधों की राह में बाधा बनते रहे हैं, परंतु हम इन्हें दूर करते हुए आगे बढ़ते रहे हैं। यह दोनों देशों के हित में है कि नेपाल-भारत संबंधों में प्रगाढ़ता और परस्पर विश्वास का माहौल कायम हो। अगर भारत-नेपाल संबंधों की आत्मीयता में कहीं कमी आती है, तो हम उन करोड़ों लोगों के प्रति अन्याय करेंगे, जिनका भविष्य दोनों देशों के साथ जुड़ा है। दोनों देशों की परस्पर मैत्री किस प्रकार दोनों पक्षों के लिए खुशहाली लाती है, यह हम देख चुके हैं।

दोनों देशों को यह महसूस करना होगा कि दोनों के लिए एक-दूसरे के साथ के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है। मेरा स्पष्ट मानना है कि न नेपाल के पास भारत का कोई विकल्प है और न ही भारत के पास नेपाल का कोई विकल्प।

दरअसल नेपाल सन् 1768 में अपने अस्तित्व में आने के बाद भारत के लिए खास रहा है। नेपाल और भारत की सीमाएँ साझा हैं और इन खुली सीमाओं के मध्य मिली-जुली संस्कृति, मान्यताएँ, रीति-रिवाज, विशेषकर बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल की सीमा से लगे क्षेत्रों में आपसी मेल-जोल हमारे ऐतिहासिक रिश्तों को मजबूती प्रदान करता है। भारत नेपाल का सदैव से हितैषी रहा है। पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी नेपाल गए थे और उनके द्वारा दिए गए वक्तव्य को मैं विशेष रूप से उद्धृत करना चाहता हूँ, क्योंकि यह पूरे भारतीयों की भावनाओं को व्यक्त करता है। "भारत-नेपाल के रिश्ते अटूट हैं। इसे कोई चाहकर भी नहीं तोड़ सकता। नेपाल हमारा अभिन्न पड़ोसी है। भारत विकास के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। हम

चाहते हैं कि पड़ोसी होने के नाते नेपाल भी सुदृढ बने।" मुझे लगता है कि राष्ट्रपतिजी की इन पंक्तियों ने प्रत्येक भारतवासी की भावनाओं को अभिव्यक्त किया है। भारत इस हिमालयी राज्य के समावेशी विकास के लिए प्रतिबद्ध है और समय-समय पर हमने विभिन्न तरीकों से पूरे विश्व के सम्मुख अपनी प्रतिबद्धता को रेखांकित किया है।

एक ऐतिहासिक संबंध

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सत्ता सँभालने के बाद ही दोनों देशों के शीर्षस्थ नेताओं की यात्रा से और भूगोल, प्रकृति, इतिहास और संस्कृति के गहरे रिश्तों में बँधे दो भ्रातासम पड़ोसियों के बीच मित्रता के एक नए अध्याय की शुरुआत करने की उम्मीद जगी है। यह दक्षिण एशिया की प्राथमिकता को पुन: रेखांकित करती है और यह यात्रा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अपने शपथग्रहण समारोह के लिए सार्क देशों के नेताओं की मेजबानी किए जाने के पश्चात् उनकी दो बार नेपाल यात्रा व महामहिम पूर्व राष्ट्रपति का नेपाल दौरा परंपरागत मित्र राष्ट्र के प्रति प्राथमिकता को रेखांकित करते हैं।

भारतीय प्रधानमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह में सार्क देशों के राष्ट्रीय अध्यक्ष

अगर हम पूरे विश्व में देखें तो संभवत: अन्य किन्हीं दो पड़ोसियों के बीच इतने पारंपरिक, घनिष्ठ और अंतरंग संबंध नहीं हैं। इनकी जड़ें अतीत में हैं और हजारों अलग-अलग तरीकों से दैनंदिन अस्तित्व में उजागर होते हैं। तथ्य और आँकड़े अपनी कहानी कहते हैं और व्यापार तथा निवेश, संस्कृति तथा सुदृढ व्यक्तिगत संपर्कों से बने संबंधों का एक नयनाभिराम चित्र सामने लाते हैं। हमारे संबंधों में सबसे बड़ी मजबूती यह है कि भारतीय और नेपाली इतनी सहजता से अनायास घुल-मिल जाते हैं कि उन्हें एक-दूसरे के देश में मुश्किल से ही विदेशी के रूप में देखा जाता है। भारत में 60 लाख से ज्यादा नेपाली काम कर रहे हैं और ऐसे छह लाख से ज्यादा भारतीय हैं, जिन्होंने नेपाल को अपना घर बना लिया है। नेपाली भारत में बिना किसी कार्य परमिट के काम कर सकते हैं, बैंक में अपना खाता खोल सकते हैं और अपनी संपत्ति रख सकते हैं। यह संख्या आधिकारिक है। कितने ऐसे लोग होंगे, जो दर्ज नहीं हैं। सीमा पर आवागमन इतना सरल है कि महसूस ही नहीं होता है कि आप अंतरराष्ट्रीय सीमा को पार कर रहे हैं।

मुक्त सीमा ने दोनों देशों के बीच लोगों का निर्बाध आवागमन सुनिश्चित किया है। इसके अलावा, दोनों देशों के बीच प्रति सप्ताह 60 उड़ानें होती हैं। यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि नेपाल जानेवाले सभी पर्यटकों में बीस प्रतिशत भारतीय होते हैं और नेपाल जानेवाले पर्यटकों में से लगभग 40 प्रतिशत भारत होकर जाते हैं अर्थात् नेपाल और भारत के पर्यटन के क्षेत्र में नेपाल आगे बढ़ेगा, तो भारत निश्चित रूप से लाभान्वित होगा।

पौराणिक संबंध

प्राचीन कथा के अनुसार हजारों वर्ष पहले नेपाल की घाटी एक सरोवर के रूप में विद्यमान थी। यहाँ पर नाग एवं सर्प रहते थे। भगवान् विष्णु ने दक्षिण पर्वत श्रृंखला को काटकर सारे पानी को बाहर कर दिया, साथ ही यह भविष्यवाणी की कि यह स्थान देवभूमि के रूप में प्रसिद्ध होगा। आज नेपाल सचमुच में देवताओं की भूमि के रूप में विख्यात है।

भगवान् राम का जीवन प्रत्येक भारतीय के लिए आदर्श रहा है। राम कथा घर-घर में अत्यंत श्रद्धापूर्वक श्रवण की जाती है। नेपाल से भारत का संबंध भगवान् राम की ससुराल का भी है। नेपाल वंशावली नेपाल और भारत के बीच संबंधों को उजागर करती है। द्वापर युग में भगवान् कृष्ण के प्रपौत्र अनिरुद्ध का विवाह बाणासुर की पुत्री ऊषा के साथ हुआ। बाणासुर पानकोट का राजा था, जिसकी राजधानी शोणितपुर थी। एक अन्य प्राचीन कथा के अनुसार, राजा दक्ष की पुत्री सती के शव को लेकर भगवान् शिव जब क्रोध में आकर पृथ्वी लोक में घूम रहे थे, तो सती का गुह्य अंश नेपाल में गिरा। आज यह स्थान 'गुहेश्वरी' रूप में शक्तिपीठ के रूप में स्थापित है। भगवान् पशुपतिनाथ परिसर में इस मंदिर का उल्लेख हिंदू धर्मग्रंथों में मिलता है। यह मंदिर तांत्रिक विद्या के लिए विख्यात है। बौद्ध प्रचारकों को हिमालय क्षेत्र में स्थापित तत्कालीन राज्यों में प्रचार के लिए भेजा। बौद्ध धर्म ग्रंथों में संपूर्ण हिमालय को पाँच भागों में विभक्त किया गया है। इनमें नेपाल भी शामिल है। धार्मिक एकता के सूत्र में बँधे गुप्त साम्राज्य के समय से भारत और नेपाल के अच्छे संबंध थे।

महाराजस्य गुप्तप्रपौत्रस्य, महाराजस्य घटोत्कचपौत्रस्य
महाराधिराजचंद्रगुप्तपुत्रस्य
लिच्छिविदौहित्रस्य महादेव्या कुमारेदप्व्याम् उत्पत्रस्य
महाराजधिराजस्य समुद्रगुप्तथ्स्य

अर्थात—महाराज गुप्त के प्रपौत्र और महाराज घटोत्कच के प्रपौत्र महाराजाधिराज चंद्रगुप्त के लिच्छिवियों से अच्छे संबंध थे और लिच्छिवी वंश से वैवाहिक संबंध भी स्थापित हुए थे, जिनके पुत्र महाराजधिराज समुद्रगुप्त थे।

इसी प्रकार नेपाल के भगवान् पशुपतिनाथ मंदिर में स्थापित चारमुखी शिवलिंग का उल्लेख बाराहपुराण में भी मिलता है—

यावन्ति भुवि तीर्थानि आसमुद्रसरांसि च।
क्षेत्रे स्तांनि तीर्थानि आगमि-यन्ति मत्कृते॥

अहं पुनः शैलपते पादे हिमवतः शुभे।
नेपालाख्ये समुत्पत्स्ये स्वयमेवल महीतलात्॥
दीप्ततेजोमयशिराः शरीरश्च चतुर्मुखः।
शरीरेश इति ख्यातः सर्वत्र भुवनत्रये॥

अर्थात—हिमालय के उन्नत शिखरों से निकलनेवाली बागमती नदी है, जिसमें स्नान करने का फल गंगा जैसा है। यहाँ पर स्नान करके व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त होता है। बनारस गंगा की तरह बागमती नदी के किनारे नेपाली हिंदुओं का अंतिम संस्कार पुण्यकारी माना जाता है।

मुझे यह देखकर अत्यंत हर्ष हुआ कि नेपाल की यह पावन नदी बागमती, जो गंगा के समान पवित्र मानी जाती है, उसकी स्वच्छता एवं पुनः उद्धार के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। नेपाल यात्रा के दौरान मैंने स्वयंसेवी संस्थाओं को इस पुनीत यज्ञ में अपनी बढ़-चढ़कर भागीदारी निभाते हुए देखा। सबसे अधिक प्रसन्नता की बात यह है कि अनेक भारतीय एजेंसियाँ भी इस महायज्ञ में अपनी आहुति अर्पित कर रही हैं।

प्रसिद्ध ग्रंथ 'राजतरंगिणी' में भी नेपाल का उल्लेख है। इसकी रचना कश्मीर पंडित कल्हण ने की थी। इसका रचनाकाल 1148-50 ईसवी के मध्य माना गया है। इस ग्रंथ में नेपाल की 7वीं शती में मौजूदा राजनैतिक स्थिति का उल्लेख मिलता है। इसके अनुसार कश्मीरी और नेपाली राजवंशों के मध्य अच्छे संबंध थे। कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में भी नेपाल का उल्लेख आया है। वृहन्नलीतंत्र और 'बाराहीतंत्र' में भी नेपाल का नाम है। यही नहीं 'ज्योतिर्वेत्ता वराह मिहिर' ने छठवीं शती में बृहसंहिता नाम से जिस ग्रंथ की रचना की, उसमें उन्होंने लिखा कि शुक्र और चंद्रमा का विशेष संयोग नेपाल की जनता के लिए कष्टकारी है। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में भी नेपाल का उल्लेख मिलता है।

बुद्धकाल में नेपाल और भारत दोनों में इतनी नजदीकियाँ थीं कि लगता ही नहीं था, दो अलग-अलग देश हैं। महात्मा बुद्ध का जन्म लुंबिनी में हुआ था, लेकिन उन्होंने कर्म क्षेत्र के लिए भारत भूमि को ही चुना। बौद्धकाल में

हिंदुस्तान तीन विशाल भागों में विभक्त था। इन तीन भागों में जो मध्य भाग था, उसे मध्य देश (मज्झिम) कहा जाता था। मनुस्मृति के अध्याय-2, श्लोक 21 में इस मध्य देश की जो सीमा दी गई है, उसके अनुसार हिमालय और विंध्याचल के मध्य देश हैं। हिमालय क्षेत्र का कितना हिस्सा या संपूर्ण हिमालय क्षेत्र ही मध्य क्षेत्र में आता था कि नहीं, इस बारे में स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता है।

भारत-नेपाल आर्थिक सहयोग

भूगोल एवं इतिहास की अनिवार्यता के परिणामस्वरूप दोनों पड़ोसियों का आर्थिक विकास और भविष्य एक-दूसरे से जुड़े हैं। नेपाल के विदेश व्यापार का दो तिहाई भारत के साथ होता है, जिसमें द्विपक्षीय व्यापार लगभग 4.7 बिलियन डॉलर का है। नेपाल में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का 47 प्रतिशत भारत से ही आता है। भारत-नेपाल आर्थिक सहयोग की दिशा में 1996 में संशोधित व्यापार संधि दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों की केंद्र-बिंदु साबित हुई है। 1996 के बाद से, भारत में नेपाल के निर्यात में 11 गुणा वृद्धि हुई है और द्विपक्षीय व्यापार 7 गुणा से अधिक बढ़ गया है। भारतीय कंपनियाँ नेपाल में सबसे बड़ी निवेशक हैं, जिन्होंने कुछ अनुमोदित प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का लगभग 40 प्रतिशत निवेश किया है। नेपाल में लगभग 150 से अधिक भारतीय उपक्रम कार्य कर रहे हैं, जिनमें विनिर्माण, सेवाओं (बैंकिंग, बीमा, शुष्क बंदरगाह, शिक्षा और दूरसंचार), ऊर्जा क्षेत्र एवं पर्यटन उद्योग जैसे विविध क्षेत्रों के उपक्रम शामिल हैं। नेपाल में निवेशकर्ताओं में अन्य के साथ-साथ, आई.टी.सी., डाबर इंडिया, टाटा पावर, हिंदुस्तान यूनीलिवर, बी.एस.एन.एल., टी.सी.आई.एल., एम.टी.एन.एल., भारतीय स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, भारतीय जीवन बीमा निगम और एशियन पेंट्स आदि शामिल हैं। हाल ही में योग गुरु बाबा रामदेव ने नेपाल में आयुर्वेद के क्षेत्र में एक बड़ा निवेश किया है। यह प्रसन्नता का विषय है कि नेपाल से मेरे मित्र उपेंद्र महतो इसमें साझीदार हैं। योग गुरु रामदेव का आशीर्वाद मुझे सदा से

मिलता रहा है। पतंजलि योगपीठ का मुख्य केंद्र मेरे संसदीय क्षेत्र हरिद्वार में स्थित है।

बाबा रामदेव के संस्थान ने योग, अध्यात्म, स्वदेशी उत्पादों के माध्यम से भारत में एक नई आर्थिक क्रांति का संचार किया है। शायद ही विश्व इतिहास में ऐसा उदाहरण देखने को मिले कि इतने कम समय में एक निजी संस्था ने अपनी कड़ी मेहनत, अपने दृढ निश्चय, अपनी दूरदर्शिता, समर्पण से न केवल भारत में, बल्कि पूरे विश्व में अपना स्थान बनाया है।

संयुक्त आयोग

भारत–नेपाल के बीच संबंधों को सुदृढ करने हेतु संयुक्त आयोग की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसमें राजनैतिक, सुरक्षा एवं सीमा संबंधी मुद्दों, आर्थिक सहयोग एवं अवसंरचना, व्यापार एवं ट्रांजिट, ऊर्जा एवं जल संसाधन, संस्कृति, शिक्षा एवं मीडिया संबंधी मुद्दों के पाँच क्षेत्र शामिल हैं। वार्त्ता के महत्त्व की ओर इशारा करते हुए और बैठक में चर्चा के व्यापक स्वरूप के मुद्दों के चलते, विदेश, जल संसाधन, वाणिज्य, सड़क, परिवहन, रेलवे, मानव संसाधन विकास, संस्कृति मंत्रालयों के अधिकारी मंत्री समय–समय पर विचार–विमर्श करते रहते हैं।

संयुक्त आयोग के क्षेत्र के चलते, कोई भी सहजता से यह कह सकता है कि वार्त्ता के दौरान द्विपक्षीय मुद्दों के संपूर्ण परिदृश्य पर चर्चा होती है। यह अत्यंत संतोष का विषय है कि सन् 1950 की शांति एवं मैत्री संधि, जो भारत–नेपाल संबंधों का मूल सिद्धांत है, में संशोधन के मुद्दों पर भी चर्चा के दौरान बात करने की सहमति बनी। इस संधि को नेपाली राजनीतिक संस्थापन के एक विशेष वर्ग द्वारा अवैध माना जाता है, परंतु भारत ऐसा नहीं मानता है, फिर भी नई दिल्ली ने संकेत किया है कि वह नेपाली पक्ष से प्राप्त होनेवाले ठोस सुझावों को स्वीकार करने का इच्छुक है। भारत–नेपाल की सारी गलतफहमियों को दूर करने की दिशा में ठोस कदम उठाने का पक्षधर है।

विश्व परिदृश्य में एवं भारत के पड़ोस में सुरक्षा परिदृश्य के समक्ष उत्पन्न खतरों के मद्देनजर नेपाल–भारत द्वारा आतंकवाद के खिलाफ संयुक्त अभियान इस संयुक्त आयोग की महत्त्वपूर्ण प्राथमिकता है। इस संदर्भ में दोनों देशों की सुरक्षा एजेंसियाँ विस्तृत क्षेत्रों में अति सक्रिय रूप से सहयोग कर रही हैं, जिसमें गैर–कानूनी स्मगलिंग, हथियारों की तस्करी और नकली मुद्रा के मुद्दे आदि शामिल हैं। खुली सीमाओं और भारत–नेपाल सीमाओं को आतंकवादियों द्वारा वाहक के रूप में उपयोग किए जाने की रिपोर्टों के चलते, आनेवाले दिनों में संबंधों के सुरक्षा आयाम को अवश्य ही सहारा प्राप्त होगा। हाल में ही भारत–नेपाल का संयुक्त सैनिक अभ्यास दोनों देशों की सामरिक रणनीति में सहयोग, साझेदारी को परिलक्षित करता है।

जल-विद्युत् से खुशहाली

हिमालय के कारण नेपाल में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जल विद्युत् सहयोग की क्षमता का लाभ प्राप्त करने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, जो अलग–अलग मान्यताओं के कारण बहुत अधिक अछूता रहा है। भारत

जल विद्युत् परियोजना

काली नदी पर भारत-नेपाल की एशिया की सबसे बड़ी प्रस्तावित विद्युत् परियोजना

को उम्मीद है कि नया ऊर्जा करार संभव होगा, जो इस क्षेत्र में दोनों पक्षों के लिए फायदेमंद अवसरों के नए द्वार खोलेगा। मेरा मानना है कि यदि भारत-नेपाल दोनों मिलकर साझी जल विद्युत् परियोजनाओं के लिए समर्पित भाव से कार्य करें, तो नेपाल में बार-बार पैदा हो जानेवाले ऊर्जा संकट का समाधान हो सकेगा और भारत भी करार के भाग के रूप में अतिरिक्त बिजली प्राप्त करेगा। विशेषज्ञों के अनुसार, नेपाल में आज 40,000 मेगावाट उत्पादन की विद्युत् क्षमता है, जो तकनीकी और वित्तीय रूप से व्यवहार्य पाई गई है। नेपाल की कुल विद्युत् क्षमता 80,000 मेगावॉट होने का अनुमान लगाया गया है। यदि नेपाल की जल विद्युत् क्षमता का अभीष्ट दोहन किया जाए, तो यह दक्षिण एशिया का सबसे संपन्न देश बनने की क्षमता रखता है। आशा की जानी चाहिए कि निवेश की कमी इन परियोजनाओं के रास्ते में नहीं आएगी।

भारतीय भागीदारी

भारत ने इस हिमालयी राज्य के समावेशी विकास के लिए अपनी प्रतिबद्धता को अनेक बार रेखांकित किया है और पिछले वर्षों में नेपाल

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी नेपाल में ट्रामा सेंटर के उद्घाटन के अवसर पर

सरकार को 100 मिलियन अमेरिकी डॉलर तथा 250 मिलियन अमेरिकी डॉलर के दो आर्थिक ऋण पहले ही प्रदान कर दिए हैं।

नेपाल–भारत की विकास भागीदारी व्यापक क्षेत्रों में हुई है। इनमें भारत राजमार्गों, पुलों, ऑप्टीकल फाइबर लिंकों, मेडिकल कॉलेजों, ट्रामा सेंटरों, पॉलीटेक्नीकों, स्कूलों, अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों आदि का निर्माण कर रहा है। नदी प्रशिक्षण एवं तटबंध विनिर्माण के लिए, भारत सरकार ने उदारता से निधियाँ और विशेषज्ञ सहायता प्रदान की है, ताकि तालबकेया, बागमती और कमला नदियों के तटबंधों का सुदृढीकरण और विस्तार हो सके। इसके अलावा, विद्युत् पारेषण लाइनों के सत्रोन्नयन के लिए एक 250 मिलियन डॉलन का और दूसरा 125 मिलियन डॉलर का बैंक ऋण प्रदान किया गया है। नेपाल के विभिन्न जिलों में चल रही लगभग 450 लघु विकास परियोजनाओं ने साधारण नेपाली जनता के लिए खुशियों का संसार बनाया है। भारत के विदेश मंत्रालय के पूर्व तत्कालीन प्रवक्ता सैयद अकबरुद्दीन का कहना था कि इनमें से कई परियोजनाओं की सफलता की कहानियाँ उल्लेखनीय हैं। कई चिकित्सकीय परियोजनाओं को सफल अंजाम दिया है। आयोडिन की कमी से होनेवाले रोग 'घेंघा' को ही लें तो जब हमने नेपाल को

घेंघा से मुक्त करने का बीड़ा उठाया, तो 1985 में नेपाल में घेंघा लगभग 44 प्रतिशत लोगों को हो जाता था। वर्ष 2007 में जब भारत ने इस योजना को समाप्त किया, तब यह आँकड़ा घटकर 0.4 प्रतिशत रह गया। प्रशिक्षण के क्षेत्र में भारत द्वारा 3000 नेपालियों को वार्षिक रूप से छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जा रही हैं। इसके अतिरिक्त हजारों की संख्या में विधार्थी भारत में शिक्षा ग्रहण करने आते हैं और लाखों रोजगार की तलाश में भारत आते हैं।

भारत को शीर्ष प्राथमिकता

भारत एवं नेपाल के संयुक्त आयोग की भूमिका नेपाल के राजनैतिक पटल पर बदलाव के मध्य जब संविधान निर्माण की प्रक्रिया नया स्वरूप ले चुकी है, यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भारत-नेपाल के आंतरिक मामलों से स्वयं को अलग रखने की सुविचारित नीति को बनाए रखा है, परंतु इस हिमालीय राज्य में, जो आधुनिकता और राष्ट्रीय नवीकरण की अपनी यात्रा को स्वयं की

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी एवं नेपाल की राष्ट्रपति श्रीमती बिद्या देवी भंडारी

शर्तों पर तय कर रहा है, चिरशांति और स्थायित्व लाने के लिए भारत ने एक समावेशी राजनैतिक प्रक्रिया की निरंतर रूप से मैत्री भाव से वकालत की है। 27 मई, 2016 को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री कोइराला के साथ अपनी बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नेपाल को एक पुराने और बहुत ही सम्मानित मित्र के रूप में वर्णित किया है और ईमानदारी से उम्मीद जताई है कि नेपाल के द्वारा संविधान को समय-सीमा में अंगीकार कर लिया जाएगा, जो उसने अपने लिए तय की है। 15 सितंबर, 2016 को प्रधानमंत्री मोदी और नेपाली प्रधानमंत्री प्रचंड की बैठक में भी आपसी संबंध सुदृढ करने की प्रतिबद्धता जताई गई। मौजूदा नेपाली नेतृत्व ने भी द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने पर सहमति प्रकट की है।

मुझसे अपनी बैठक में प्रधानमंत्री प्रचंड ने बताया कि भारत को उनकी सरकार शीर्ष प्राथमिकता देती है। उन्होंने अपनी हाल की भारत यात्रा के दौरान भारतीय नेताओं से द्विपक्षीय मुद्दों पर सार्थक बातचीत का जिक्र भी किया है।

नेपाल-भारत संबंधों की सबसे विशिष्ट बात यह है कि यहाँ पर किसी सरकार, एजेंसी, संगठन को विशेष प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। यहाँ पर लोगों का लोगों से 'पीपल टू पीपल कंटेक्ट' इतना व्यापक आत्मीय संबंध है, जो कि अपने आपमें बेजोड़ है। इस आत्मीय संबंध की आधारशिला पर एक भव्य निर्माण संभव है। मुझे इन संबंधों को नए क्षितिज तक ले जाने की आवश्यकता महसूस होती है। हमारी नींव मजबूत है, पर हम सभी को परस्पर मित्रता और सहयोग के महायज्ञ में अपनी-अपनी आहुति देने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

□

13

विनाशलीला के पश्चात् पुनर्निर्माण

भूकंप की विनाशलीला के पश्चात् नेपाल में पुन:निर्माण का कार्य बड़े जोर-शोर से प्रारंभ हुआ। विश्व भर ने इस भयानक आपदा के पश्चात् नेपाल की मदद करने में पूरी दरियादिली का परिचय दिया। भारत ने इस भयानक त्रासदी में विश्व समुदाय का नेतृत्व किया और यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी ने कुछ घंटों के अंदर ही आपातकाल से जूझते

भूकंप की दर्दनाक विनाशलीला

भारतीय सेना भूकंप सहायता हेतु तैयार

हुए मित्र के लिए सहायता की घोषणा की। घंटों में राहत सामग्री नेपाल में पहुँचाकर कष्ट और आपदा से जूझ रहे अपने मित्र राष्ट्र के प्रति भारत ने अपनी प्रतिबद्धता को प्रकट किया। नेपाल का सामान्य जनमानस दशक पूर्व हिंसक आंदोलन से पहले ही ग्रस्त था। उस पर बढ़ती मुद्रास्फीति, ढाँचागत अवस्थापना, विकास की धीमी गति व घटते निवेश के कारण भारी समस्याएँ और अधिक जटिल हो गईं। अनिश्चितता के वातावरण में लोग दूर-दराज में ठिकाना खोजते हुए पर्वतीय क्षेत्रों से काठमांडू और अन्य बड़े महानगरों में आ गए। नगरों में इतनी बड़ी जनसंख्या के कारण पेयजल, स्वास्थ्य, परिवहन, शिक्षा, आवास की बड़ी समस्या पैदा हो गई। नियोजन की कमी और जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि से शहरों की समस्याएँ काफी बढ़ गईं।

आपदा के इस दौर में पुनः निर्माण की आशा का संचार होने लगा है। नेपाल की जल विद्युत् योजनाओं में भारतीय भागीदारी एवं राजमार्गों के विकास में चीनी सहायता का देश की विकास यात्रा में निर्णायक प्रभाव देखने को मिलने लगा है। भारत की नेपाली अर्थव्यवस्था में हमेशा से ही बड़ी भूमिका रही है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में चीन की बढ़ती भागीदारी स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। सड़क, हवाई जहाज; दोनों मार्गों से चीनी पर्यटकों की

संख्या में निरंतर बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। काठमांडू के ठमेल और बौद्धा एवं पोखरा के आसपास चीनी नागरिकों की बड़ी संख्या देखी जा सकती है।

नेपाल के युवा बड़ी संख्या में विदेशों में जीविकोपार्जन के लिए जाने लगे हैं। ऐसे में विदेशों से भेजी जानेवाली राशि नेपाल की आर्थिकी में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। नेपाली युवाओं के विदेश जाने से बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा का प्रवाह हो रहा है, परंतु इसका दु:खदायी पहलू यह है कि नेपाल इस समय 'ब्रेन-ड्रेन' की विकराल समस्या से जूझ रहा है। नेपाल में ढाँचागत अवस्थापना विकास की कमी से वहाँ पर रोजगार

बाबा रामदेव और आचार्य बालकृष्ण आपदा सहायता में मुख्य भूमिका निभाते हुए

के सीमित साधन हैं। महानगरों तक सीमित अवसरों ने ग्रामीण परिवेश में विकट चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं। आज नेपाल की साढ़े तीन करोड़ से अधिक जनता राष्ट्र के नव-निर्माण में जुटी है। हिंदू बहुंख्यक देश होते हुए भी नेपाल में बौद्ध धर्म एवं मुसलमान लोग एकता और धर्मनिरपेक्षता के सूत्र में अपना योगदान दे रहे हैं। नेपाल के तिब्बती लोग एक सशक्त व्यापारिक समुदाय के रूप में उभर रहे हैं। जिस होटल में मैं ठहरा था, उसका नाम तिब्बत इंटरनेशनल था। पूछने पर पता चला, वह भी दलाई लामा के अनुयायी पालाजी का है।

नवीनतम आर्थिक आँकड़े बताते हैं कि चीन नेपाल में विदेशी निवेश का मुख्य स्रोत बन गया है। वर्ष 2015-16 में चीन ने यहाँ कुल नेपाली विदेशी निवेश का 42 प्रतिशत हिस्सा निवेश किया। वर्ष 2014-15 में चीन ने 38 मिलियन डॉलर की आर्थिक सहायता भी प्रदान की। पश्चिमी सेती डैम, पोखरा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, ऊपरी त्रिशूली जल विद्युत्

भूंकप उपरांत प्रार्थनाओं का दौर

मृतकों को याद करती एक बालिका

परियोजना आदि शामिल हैं। चीन और नेपाल 'सिल्क' रोड आर्थिक बेल्ट सरीखी महत्त्वाकांक्षी योजना पर सहयोग करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। इसके अलावा एशिया-प्रशांत आदान-प्रदान और सहयोग फाउंडेशन महात्मा बुद्ध के जन्मस्थान लुंबिनी में तीन बिलियन अमेरिकी डॉलर की लागत से एक सांस्कृतिक केंद्र बनाने की योजना पर कार्य कर रहा है। विश्व बैंक, एशियाई विकास बैंक की सहायता से कई योजनाएँ क्रियान्वित कर रहा है, जिसकी लागत 320 मिलियन यू.एस. डॉलर से अधिक है। नेपाल में होटलों में, सार्वजनिक स्थलों में अब बड़ी संख्या में विदेशी दिखने लगे हैं, पर इससे भी कहीं अधिक गौरतलब बात यह है कि भिन्न-भिन्न राष्ट्रीयता के ये लोग विभिन्न पुनर्निर्माण प्रोजेक्टों में यहाँ महत्त्वपूर्ण भूमिका भी निभा रहे हैं।

जहाँ तक बाहरी देशों की सहायता की बात है तो भारत के अलावा द्विपक्षीय सहायता के मामले में इंग्लैंड, चीन, जापान, कनाडा, जर्मनी नेपाल

भारत के सिख समुदाय नवर्निर्माण में संलग्न

के पुन:निर्माण की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। भूकंप के पश्चात् नए घर बनाने हेतु विश्व बैंक द्वारा वृहद 'पुनर्निर्माण' प्रोजेक्ट चलाया गया है। इसके अतिरिक्त विश्व बैंक द्वारा कबेली जल विद्युत् परियोजना एवं नेपाल स्वास्थ्य प्रबंधन एवं सड़क निर्माण प्रोजेक्ट, वन निवेश योजना आदि भी चलाए गए।

सरकारी विदेशी एजेंसियों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में गैर-सरकारी संगठन पुनर्निर्माण के लिए तत्पर रहे हैं, हालाँकि कुछ संगठनों के क्रियाकलापों और कार्यशैली पर प्रश्नचिह्न भी उठे हैं, परंतु अधिकतर संगठनों द्वारा प्रशंसनीय कार्य किया गया है। ऐसी ही एक संस्था, नेशनल सोसाइटी फार अर्थ क्वेक टेक्नोलॉजी नेपाल का कार्य उल्लेखनीय रहा है। इस सोसाइटी का विजन वर्ष 2020 तक नेपाल में भूकंप से सुरक्षित समुदाय का विकास करना है।

यह संस्था यू.एस.एड. के साथ कार्य कर रही है और पाँच वर्षीय कार्यक्रम के तहत नेपाल के 14 सर्वाधिक प्रभावित जिलों में सभी

हितधारकों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए भूकंप निरोधी घरों के निर्माण कार्य में जुटी है। इसकी खासियत यह है कि यह संस्था निर्माण के लिए मजदूर, सामाजिक कार्यकर्ता, तकनीकी मानव संसाधन, नीति निर्माता और क्रियान्वयन एजेंसी के मध्य समन्वय भी स्थापित करती है। मुख्यत: यह एजेंसी भूकंप निरोधी आवासों के निर्माण हेतु महत्त्वपूर्ण प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने में सफल रही है।

विश्व बैंक द्वारा हाउसिंग रिकंस्ट्रक्शन प्रोजेक्ट के तहत 55000 से अधिक घरों का निर्माण हो रहा है। इसके अतिरिक्त, नेपाली सरकार की आपदा प्रबंधन की तैयारियों को वैश्विक स्तर तक ले जाने का प्रयास किया जाएगा। 200 मिलियन यू.एस. डॉलर की लागत की यह परियोजना नेपाली सरकार को विश्व बैंक आवंटन श्रेणियों में समन्वय स्थापित करने में सहायता कर रही है। भारत सरकार द्वारा नेपाल में 16 सड़क मार्गों के निर्माण हेतु स्वीकृति प्रदान की गई है। पश्चिमी नेपाल में महाकाली पुल का निर्माण भी इसी कड़ी का एक हिस्सा है। भारत आजादी के बाद से ही यहाँ के आर्थिक-सामाजिक उन्नयन में प्रमुख सहभागी रहा है, इधर यह प्रतिबद्धता और बढ़ी है।

नेपाल पुनर्निर्माण (रिकंस्ट्रक्शन) प्राधिकरण के क्षमता विकास में भी भारत सहायता कर रहा है। राहु घाट जल विद्युत् परियोजना, कोसी, सोलू, मोही, लेखनाथ ट्रांसमिशन प्रोजेक्ट के काम में तेजी लाने के लिए भी भारत सरकार कृतसंकल्प है। कुल मिलाकर भारत की हर संभव कोशिश है कि आपदा के बाद पुनर्निर्माण के प्रयासों में तेजी लाई जा सके। सुखद बात यह भी है कि नेपाल के पुनर्निर्माण में यूरोपीय यूनियन भी एक अहम मददगार बनकर उभरा है। हालिया आँकड़ों के अनुसार 150 मिलियन यूरो से ऊपर की सहायता प्रदान कर यूरोपीय देशों ने नेपाल के नव-निर्माण को नई दिशा एवं गति दी है। इस सहायता में मेडिकल क्षेत्र में क्षमता विकास, भूकंप निरोधी अवस्थापना विकास पूर्व चेतावनी नेटवर्क की मजबूती, अस्पतालों में उपकरणों की आपूर्ति, सर्जिकल किट, ईंधन, सामुदायिक आपदा प्रबंधन

तंत्र को मजबूत करना एवं भूटान से बड़ी संख्या में आए शरणार्थियों की देखभाल आदि शामिल है।

नेपाल में भूकंप के उपरांत सहायता हेतु एक अंतरराष्ट्रीय मंच के गठन हेतु अंतरराष्ट्रीय डोनर कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। इस मीटिंग में कई दानी देशों के अतिरिक्त वित्तीय एजेंसियों, फाउंडेशन, गैर-सरकारी संगठनों ने नेपाल को सहायता हेतु 4.4 बिलियन यू.एस. डॉलर जुटाने की बात कही। 25 जून, 2015 को हुई इस बैठक का मुख्य उद्देश्य नेपाल को इस त्रासदी से उबारने में मदद करने के साथ देश को संभावित आपदा के खतरों से बचाना है। स्विट्जरलैंड सरकार ने स्वत: स्फूर्त पहल करते हुए नेपाल में भूकंप के उपरांत ग्रामीण ढाँचागत अवस्थापना सुदृढीकरण के साथ-साथ पुल एवं सड़क निर्माण हेतु परिवहन व्यवस्था के सुदृढीकरण एवं कौशल विकास के माध्यम से निर्माण प्रौद्योगिकी द्वारा नेपाल को भूकंप निरोधी घर बनाने हेतु विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था की है।

भुक्तभोगी जापान तो सदैव से आपदा पीड़ितों की मदद के लिए प्रथम पंक्ति में खड़ा रहकर सहायता करता आया है। इस असीम दु:ख की घड़ी में जापान सरकार द्वारा नेपाल को गृह निर्माण प्रोजेक्ट के लिए 12000 मिलियन येन का ऋण दिया गया।

उधर कनाडा ने भी नेपाल के नव-निर्माण में बढ़-चढ़कर योगदान दिया है। कनाडा द्वारा 27 मिलियन डॉलर की सहायता के साथ-साथ कनाडा अंतरराष्ट्रीय विकास शोध संस्थान एवं आई.सी.आई.एम.ओ.डी. द्वारा हिमालयी क्षेत्रों में मिलकर जीवनस्तर को सुधारने की कई योजनाओं पर भी प्रशंसनीय कार्य किया जा रहा है।

इधर चीन द्वारा भी नेपाल के पुन: निर्माण हेतु उल्लेखनीय सहायता प्रदान की गई। बताया गया है कि चीन द्वारा 10 मिलियन यू.एस. डॉलर, वीपी मेमोरियल कैंसर अस्पताल भरतपुर के लिए दिए गए, जबकि 100 करोड़ रुपए की राशि लोगों को पुन: घर बनाने एवं ढाँचागत अवस्थापना के लिए दिए गए।

कुल मिलाकर देखा जाए तो भूकंप के बाद नेपाल में पूरे विश्व समुदाय ने मिलकर वहाँ के भूकंप पीड़ितों के साथ जो सहानुभूति जताते हुए सहयोग के लिए संसाधन उपलब्ध कराए हैं, वे सराहनीय हैं, पर साथ ही यह भी कहना चाहूँगा कि विकास की इस दिशा में अभी भी नेपाल द्वारा काफी कार्य किया जाना बाकी है। मुझे पूरा भरोसा है कि आनेवाले समय में नेपाल राष्ट्र, भूकंप की इस त्रासदी से मिले जख्मों को भरकर एक स्वस्थ व सुंदर नेपाल की परिकल्पना साकार करेगा और अपने गौरवशाली अतीत को पुनर्स्थापित करेगा।

□

14

नेपाली मूल के भारतीय

भारतीय उपमहाद्वीप में स्थित हिमालयी राष्ट्र नेपाल के लोग अपनी कड़ी मेहनत, सरलता, लगन, वीरता, ईमानदारी के बल पर विश्व के अधिकतर देशों में गरिमापूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। शायद ही विश्व का कोई देश होगा, जहाँ ये लोग अपनी उपस्थिति दर्ज न करवा रहे हों। ये लोग एक तरफ अपनी वीरता के लिए विख्यात हैं, वहीं दूसरी ओर अपनी सौम्यता, सरलता, भोलेपन से सबका दिल जीतने में कामयाब रहते हैं।

नेपाल की संस्कृति भारत से मिलती-जुलती है। यहाँ की वेशभूषा, पकवान, भाषा में काफी समानताएँ हैं। नेपाल का सामान्य खाना दाल-

देहरादून स्थित खलंगा मेमोरियल

भारत–नेपाल सीमा के गाँव

भात, तरकारी, अचार है, जो कि दिन में दोनों बार खाया जाता है। नेपाली लोग हमारी तरह गेहूँ, मकई, आलू का बहुतायत में प्रयोग करते हैं। भारतीय हिमालय की तरह यहाँ के लोग कोदो यानी मंडुआ का प्रयोग अधिक करते हैं। यहाँ के सामाजिक जीवन की मान्यता धार्मिक सहिष्णुता, उत्सवों का उल्लास, उपासना पद्धति सामाजिक विविधता के बावजूद समरसता, आपसी प्रेम का भाव नेपाल के लोगों को स्वाभाविक रूप से भारत की ओर आकर्षित करता है। अगर आप किसी भारतीय से पूछें कि विश्व में उसे भारत के अलावा कहाँ पर घर जैसी अनुभूति होती है तो एक ही उत्तर मिलेगा नेपाल। उसी प्रकार अगर किसी नेपाली से पूछा जाए कि दुनिया के किस देश में वह आत्मीयता महसूस करता है तो निश्चित रूप से वह भारत का नाम लेगा। कई जगह सीमावर्ती क्षेत्रों में तो हाल यह है कि लोगों को अलग देश का आभास तक नहीं है। नेपाल कई मायनों में संपूर्ण विश्व से भिन्न है। एक अनुग्रह परायणवाला देश, जिसने सभी धर्म, संस्कृतियों में सफलतापूर्वक

समन्वय स्थापित किया है। मूर्ति पूजा और कर्मकांड के विरोध में उत्पन्न बौद्ध धर्म नेपाल में स्वयं मूर्ति पूजा और कर्मकांड को अपनाता है। बौद्ध धर्मावलंबी भगवान् पशुपतिनाथ की पूजा आर्यावलोकितेश्वर के रूप में करते हैं, जबकि हिंदू मंजूश्री की पूजा सरस्वती के रूप में करते हैं। नेपाल की इस समन्वयात्मक संस्कृति का संरक्षण, संवर्धन, पोषण केवल और मात्र भारत में हो सकता है। यही कारण है कि बड़ी संख्या में नेपाली लोगों ने भारत को अपना घर बना लिया है। ये लोग भारतीय रंग-ढंग में इतने घुल-मिल गए हैं कि कहीं से भी फर्क बताना कठिन है।

बड़ी संख्या में भारत में बसे नेपाल के लोग भारत में तीन मुख्य कालखंडों में आए। वर्ष 1768 गढ़वाल और कुमाऊँ पर नेपाल का आक्रमण हुआ। हिमाचल प्रदेश भी इस आक्रमण की जद में आया, लगभग 3 दशकों तक नेपाली शासन रहा। इस दौरान बड़ी संख्या में लोग यहीं बस गए। वर्ष 1830 के पश्चात् ब्रिटिश शासकों द्वारा भूटान एवं नेपाल से संधि की गई, जिसके उपरांत इससे कुरसियांग कालिमपाँग, सिक्किम के क्षेत्रों में नेपाली मूल के मजदूरों को बसा दिया, इसका परिणाम यह हुआ कि इन क्षेत्रों में बड़ी संख्या में नेपाली मूल के लोग भारत में सम्मिलित हो गए।

जनसंख्या के आधार पर नेपाली मूल के लोग सबसे अधिक पश्चिम

भारतीय सेना का गोरखा सैन्य प्रशिक्षण संस्थान

बंगाल में पाए जाते हैं। सिक्किम में 65 प्रतिशत से अधिक लोग नेपाली बोलते हैं। असम में भी बड़ी संख्या में नेपाली लोग रहते हैं। असम की संस्कृति, कला साहित्य के संरक्षण-संवर्धन में नेपाली लोगों का बड़ा योगदान रहा है।

वर्ष 1950 की संधि के पश्चात् बड़ी संख्या में नेपाली लोग भारत में आए और यहीं के होकर रह गए। एक कारण यह भी रहा कि नेपाली लोग अधिकतर हिंदू मतावलंबी हैं। ऐसी स्थिति में इन्हें भारत का वातावरण अत्यंत सुरक्षित एवं रुचिपूर्ण लगा। नेपाली प्रवासियों को भारत किसी भी रूप में भिन्न नहीं लगा और इसका परिणाम यह हुआ कि ये लोग यहाँ विवाह संबंधों में बँध गए।

भारत में लगभग सभी प्रकार की नेपाली जातियों के लोग पाए जाते हैं। क्षेत्री, खस, राय, गुरंग, मगर यावका, लिंबू, मुखिया, शेरपा, योल्यो तमाँग, तामी, तिब्बती लोगों ने भारत को अपना घर बना लिया है। ये सभी लोग नेपाली भाषा के सूत्र में बँधे हुए पूरे उत्साह से भारतीय रंग में रँग चुके हैं। भारत में बड़ी में इन लोगों ने अपना नाम कमाया। अपनी उपलब्धियों के बल पर ये लोग न केवल भारत में, बल्कि विश्व फलक पर अपना स्थान बना चुके हैं।

मुझे इस बात की अत्यंत प्रसन्नता है कि मेरे प्रदेश उत्तराखंड में और मेरे लोकसभा क्षेत्र में स्वाधीनता सेनानी मेजर दुर्गा मल्ल अपनी वीरता त्याग पराक्रम के लिए विख्यात रहे हैं। मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे मुख्यमंत्रित्वकाल में डोईवाल स्थित महाविद्यालय का नाम इस अमर सेनानी के नाम पर रखा गया। परमवीर चक्र प्राप्त लेफ्टिनेंट कर्नल धन सिंह थापा की वीर गाथा से हर हिंदुस्तानी परिचित है। सिक्किम में रिकार्ड समय से मुख्यमंत्री पद को सुशोभित कर रहे और सिक्किम को आर्गेनिक प्रदेश के रूप में संपूर्ण विश्व में विख्यात करनेवाले पवन कुमार चामलिंग से कौन परिचित नहीं है। महान् शिक्षाविद् डॉ. महेंद्र पी. लामा ने सिक्किम विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति के रूप में केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व में अपना स्थान बनाया। नेपाली भाषा के वरिष्ठ लेखक और

समालोचक डॉ. इंद्र बहादुर राय ने अपनी लेखन क्षमता से सभी को प्रभावित किया। फुटबाल में संजू प्रधान, निर्मल क्षेत्री और सुनील क्षेत्री के योगदान से हर खेल प्रेमी परिचित है। भारतीय सिनेमा जगत् में अपने अभिनय का लोहा मनवा चुकी माला सिन्हा का नाम आज भी अत्यंत सम्मान से लिया जाता है। उनकी पुत्री प्रतिभा सिन्हा ने भी अभिनय जगत् में खूब नाम कमाया। इसी कड़ी में अपने शानदार अभिनय के लिए विख्यात मनीषा कोइराला आज भी बॉलीवुड में सक्रिय है। इसके अलावा बालीवुड में ही गीतांजलि थापा, प्रशांत तमाँग, अंबर गुरंग अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रसिद्ध है। संगीत की दुनिया में उदित नारायण ने भारत का नाम पूरी दुनिया में ऊँचा किया। हॉकी खिलाड़ी भारत क्षेत्री, संगीतकार लुइस बैंक्स, बाक्सर शिवा थापा, लोकगायक हीरा देवी, तीरंदाज तरुणदीप, संगीतकार रजीत गाजमर ने भी अपने-अपने क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य कर अपना नाम रोशन किया है। यों तो नेपाली लोग संपूर्ण भारत में बसे हैं, परंतु पश्चिम बंगाल, असम, सिक्किम, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तर-पूर्वी राज्यों में इनकी अच्छी खासी संख्या है। हिमाचल में बड़ी संख्या में नेपाली मूल के लोग सोलन जिले के सुबाथू, धर्मपुर, कसौली, नाहन, शिमला, कांगड़ा आदि क्षेत्रों में रहते हैं। मेरे गृह राज्य उत्तराखंड में बड़ी संख्या में गोरखा लोग रहते हैं। देहरादून, हरिद्वार, नैनीताल, ऊधमसिंह नगर, पौड़ी में नेपाली मूल के निवासी अपना घर-परिवार बसा चुके हैं।

विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार रोजगार के लिए बाहर जानेवालों में 41 प्रतिशत नेपाली भारत का रुख करते हैं, जबकि 38 प्रतिशत मध्य-पूर्व के देशों में, 12 प्रतिशत मलेशिया में एवं 8.7 प्रतिशत कनाडा, अमेरिका, जापान, इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस अफ्रीकी देशों में जा रहे हैं। नेपाल द्वारा कुल विदेशी मुद्रा का 33 प्रतिशत भाग भारत द्वारा प्राप्त होता है, हालाँकि यह प्रतिशत बहुत ज्यादा है। 54 प्रतिशत से ज्यादा लोग भारत से नकद पैसे साथ ही ले जाते हैं, ऐसी दृष्टि में वे बैंकिंग चैनलों का प्रयोग नहीं करते हैं। नेपाल राष्ट्रीय बैंक ने अपने आंकलन के अनुसार बताया कि वर्ष 2006/7 में 1200 करोड़ से

अधिक की राशि नेपाल भेजी गई। सूत्रों की मानें तो आज 3 हजार करोड़ से अधिक की राशि भारत से नेपाल भेजी जाती है।

नेपाल से विदेशों में रोजगार पानेवाले हर कर्मचारी का पंजीकरण होना आवश्यक है, लेकिन भारत के विषय में यह लागू नहीं होता। विश्व की 108 देशों की सूची में भारत का नाम नहीं है। ऐसी दशा में नेपाली मूल के लोगों का भारत आना आसान बना हुआ है। पिछड़े गरीब दुर्गम क्षेत्रों में लोगों के पास पासपोर्ट उपलब्ध नहीं होता, जहाँ तक भारत की बात है, वे किसी भी प्रकार के परिचय के आधार पर यहाँ पहुँच सकते हैं।

ऐसा माना जाता है कि नेपाल के 60 लाख से ज्यादा लोग भारत में विभिन्न स्थानों पर नौकरी कर रहे हैं। ये लोग भारत और नेपाल के बीच एक महत्त्वपूर्ण मजबूत कड़ी का कार्य कर रहे हैं। बड़ी संख्या में नेपाली विद्यार्थी उच्च अध्ययन के लिए भारत का रुख करते हैं। ये लोग मुख्यत: दिल्ली, शिमला, लखनऊ, कलकत्ता, पटना, अंबाला, लुधियाना, बंगलुरु, पुणे, मुंबई, चंडीगढ़, देहरादून जैसे महानगरों तक सीमित हैं। भारत नेपाल को एक अन्य महत्त्वपूर्ण कड़ी जोड़ती है और वह है भारतीय सेनाओं की गोरखा रेजिमेंट, भारतीय सेना में 40,000 गुरखा सैनिकों की उपस्थिति। भले ही इन सैनिकों की जन्मभूमि नेपाल हो, पर इनकी कर्मभूमि भारत है। मेरा मानना है कि इनमें से अधिकतर लोग भारत को अपना ठिकाना बना लेते हैं। भारत–नेपाल के मधुर संबंधों की शानदार इमारत खड़ी करने में ये लोग मील का पत्थर साबित होंगे। □

भारत-नेपाल : दो तन एक मन

दुनिया के नक्शे में बेशक दो अलग-अलग देश हैं भारत और नेपाल, लेकिन मूलत: और स्वभावत: वे एक-दूसरे से कतई अलग नहीं हैं। एक-सा भौगोलिक स्वरूप होने के साथ-साथ रहन-सहन, खान-पान, परिवेश व परंपराएँ भी बिल्कुल एक जैसी हैं, यहाँ तक कि रीति-रिवाज, तीज-त्योहार, दर्शन-चिंतन से लेकर मठ-मंदिर, तीर्थ-पर्व भी सब एक जैसे हैं और तो और दुनिया में यही दो मुल्क हैं, जिनके बीच आवाजाही तक में कोई रोक-टोक नहीं है। यही नहीं, यहाँ धर्म संप्रदायों को लेकर भी इन दोनों राष्ट्रों की उदारता एक जैसी है। दोनों ही एक साथ अयाजकीय (जागर अनुष्ठान आदि अवैदिक) और याजकीय (वैदिक मंत्र परंपरा) के अनुयायी हैं।

दोनों ही एक साथ शैव, शाक्त, वैष्णव, बौद्ध, नाथपंथी, प्रकृतिपूजक, सब हैं। 'शिव' दोनों ही मुल्कों के सर्वमान्य प्रमुख अराध्य देव हैं, तो लोक देवता यानी 'ईष्ट' देव भी एक ही गोत्र से संबंधित हैं। शैव और नाथ परंपरा से जुड़े भारत में अमरनाथ, केदारनाथ, बदरीनाथ, बैजनाथ, जागनाथ, विश्वनाथ से लेकर नेपाल में पशुपतिनाथ, इसी आपसी समानता, समरूपता और सामीप्य का साक्षात् सबूत हैं।

दोनों ही देश 'सनातन' धर्मी और गौ-पूजक हैं। दोनों ही पावन देवभूमि कहलाते हैं और ऋषि-महर्षि, संत-महंतों की समृद्ध विरासत से अनुप्राणित और पल्लवित-पुष्पित हैं। याज्ञवल्क्य, वैशंपायन, सुलभा, गार्गी, अष्टावक्र से लेकर विदेहराज राजऋषि जनक, गौतम बुद्ध, शंकराचार्य, बाबा गोरखनाथ

आदि ऐसे ही 'मील के पत्थर' हैं। यहाँ के सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने के सूत्रधार। भारत-नेपाल के महासेतु। यहाँ की समृद्ध साझा संस्कृति और सनातन धर्म इन्हीं की देन हैं।

ये दोनों मूलत: 'हिंदू' राष्ट्र आज एक 'सेकुलर' पंथ निरपेक्ष गणतांत्रिक राष्ट्र के रूप में सामने हैं। बिल्कुल एक-दूसरे के दर्पण प्रतिबिंब। इतने आत्मीय व सहृदयी कि इनके बीच आवाजाही में भी कोई रोक-टोक नहीं। दोनों देशों के बीच न 'वीजा' की औपचारिकता है, न पासपोर्ट की। बस उनका भारतीय और नेपाली होने का प्रमाण ही पर्याप्त है।

सांस्कृतिक-भातृराष्ट्र

जिस तरह एक जन्म माता-पिता से होता है, वह 'शरीर' का जन्म है। फिर एक जन्म 'सद्गुरु' से होता है, वह 'आत्मिक' जन्म है। भारत और नेपाल दोनों ऐसे ही 'आत्मिक-सहोदर' हैं। एक ही सद्गुरु से जन्मे दो गुरुभाई। एक ही धार्मिक-सांस्कृतिक परंपरा के अनुयायी। यही नहीं, समय-समय पर जो धर्म, संप्रदाय, संस्कृति, दर्शन एक ने अंगीकार किया, वही दूसरे ने भी आत्मसात् किया। सनातन, यानी परवर्ती हिंदू धर्म से लेकर शैव, बौद्ध, नाथ आदि प्रमुख संप्रदाय इसी का परिचायक हैं। देवाधिदेव शिव के अलावा गौतम बुद्ध और बाबा गोरखनाथ यहाँ के प्रमुख अराध्यों में हैं।

खासतौर से भारत का कश्मीर से लेकर नेपाल तक का संपूर्ण हिमालयी क्षेत्र और उधर नेपाल एक ही धार्मिक-आध्यात्मिक ताने-बाने में गुथे हुए हैं। यह सिलसिला सदियों से अनवरत चला आ रहा है। मसलन आदिकाल या कहें प्राग्वैदिककाल से ही ये दोनों मुल्क 'शिव आराधक' रहे हैं। सारे उत्तर भारत और हिमालय के कोने-कोने में विद्यमान शैव धर्म के भव्य साकार अवशेष तमाम 'शिव शक्ति पीठ' यानी शिव मंदिर इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

यही नहीं, ये सभी 'नाथांतक' मतलब अंत में जुड़े 'नाथ' नाम के शिव मंदिर (अमरनाथ, केदारनाथ, पशुपतिनाथ) आपसी समानता व समरूपता के साक्षात् सबूत हैं, साथ ही भारत नेपाल दोनों ही जगह इन शैव रूपों की

आराधना-अनुष्ठान का तौर-तरीका भी एक ही है, यानी सर्वत्र वे 'लिंग' रूप में ही पूजे जाते हैं। चाहे फिर वह अमरनाथ गुफा स्थित स्वनिर्मित 'हिमलिंग' हो या अन्यत्र पूजे जानेवाली 'पाषाण पिंड़ी' अर्थात् पत्थर निर्मित शिवलिंग। नेपाल में भारत की तरह दशहरा व महा शिवरात्रि प्रमुख पर्व हैं। पारंपरिक अन्य लोक पर्व, झाड़-फूँक, तंत्र-मंत्र से लेकर लोक देवताओं के जागर अनुष्ठानों में भी गहरी समानता है।

रोटी-बेटी का रिश्ता

जिस तरह ऋषि-महर्षियों बिना हम भारत की धार्मिक-आध्यात्मिक समृद्धता की कल्पना नहीं कर सकते, उसी तरह राजऋषि विदेहराज जनक बगैर हम भारत-नेपाल की समृद्ध, सुव्यवस्थित सनातन परंपरा की भी कल्पना नहीं कर सकते। इन दोनों देशों की संस्कृति और दर्शन में इस आत्मोपलब्ध ब्रह्मवादी आर्य सम्राट का योगदान प्रणम्य और अविस्मरणीय है। हमारी ऋषि परंपरा को जन-जन से जोड़ने का जो अनूठा काम उन्होंने किया है, उसके लिए भारत-नेपाल ही नहीं, समूची मानव जाति उनकी हमेशा ऋणी रहेगी। उनके इस योगदान की चर्चा हम आगे 'सनातन धर्म के जनक' शीर्षक में विस्तार से करेंगे। इस प्रातः वंदनीय योगदान के अलावा इस राजऋषि ने अपनी पुत्री सीता का विवाह भी यहीं अवध नरेश राम से किया। रोटी-बेटी का यह संबंध तब से आज तक निर्बाध जारी है। तमाम राजाओ-महाराजाओं से लेकर आज आम जन के बीच भी यह रिश्ता आम हो चला है।

एक ही गुरु-गोत्र

भारतीय जनमानस में 'गुरु' परंपरा आदिकाल से चली आ रही है। संयोग यह है कि यह परंपरा जितनी सुदृढ और समृद्ध भारत में रही है, उतनी ही नेपाल में भी है। यही नहीं, दोनों मुल्कों में गुरुओं को सिर्फ व्यक्ति मात्र ही नहीं, बल्कि देवस्वरूप अर्थात् ईश्वर रूप माना गया है। आदिकाल में शिव से

लेकर तमाम ऋषि-महर्षि फिर बुद्ध, महावीर, तत्पश्चात् बाबा गोरखनाथ व अन्य संत और यहाँ तक कि समस्त लोक देवता 'इष्टदेव' इसी गुरु परंपरा की समृद्ध विरासत हैं। इतना ही नहीं, इन गुरुओं से जिन पूर्वजों ने ज्ञानार्जन किया, उन्होंने फिर अपने वंशधरों के लिए भी उन्हीं आदर्शों, आचार संहिताओं व दर्शन-चितंन को अनिवार्य कर दिया। यही आचरण परंपरा गोत्र के रूप में स्थापित हो गई। शिव, शाक्त, वैष्णव, बौद्ध, जैन से लेकर नाथ संप्रदाय इसी के परिचायक हैं। बाबा गोरखनाथ की चलाई नाथ परंपरा तो इतनी प्रभावी है कि भारत में अमरनाथ, केदारनाथ से लेकर नेपाल में पशुपतिनाथ तक सारे पुरातन शिवालयों, शिव शक्तिपीठों से यह 'नाथ' नाम भी गहरा जुड़ा हुआ है।

यही नहीं, नेपाल से लेकर भारत तक सारी संत परंपरा बाबा गोरखनाथ की ऋणी तो है ही, साथ में यहाँ के सारे लोक देवता भी गोरखनाथ के अनुयायी रहे हैं। कुमाऊँ में गोरिल, गंगनाथ, भोलानाथ, सेम, हरू, गणनाथ व गढ़वाल में नागनाथ, नागराज, बालनाथ, लक्ष्मण सिद्ध, नंसिघ, निरंकार, भैरव, मैंपन्दापीर आदि पूजे जाते हैं। यही नहीं, उत्तराखंड में तो नाथ पंथी जोगियों का योगदान केवल एक धार्मिक व तांत्रिक संप्रदाय के रूप में नहीं, बल्कि राजनैतिक शक्ति के रूप में भी पाया जाता है। प्राचीन पांडुलिपियाँ व जागरों से पता चलता है कि कत्युरी शासन से लेकर चंद्र पंवारों के समय में भी उत्तरी भारत में जोगियों की फौज ने बाहरी राजनैतिक आक्रांताओं—तुर्क, मुगलों से लोहा लिया और यहाँ के राजाओं को मदद की।

यही नहीं, इन राजवंशी संतों ने जनता को अत्याचारों व आंतकों से भी मुक्ति दिलाई। यहाँ जगह-जगह इनके अखाड़े थे। ठीक यहीं काम नेपाल में बाबा गोरखनाथ के अनुयायी गोरखाओं ने किया। गोरखनाथ के शिष्य होने के नाते ही उनका नाम गोरखा पड़ा। गढ़वाल मंडल के चमोली जिले में स्थित जोशीमठ का नरसिंह मठ नाथ पंथ का राजनैतिक केंद्र था। कत्युरी शासक असंतिदेव ने गोरख पंथ अपनाते हुए अपने जोशीमठ का राजमहल व शंकराचार्य द्वारा स्थापित त्योतिर्मठ जोगी नरसिंह को सौंप दिए और खुद राजधानी जोशीमठ से कत्यूर घाटी बैजनाथ ले आए।

नाथमय उत्तराखंड

लोकगाथाओं में कत्यूरी राजवंश को 'कंथापुरी' राजवंश तथा जोशीमठ को 'कंथापुर' यानी नाथ संप्रदाय के गेरूए रंग का चोला पहननेवाले कहा जाता था। उत्तराखंड के धार्मिक इतिहास की यह उल्लेखनीय घटना है। इस तरह गोरखपंथी नरसिंह नाथ के प्रभाव में आकर असंतिदेव के वंशजों ने नाथ पंथ स्वीकार कर लिया था। यह भी उल्लेख मिलता है कि राज्याश्रय पाकर उस काल में नाथ पंथ यहाँ का राजधर्म हो गया था।

इस तरह कत्यूरी ही नहीं, उत्तराखंड का शासन सँभालनेवाले चंद्र-पंवार शासकों पर भी इस पंथ का गहरा असर रहा। दस्तावेज बताते हैं कि गढ़वाल की 60 से अधिक गाढ़ियों पर अधिकार कर उसे एक विस्तृत राज्य गढ़वाल का रूप देनेवाले राजा अजयपाल ने नाथपंथी सिद्ध बाबा सत्यनाथ से दीक्षा लेकर अपनी राजधानी उनके सिद्ध पीठ देवलगढ़ के पास स्थानांतरित कर ली थी और सत्यनाथ मठ की स्थापना भी करवाई। नाथपंथी साहित्य में अजयपाल को 'गुरु अजयपाल' कहा जाता है, साथ ही रखवाली में उनका स्मरण भी किया जाता है।

इसी तरह कुमाऊँ में चंद शासक ज्ञानचंद को भी नाथपंथी परंपरा में गुरु का स्थान प्राप्त है। लोक गाथाओं में उन्हें गुरु ज्ञानचंद कहा जाता है। उनके काल में चंपावत के गोरिलचौड में एक बड़े मठ की स्थापना की गई। यही नहीं, चंदों की पिछली राजधानी चंपावत में मुख्यालय से 24 किलोमीटर दूर एक पर्वत शिखर पर मंचतामलि में गोरखनाथ का मंदिर है। यह गोरखपंथियों का मूल स्थान माना जाता है। यहाँ बारह महीने, 24 घंटे धूनी जलती रहती है। इस तरह कई अन्य जगह भी कुमाऊँ में मठों का उल्लेख मिलता है।

यही स्थिति नेपाल की भी है। समूचा नेपाल गोरखनाथ का शिष्य है। इसलिए नेपाली का एक नाम गोरखा भी प्रचलित है। नेपाली लोग गोरखनाथ को पशुपतिनाथ का अवतार और राष्ट्रगुरु मानते हैं। नेपाल राष्ट्र के सिक्के पर एक ओर 'श्री श्री गोरखनाथ' लिखा रहता है। नेपाल में

भोगमती, मृगस्थली, भातगाँव, चौधरा, पिउठान, स्वारीकोट आदि स्थलों पर गोरखनाथ के योगाश्रम है।

भारत-नेपाल 'गोरख के ऋणी'

उत्तराखंड के लोकपूजित देवी-देवताओं में गुरु गोरखनाथ का स्थान सर्वोपरि आता है। यहाँ के अन्य सभी प्रमुख देवता गोरिया, हरू, सेम, गंगनाथ, भोलेनाथ आदि गुरु गोरखनाथ के अनुयायी रहे हैं। यहाँ पर लोक देवताओं के अवतारणार्थ आयोजित देव गाथाओं जागर आदि में सर्वप्रथम इन्हीं का स्मरण किया जाता है। डॉ. पीतांबर बड़थ्वाल ने उत्तराखंड में प्रचलित तांत्रिक मंत्रों के विश्लेषण तथा नाथ पंथ के संबंध में प्राप्त लिखित सामाग्री के आधार पर गुरु गोरखनाथ से संबद्ध तमाम तथ्यों का उद्घाटन किया है। उत्तराखंड में गुरु गोरखनाथ से संबंधित अनेक पूजास्थल हैं। इनमें प्रमुख कुमाऊँ में चंपावत के पास मंचतामली व गढ़वाल में श्रीनगर के पास भक्तयाण नामक गाँव में गोरखनाथ गुफा है। गोरखनाथ के निकेतन (पूजास्थल) को 'जागा' एवं 'धूनी' कहा जाता है। इसके केंद्र में बनी धूनी (अग्निकुंड) तथा उसमें स्थापित चिमटा, फौड़ी, त्रिशूल आदि को ही इनका प्रतीक माना जाता है।

सनातन धर्म का जनक नेपाल

नेपाल ने आज भले ही अपने को भारत की तरह ही 'सेकुलर' (पंथ निरपेक्ष) राष्ट्र घोषित कर दिया है, मगर अब तक यह दुनिया के एकमात्र 'हिंदू' राष्ट्र के रूप में ही जाना जाता था। यही नहीं भारत का 'सनातन धर्म' भी नेपाल की ही देन है। हालाँकि सनातन धर्म के पीछे समूचे भारत की साधना और चिंतन जुड़ा हुआ है, पर इसका स्वरूप निर्धारण 'मिथिलांचल' वर्तमान नेपाल में ही हुआ। वही मिथिला, जो आज जनकपुरी के नाम से जानी जाति है। राजा जनक की मिथिला, सीता की जन्म स्थली।

यही मिथिला हमारे पौराणिक ऋषि-महर्षियों की विद्वत सभा की

आध्यात्मिक परिचर्चा स्थली रही है। विश्व की पहली सर्वोत्तम और सर्वोच्च शास्त्रपीठ। जहाँ किसी भी दर्शन और सिद्धांत की अंतिम परीक्षा होती थी। भारतीय सनातन धर्म भी इसी पीठ की कसौटी पर कसने के बाद ही अस्तिव में आया। मसलन भारत भर के ऋषि-महर्षियों की ज्ञान गंगा का जो संचय मिथिला नरेश जनक के दरबार में पहुँचा, उस पर महर्षि याज्ञवल्क्य, महर्षि वैशंपायन, सुलभा, गार्गी, अष्टावक्र के मंथन से जो अर्क निकला, वही सनातन धर्म है।

इस तरह भारतीय सनातन धर्म (परवर्ती नाम हिंदू धर्म) का स्वरूप निर्धारण मिथिला, नेपाल में हुआ। अत: दुनिया के एकमात्र हिंदू राष्ट्र के साथ-साथ सनातन धर्म का जनक होने का गौरव भी इसी नेपाल को हासिल है। आर्य संस्कृति के प्रथम 'आत्मोपलब्ध' ब्रह्मवादी सम्राट राजऋषि जनक भी इसी नेपाल की अनमोल देन हैं। वे भारत-नेपाल की साझा सनातन संस्कृति के ही सूत्रधार नहीं, बल्कि समूची मानव जाति के सांस्कृतिक इतिहास की बुनियाद के पत्थर भी हैं। 'राजधर्म के प्रवर्तक और प्रतीक।' धर्माध्यक्ष व शासनाध्यक्ष का अनूठा संगम। सच्चे मायने में धर्मराज। यह वही मिथिला है, जहाँ महान् मीमांसक मंडन मिश्र को परास्त कर शंकराचार्य जगत् गुरु शंकराचार्य बने।

□

केदारनाथ आपदा का दस्तावेज है– प्रलय के बीच

—नेपाली राष्ट्र कवि माधवप्रसाद

भारतीय साहित्यकार और केदारनाथ त्रासदी के चर्चित लेखक डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' की कृति 'प्रलय के बीच' पढ़कर मैं अभिभूत हूँ। संवेदना और सरोकार से भरी यह बहुत अच्छी किताब है, प्रेरणादायी है, खासकर के हम लोगों ने भी एक ऐसी ही दिल दहलानेवाली महात्रासदी का सामना किया है और हम बेबस-लाचार सबकुछ सामने घटित होते देखते रहे। अब यदि भविष्य में फिर कभी कोई त्रासदी आएगी तो इस कृति से उस पर काम करने और राहत पाने की प्रेरणा मिलेगी, किताब ही नहीं, यह तो एक दृष्टि भी है।

यह दृष्टि एक सच्चे साहित्यकार में ही संभव है, यूँ भी जिसमें हित समाहित, वही साहित्य है। सभी विषयों में वह प्रेरणा देता है। उसी से यह भी पता लगता है कि लेखक की कैसी दृष्टि है, कैसी ऊँचाई/अच्छाई है और उसकी शैली किस तरह से पेश करती है। सामान्य जन से अलग उसकी देखने की दृष्टि दूसरी होती है। इस किताब की भी यही खासियत है। सामान्य जन की भी समझ में आ जानेवाली इस सरोकारी शैली से ही प्रेरणा मिलती है।

मैंने इसे पूरा पढ़ा है। यह कृति आपदा से निपटने की कुँजी है, इसमें

यह भी उल्लेख है कि जब आप मुख्यमंत्री रहे, आपने वहाँ जो उद्धार किए और केंद्र को भी सम्मिलित/सूचित किया, यह अद्‌भुत है। संक्षेप में यह कृति प्रेरणादायी है, क्योंकि आप लोगों ने जो विपत्ति भोगी है, वह ही हमारे ऊपर भी आई और आगे भी आ सकती हैं, उस विषय में इससे व्यापक प्रेरणा मिलेगी। इस कृति के लिए आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ।

□

निशंक की पुस्तक प्रलय के बीच भारत-नेपाल की साझी विरासत

—पुष्प कमल दहल 'प्रचंड' नेपाल के प्रधानमंत्री

यों पुस्तक को विमोचन करदा। इसको बारे मा द्वि जना विदान रोली जो टिप्पणी करनूभौ। here। मलाई गर्व के महसू हवाईगायो, तम रमेशजी लाई विशेष रूप से बधाई देना चाण छौ।

यों पुस्तक विमोचन को क्रम मा तान सूनो दूसरी परिचय हुने मौका भायो वा धूतै लेखक को रूप मा स्थापित हुनो रैं हुनो रैदनी, राजनीतिज्ञ का रूप मा पनी हवा को यू उठा तयी उच्चा रायो छौ। मलाई के विश्वास छो मनैं नेपाल अर भारत के संबंध लाई पनि थोड़ा नया आयाम प्रदान करने की कोशिश अइले मइले मेरे नेतृत्व में भइला। पनि तो कोशिश बरतो मेरू भारत भ्रमण कू बेला मा पुस्तक विमोचन को सामान्य व संक्षिप्त हवाई गै छौ। तिस कारण यों कार्यक्रम थम पनी यो निकोनी अर्थपूर्ण छो दूरगामी महत्त्व कू छो मनी महत्त्व कू छो।

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक, जो 'प्रलय केदारनाथ त्रासदी' के लेखक हैं, उनके साथ आज इस तरह से परिचय होना और सामीप्य होना मुझे लगता है, मेरे लिए एक गर्व की बात है। यह सामीप्य 'भारत-नेपाल' के बीच भी और प्रगाढ़ता लाएगा। मेरी लीडरशिप में अभी दोनों देशों के संबंध को एक नए आयाम देने की कोशिश हो रही हैं। लास्ट टाइम मेरी जो विजिट हुई थी,

दिल्ली की, उस दौरान बहुत अच्छी बातचीत वहाँ के प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति सहित बाकी नेताओं के साथ भी हुई। हमारे बीच काफी प्रतिबद्धता और समझदारी बनी हुई है। मुझे लगता है उसके बाद मैं अभी-अभी गोवा में एक बैठक थी, वहाँ पर भी मेरी इंडिया के बहुत सारे नेताओं के साथ और साहित्यकारों के साथ बातचीत हुई। आज डॉ. रमेश के साथ इस तरह मेरे आवास 'नेपाल के पी.एम. रेजिडेंस' में एक पुस्तक विमोचन का जो अवसर मुझे मिला, वह अविस्मरणीय है। डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' जिस तरीके से मानव सेवा में, सामाजिक सेवा में और राजनैतिक सेवा में एक साथ बहुआयामी व्यक्तित्व के रूप में सामने हैं, वह दुर्लभ है। उनकी सफलता की मैं कामना करता हूँ।

□

पुस्तक गागर में सागर

(अंग्रेजी भाषण का हिंदी रूपांतरण)

—नेपाली प्रोफेसर डॉ. अमर जोशी

यह पुस्तक सिर्फ एक पुस्तक ही नहीं, मिश्रण है, एक आत्मकथा का, एक संस्मरण का और एक यात्रा वृत्तांत का। इसके जरिए हमें वास्तविक रूप से जीवन और मृत्यु पर उनकी गहरी दार्शनिक समझ व उनकी व्यक्तिगत झलक नजर आती है, साथ में संपूर्ण उत्तराखंड की झलकियाँ नजर आती हैं। इस पुस्तक को पढ़कर मुझे ऐसा लग रहा है, मानो मैं हिमालय की श्रृंखलाओं से गुजर रहा हूँ। डॉ. निशंक ने अपने इस संस्मरण से मुझे मेरे गाँव की याद दिला दी।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात जो हम सभी देख रहे हैं, वह यह है कि आप एक राजनेता हैं। इस समकालीन संसार में राजनेताओं का बिंब कुछ इस प्रकार का बन चुका है, कि उनके पास भावनात्मक चीजों के लिए समय नहीं होता, पर जब हमने इस पुस्तक का अध्ययन किया तो पता लगा कि डॉ. निशंक मानवीय संवेदनाओं और भावनाओं से आपूरित हैं। वे इस पुस्तक में उन लोगों के विषय में बात कर रहे हैं, जिन्होंने इन आपदाओं में अपनी जिंदगियाँ गँवाई हैं, अपने लोग खोए हैं, साथ ही वे आपदा प्रबंधन के विषय में बात कर रहे हैं। इस दौरान उन्होंने जीवन-मृत्यु व धार्मिक घटनाओं पर भी गंभीर चिंतन किया है, मसलन चिंतन क्रिया की मौलिक धारणाएँ क्या है, ईश्वर

क्या है, ईश्वरीय शक्ति क्या है, धर्म क्या है, और यह धर्म कैसे जोड़े रखता है ? यह सब इसमें समाहित है और सबसे महत्त्वपूर्ण यह कि अपने संस्मरण में वे भारत व नेपाल को सँजोते हैं, क्योंकि ज्यादातर आपदा प्रबंधनों में भारत और नेपाल महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन लोगों के विषय में बताते हैं, जो दबे व बुरी तरह जख्मी हुए पीड़ित लोगों को नया जीवन प्रदान करते हैं। मैं डॉ. निशंक के इस अभूतपूर्व लेखन की सराहना करता हूँ। आपकी व्यस्त दिनचर्या को ध्यान में रखते हुए आपका ज्यादा समय नहीं लूँगा। अगर भविष्य में समय मिले तो मैं इस अतुल्य रचना पर प्रकाश डालूँगा। मैं डॉ. निशंक को बधाई देता हूँ तथा यह आशा करता हूँ कि वे ऐसी प्रभावशाली रचनाएँ करते रहें और हमें उन रचनाओं पर बात करने का अवसर आगे भी मिलता रहे।

धन्यवाद।

□□□